यश की प्राप्ति भले ही न हो किंतु अपयश हो उचित नहीं है

...का अधिकार है।
-अब्राहम लिंकन

दुर्वचन पशुओं तक को अप्रिय है
-भगवान बुद्ध

मजदूर को उसका मेहनताना
उसके पसीना सूखने से पहले दे दो
-हजरत मोहम्मद

गुण सभी स्थानों पर
अपना आदर करा लेता है।
-कालीदास

धन पाने की लालसा तमाम बुराइयों की जड़ है
-बाइबिल



# महापुरुषों की अमृतवाणी

नीरा अरोरा

# महापुरुषों की अमृतवाणी




नीरा अरोरा

**सुनील साहित्य सदन**
नई दिल्ली–110002

Sunil sahitya sadan,
N. Delhi

# लेखक की कलम से

आज के सामाजिक परिप्रेक्ष्य में विज्ञान के बढ़ते प्रभावों के कारण शाश्वत एवं **आध्यात्मिक मूल्यों** की उपेक्षा हो रही है, जिससे समाज में **नैतिकता, धर्म,** अध्यात्म, आचरण, व्यवहार, चरित्र, कर्त्तव्य, त्याग आदि में विकृतियां दिखाई दे रही हैं। यही कारण है कि हमारा संपूर्ण जीवन अस्त-व्यस्त होता जा रहा है। जीवन के इस सामंजस्य एवं संतुलन को बनाए रखने के लिए इस पुस्तिका में ऐसी ही सूक्तियों को संकलित करने का छोटा-सा प्रयास किया गया है जो मनुष्य को एक स्वस्थ जीवन जीने की प्रेरणा दे सकें। साथ ही साथ नैतिक शिक्षा के लिए इसका उपयोग हो सके, जिससे गिरते हुए राष्ट्रीय चरित्र को ऊंचा उठाने में सहायता मिल सके।

**—डा. (कु.) नीरा अरोरा**

# अनुक्रम

## ❖ शुभ-अशुभ ❖

- शुभ कार्य करने का जब भाव बने उसके शुभारंभ का वही श्रेष्ठ मुहूर्त है।

  *—अज्ञात*

- समाधि में ही साक्षात्कार होता है। समाधि के एक क्षण की तुलना में पठन, पाठन और मनन का सहस्र वर्ष भी नहीं ठहरता।

  *—डॉ. संपूर्णानंद*

- जिसका मन काम में लिप्त नहीं है, जो घृणा से प्रभावित नहीं है, जिसने शुभ और अशुभ दोनों का परित्याग किया है, ऐसे जागरूक व्यक्ति को कोई भय नहीं होता।

  *—भगवान बुद्ध*

## ❖ गुण-अवगुण ❖

- कोई पिता अपने सदगुणों की याद से बढ़कर और कोई वसीयत नहीं छोड़ सकता।

  *—हैमिल्टन*

- गुण सभी स्थानों पर अपना आदर करा लेता है।

  *—कालीदास*

- यदि विश्व में कोई ऐसा सद्गुण है जिसकी प्राप्ति सदैव हमारा लक्ष्य होनी चाहिए तो वह मन की प्रसन्नता है।

  *—लार्ड लिटर*

- अपनी गलतियों के विषय में हम सदैव खुद को धोखा देते रहते हैं और बाद में उन्हें ही अपना सद्गुण समझने लगते हैं।

*—हेग*

- अभी तक ऐसा कोई भी व्यक्ति महान् नहीं हुआ जो गुणवान भी न रहा हो।

*—बेंजामिन फ्रेंकलिन*

- मनुष्य के गुण ओर गौरव तभी तक सुरक्षित रहते हैं जब तक वह दूसरों के आगे हाथ नहीं फैलाता।

*—ब्रह्मपुराण*

- किसी के गुणों की प्रशंसा करने में समय नष्ट मत करो। उतना समय उन गुणों को अपनाने में लगाओ।

*—अज्ञात*

- औरों की अच्छाइयां देखने से, अपने में सद्गुणों का विकास होता है।

*—अज्ञात*

- सद्गुणों का पालन हीं सबसे उत्तम सामाजिक नियम है।

*—अज्ञात*

- लोग गुणों की पूजा करते हैं, व्यक्ति की नहीं।

*—अज्ञात*

- महान नेताओं में ऐसे गुण होते हैं, जो संपूर्ण राष्ट्र के लिए प्रेरणा देते हैं और महान कार्य करने को प्रेरित करते हैं।

*—जवाहरलाल नेहरू*

## ❖ आशा-निराशा ❖

- आशा जगे हुए आदमी का सपना होता है।

*—अरस्तू*

- जिस प्रकार एक क्षार दूसरे क्षार को निष्क्रिय कर देता है तथा जिस तरह सूर्य की किरणें कुहासे को नष्ट कर देती है, उसी प्रकार आशा और उत्साह के स्पर्श-मात्र से निराशा और निष्क्रियता से भारी मनःस्थिति में परिवर्तन आ जाता है।

*—स्वेट मार्डेन*

- निराशा की छोटी-सी रेखा भी मानसिक यंत्र को उसी प्रकार बेकार और निकम्मा बना देती है जिस प्रकार धूल का छोटा-सा कण या छोटा-सा बाल चलती हुई घड़ी को बंद कर देता है।

*—स्वेट मार्डेन*

- निराशा में प्रतीक्षा अंधे की लाठी है।

*—प्रेमचंद*

- आशा में तेज है, बल है, जीवन है। आशा ही संसार को चलाने वाली शक्ति है।

*—प्रेमचंद*

- निराशा जब चरम सीमा पर पहुंचती है, तब हम अपना विवेक खो देते हैं।

*—सुकरात*

- आशावादी परमात्मा का भक्त होता है—पक्का ज्ञानी, पूर्ण ऋषि। उसे चारों ओर परमात्मा की ही ज्योति दिखाई देती है, इसी से उसे भविष्य पर अविश्वास नहीं होता है।

*—प्रेमचंद*

- निराशा हमारी प्रसन्नता, सुख और शांति को ही नष्ट नहीं करती, वह हमारे उन संकल्पों को भी नष्ट कर डालती है जो हमने कुछ सत्कर्मों को करने के लिए किए थे।

*—स्वेट मार्डेन*

- धैर्य तो नैराश्य की अंतिम अवस्था का नाम है। नैराश्य की अंतिम अवस्था विरक्ति होती है।

—*प्रेमचंद*

## ❖ नियम/संयम ❖

- काम की अधिकता नहीं, अनियमितता आदमी को मार डालती है।

—*महात्मा गांधी*

- यही सबसे अच्छा नियम है कि अच्छे नियम होते ही नहीं हैं।

—*बर्नार्ड शॉ*

- जो अपने मुख और जिह्वा पर संयम रखता है वह अपनी आत्मा को संतापों से बचाता है।

—*बाइबिल*

- कटा हुआ वृक्ष भी बढ़ता है। क्षीण हुआ चंद्रमा भी पुनः बढ़कर पूरा हो जाता है। इस बात को समझकर संत पुरुष विपत्ति से नहीं घबराते।

—*भर्तृहरि*

- जिस प्रकार अलमस्त हाथी पर काबू पाने के लिए महावत अंकुश का प्रयोग करता है, उसी प्रकार मनुष्य को अपनी दूषित भावनाओं पर काबू पाने के लिए आत्म-संयम रूपी अंकुश का इस्तेमाल करना चाहिए।

—*स्वेट मार्डेन*

- अधिकार की अपनी मर्यादा होती है। उस मर्यादा की रक्षा करने के लिए अधिकार प्रयोग को संयत रखना पड़ता है।

—*रवींद्रनाथ ठाकुर*

- संयम और श्रम मानव के दो सर्वोत्तम चिकित्सक हैं।

—*अज्ञात*

- हँसी-मजाक के दौरान भी कड़वे वचन लोगों के दिल में चुभ जाते हैं, इसलिए वाणी पर संयम आवश्यक है।

*—तिरुवल्लुवर*

- गृहस्थ एक तपोवन है, जिसमें संयम, सेवा एवं सहिष्णुता की साधना करनी पड़ती है।

*—अज्ञात*

- संयम निषेधात्मक नहीं विधेयात्मक गुण है।

*—अज्ञात*

- संयम और श्रम मानव के दो सर्वोत्तम चिकित्सक हैं।

*—अज्ञात*

- इस दुनिया में किसी भी व्यक्ति का स्वभाव प्राकृतिक रूप से ऐसा नहीं है जिसे संपूर्ण कहा जा सके। उसे आवश्यकता होती है देखभाल की, आत्मसंयम की।

*—स्वेट मार्डेन*

## ❖ लोभ/मोह/आसक्ति/तृष्णा/लालसा ❖

- जिस व्यक्ति की तृष्णा जितनी बड़ी होती है, वह उतना ही बड़ा दरिद्र होता है।

*—तुलसीदास*

- धन पाने की लालसा तमाम बुराइयों की जड़ हैं।

*—बाइबिल*

- जो व्यक्ति जाग्रत है, जिसका मन तृष्णा से रहित है, उस व्यक्ति के लिए कोई भय नहीं।

*—महात्मा गांधी*

- आसक्ति ही मनुष्य को नीच और दुर्बल बनाने वाली है।

*—स्वामी रामतीर्थ*

- प्रार्थना की खूबी है कि वह सब प्रलोभनों पर विजय दिलाती है।

*—बर्नार्ड शॉ*

- हृदय की शुद्धता का अर्थ है अपने-आपको सांसारिक पदार्थों की आसक्ति से पृथक रखना। त्याग का अर्थ इससे मात्र कम नहीं।

*—स्वामी रामतीर्थ*

- जैसे कछुआ अपने अंगों को अपने शरीर में समेट लेता है, वैसे ही मेधावी (ज्ञानी) पुरुष पापों को अध्यात्म के द्वारा समेट लेता है।

*—भगवान महावीर*

- आसक्ति से निवृत्ति ही आत्मविकास की मुख्य सीढ़ी है।

*—अज्ञात*

- निर्धन वह नहीं जिसके पास उपयोग के साधन कम है वरन् वह है, जिसकी तृष्णा अधिक है।

*—अज्ञात*

- लोकैषणा का पिशाच हृदय में संतोष की शीतलता नहीं आने देता।

*—अज्ञात*

- कामनाओं से भरे मन में भावनाओं का उदय नहीं होता।

*—अज्ञात*

- महत्त्वाकांक्षी और यशस्वी होने की इच्छा तो स्वाभाविक लेकिन अतिशय लोभ मनुष्य के पतन का कारण भी बन जाता है।

*—चाणक्य*

- तृष्णा चतुर को भी अंधा बना देती है।

*—सादी*

- क्रोध प्रीति को नष्ट करता है, मान विनय को नष्ट करता है, माया मैत्री को नष्ट करती है और लोभ सब कुछ नष्ट करता है।

*—भगवान महावीर*

##  अहंकार/अभिमान 

- घमंड करना जाहिलों का काम है।

*—शेख सादी*

- किसी भी हालत में अपनी शक्ति पर घमंड नहीं करना चाहिए। यह बहुरुपिया आसमान हर घड़ी हजारों रंग बदलता है।

*—हाफिज*

- जो लोग होश में रहते हैं वे कभी अहंकार नहीं करते।

*—रस्किन*

- अभिमानी व्यक्ति स्वयं को खा जाता है।

*—शेक्सपीयर*

- अहंकारी मनुष्य केवल अपने ही महान् कार्यों का बखान करते हैं और दूसरे की मात्र खामियां गिनाते हैं।

*—स्पिनोजा*

- अहंकारपूर्ण जीवन को छोड़ देना ही त्याग है और वही सौंदर्य है।

*—स्वामी रामतीर्थ*

- मनुष्य जितना अहंकारी होगा उसका व्यक्तित्व उतना ही घटिया होगा।

*—अखंड ज्योति*

- अहंकार ऐसा दुष्ट शत्रु है जो मनुष्य को न जीने देता है, न मरने पर ही छोड़ता है।

*—संत ज्ञानेश्वर*

- दूसरों के लिए गए कार्य से आत्मशुद्धि होती है। इससे अहंकार कम होता है।

*—स्वामी विवेकानंद*

- मनुष्य जितना छोटा होता है, उसका अहंकार उतना ही बड़ा होता है।

*—वाल्टेयर*

- अभिमान से देवता दानव बन जाते हैं और नम्रता से मानव देवता।

*—ऑगस्टाइन*

- अहंकार और प्रेम कभी एक साथ नहीं रह सकते। अहंकार प्रेम की ही अनुपस्थिति है।

*—आचार्य रजनीश*

- अग्नि में घी की आहुति देने की अपेक्षा अपने 'अहं' की आहुति दो।

*—नेपोलियन*

- आदमी चार चीजों के आस-पास घूमता है—यश, धन, वासना और आयु। ये अहंकार के ही हिस्से हैं।

*—नेपोलियन*

- अहंकार को खोने वाले हानि में नहीं रहे हैं। बीज मिटकर वृक्ष को पा लेता है, सरिता स्वयं को खोकर सागर हो जाती है। स्वयं को खोना ही स्वयं को पाना भी है।

*—आचार्य रजनीश*

- यदि तुम्हारा अहंकार चला गया है तो किसी भी धर्म-पुस्तक की एक पंक्ति भी पढ़े बिना व किसी भी देवालय में पैर रखे बिना, तुम जहां बैठे हो, वहीं मोक्ष प्राप्त हो जाएगा।

*—स्वामी विवेकानंद*

- अगर गुरु ही अहंकार के चलते गलत राह पर चलने लगे तो उसे दंड देना जरूरी हो जाता है।

*—वाल्मीकि*

- अहंकार का अर्थ ही संग्रह करना है, संचय करना है, वह केवल लेता ही रहता है।

*—रवींद्रनाथ ठाकुर*

- अपनी बुराइयों, अपने अहंकार के प्रति घोर निर्ममता का नाम साधना है।

*—अज्ञात*

- अहंकारी वस्तुतः अपनी सामर्थ्य से अपरिचित होता है।

*—अज्ञात*

- मनुष्य अहंकार को मारकर भी परमात्मा के द्वार तक पहुंच पाता है।

*—अज्ञात*

- भक्ति अंदर के अहंकार को मिटाने का दिव्य प्रकाश है।

*—अज्ञात*

- अति अभिमान, बहुत बोलना, त्याग का अभाव, क्रोध, आत्मपोषण की इच्छा और मित्र-द्रोह ये छः कारण हैं जिनसे पुरुष पूर्ण आयु तक जीवित नहीं रहता है।

*—महात्मा विदुर*

- सभी गंभीर गलतियों की तह में व्यक्ति के अभिमान की प्रमुख भूमिका होती है।

*—रस्किन*

## ❖ सत्य-असत्य ❖

- सत्य को छिपाना धोखा देने के समान है।

*—शरतचंद्र*

- असत् का अस्तित्व नहीं हैं और सत् का नारा नहीं है।

*—भगवद्गीता*

- सत्य का स्रोत भूलों के बीच से होकर बहता है।

*—रवींद्रनाथ ठाकुर*

- बिना सत्य के वास्तव में कोई भी चीज महान् नहीं हो सकती।

*—डॉ. जॉनसन*

- सत्य से अमरत्व प्राप्त होता है।

*—वेदव्यास*

- लड़ाई में सत्य सदा खो जाता है!

*—अज्ञात*

- सत्य ही सबसे बड़ा धर्म है।

*—महात्मा गांधी*

- जो चीज विकार को मिटा सके, राग-द्वेष को कम कर सके, जिस चीज के उपयोग से मन सूली पर चढ़ते समय भी सत्य पर डटा रहे, वह धर्म है।

*—महात्मा गांधी*

- झूठ कभी श्रेष्ठ पद को प्राप्त नहीं होता है।

*—उपनिषद्*

- थोड़ा-सा झूठ भी मनुष्य का वैसे ही नाश करता है, जैसे एक बूंद जहर दूध का।

*—महात्मा गांधी*

- सत्य एक विशाल वृक्ष है। उसकी ज्यों-ज्यों सेवा की जाती है, त्यों-त्यों उसमें अनेक फल आते हुए नजर आते हैं, उनका अंत ही नहीं होता है।

*—महात्मा गांधी*

- प्रकाश सत्य का प्रतीक है।

*—जे.आर. लोवेल*

- सत्य एक उपलब्धि है। जिस व्यक्ति ने आत्मज्योति को नहीं जगाया, वह आध्यात्मिक जगत् के दर्शन भी नहीं कर सकता।

*—विनोबा भावे*

- जितनी हानि शत्रु शत्रु की करता है उससे अधिक बुराई झूठे मार्ग पर लगा हुआ चित्त मनुष्य की करता है।

*—भगवान बुद्ध*

- जितनी बड़ी भीड़ होगी, वह उतनी ही आसानी से झूठ का शिकार बनेगी।

*—एडाल्फ हिटलर*

- अपनी सभ्यता के प्रति वफादार रहें। सत्य की खोज करें, सत्य बोलें, सत्य का आचरण करें।

*—लाला लाजपत राय*

- यदि तुम भूलों को रोकने के लिए द्वार बंद कर दोगे तो सत्य भी बाहर रह जाएगा।

*—रवींद्रनाथ ठाकुर*

- जो वस्तु आनंद नहीं प्रदान कर सकती, वह सुंदर नहीं हो सकती और जो सुंदर नहीं हो सकती, वह सत्य भी नहीं हो सकती। जहां आनंद है, वहीं सत्य है।

*—प्रेमचंद*

- सत्य पर आस्था रखो, भले ही तुम उसकी धारणा न कर सको, भले ही तुम उसकी मधुरता को कटु समझो, भले ही तुम पहले इससे विमुख हो जाओ। सत्य पर दृढ़ आस्था रखो।

*—भगवान बुद्ध*

- सच अमूल्य है। हमें जी-जान से उसकी रक्षा करनी चाहिए।

*—मार्क ट्वेन*

- जिस सभा में बड़े-बूढ़े नहीं, वह सभा नहीं; जो धर्म की बात न कहें वे बूढ़े नहीं; जिसमें सत्य नहीं वह धर्म नहीं और जो कपटपूर्ण है वह सत्य नहीं।

*—वेदव्यास*

- बाहरी आडंबर से कोई महान् कार्य नहीं होता। प्रेम से, सत्य के प्रति तीव्र प्रेम से और अदम्य उत्साह से ही सारे कार्य संपन्न होते हैं। अतएव अपना पुरुषार्थ प्रकट करो।

*—दयानंद सरस्वती*

- सबसे महान वह है जो दृढ़तम निश्चय के साथ सत्य का अनुसरण करता है।

*—सेनेका*

- जो आदर्श सत्य की हत्या करके पला है वह आदर्श नहीं, चरित्र की दुर्बलता है।

*—प्रेमचंद*

- दार्शनिक के लिए सत्य कहने का साहस प्रथम अर्हता है।

*—हेगल*

- पक्षपातों से बंधा व्यक्ति सत्य को नहीं जान सकता। सत्य की खोज में विवेक का जागरण आवश्यक है। विश्वास इसमें बाधक है। विश्वास करने वाला खोजता नहीं।

*—आचार्य रजनीश*

- सत्य सदा निर्वस्त्र है, सामने है। सत्य तैरने से नहीं, डूबने से मिलता है। सत्य आकाश की भांति है, उसका कोई प्रवेशद्वार नहीं है, जहां जाकर खटखटाना पड़े।

*—आचार्य रजनीश*

- सत्य तक वे लोग पहुंचते हैं जो सरल हैं, निश्छल हैं और शुद्ध भाव से प्रयत्न करते हैं।

*—अज्ञात*

- सत्य की एक चिनगारी असत्य के विशाल पहाड़ को पल-भर में भस्म कर सकती है।

*—प्रेमचंद*

- एक सत्य दूसरे सत्य का कभी विरोध नहीं करता है।

*—हूकर*

- झूठ बोलने के अनेक संयोग होते हैं, लेकिन सत्य का केवल एक रूप होता है।

*—रूसो*

- सत्य तो वह है जो तीनों कालों में एक समान रहता है—जैसा कल था वैसा ही आज है और वैसा ही आगे भी रहेगा।

*—अज्ञात*

- झूठ बोलना कायरता का चिह्न है।

*—अज्ञात*

- केवल सत्य ही असत्य को, प्रेम क्रोध को, आत्मपीड़ा हिंसा को शांत करते हैं। यह सनातन नियम सबके लिए है।

*—अज्ञात*

- भगवान सच का दूसरा रूप है और प्रकाश उसकी छाया है।

*—प्लेटो*

- अगर आप अपने बारे में सच नहीं बता सकते हैं तो दूसरों के बारे में भी नहीं बता पाएंगे।

*—वर्जीनिया वुल्फ*

- केवल झूठ से ही सच की भावना का उल्लंघन नहीं होता, बल्कि मौन से भी उसे नुकसान पहुंचता है।

*—एमिथन*

- क्रोध को अक्रोध से जीतें, दुष्ट को भलाई से जीतें, कृपण को दान से जीतें और झूठ बोलने वाले को सत्य से जीतें।

*—धम्मपद*

- रिश्वत लेकर एक सच्चे आदमी का वोट खरीद लेने के लिए सारे संसार की संपत्ति भी अपर्याप्त है।

*—सेंट ग्रेगरी*

- संपूर्ण सद्कर्मों का मूल सत्य है।

*—जवाहरलाल नेहरू*

## ❖ मित्रता-शत्रुता ❖

- जो मित्रता समानता की नहीं होती, अक्सर उसका अंत तृष्णा और तनातनी के साथ होता है।

*—गोल्ड स्मिथ*

- प्रायः दूरी मित्र को अधिक प्रिय बना देती है।

*—जे. हावेल*

- आत्मविश्वास सरीखा कोई दूसरा दोस्त नहीं है।

*—स्वामी विवेकानंद*

- मित्रों का उपहास करना उनके पावन प्रेम को खंडित करना है।

*—अज्ञात*

- झगड़ने वाले दुश्मन से डरने की आवश्यकता नहीं है, जितना मित्र बनकर घात करने वालों से।

*—अखंड ज्योति*

- शत्रु को माफ करना जितना आसान है, उतना आसान मित्र को माफ करना नहीं।

*—डोरोथी डिल्यूजी*

- जो मनुष्य जानबूझकर अपने मित्र को धोखा देता है, वह ईश्वर को भी धोखा देगा।

*—लेवेटर*

- केवल सज्जनों में ही सच्ची मैत्री हो सकती है।

*—सिसरो*

- दोस्त बनाने का एक ही रास्ता है, खुद किसी का दोस्त बन जाना।

*—इमर्सन*

- जो ताकत से विजय प्राप्त करता है, वह शत्रुओं पर आधी विजय ही प्राप्त कर पाता है।

*—मिल्टन*

- मित्रता को धीरे-धीरे परवान चढ़ने दो, जल्दबाजी में उसकी सांस टूटने का खतरा बना रहता है।

*—थामस फुलर*

- शायद सबसे आनंददायक मित्रताएं वे हैं जिनमें बड़ा मेल है, बड़ा झगड़ा है फिर भी बड़ा प्यार है।

*—इलियट*

- जो अपने हितों की पूर्ति की दिशा में काम करता है, वह स्वाथी नहीं; असल में स्वार्थी वह है जो अपने दोस्तों की अनदेखी करता है।

*—बाटले*

- जो पिता अपनी संतान पर ऋण छोड़ जाता है, वह बच्चों का शत्रु होता है। बुरे आचरण वाली माता भी शत्रु होती है। सुन्दर पत्नी भी शत्रु होती है और मूर्ख पुत्र भी शत्रु होता है।

*—चाणक्य*

- शत्रु राजा की सांसों तक का ज्ञान रखना आवश्यक है।

*—चाणक्य*

- शत्रु, मित्र अकारण न होकर कारणवश होते हैं।

*—चाणक्य*

- जो व्यक्ति मित्रों से सत्कार पाकर और प्रयोजन सिद्ध करके भी मित्रों के हितकारी नहीं होते, उन कृतघ्नों को मरने पर गिद्ध भी नहीं खाते।

*—महात्मा विदुर*

- सच्चे मित्रों का साथ मिलने से मनुष्य को बल प्राप्त होता है।

*—चाणक्य*

- सबसे अच्छी आत्मरक्षा शत्रु पर पहले ही हमला कर देना है। शत्रु को हमले की तैयारी का अवसर ही नहीं देना चाहिए।

*—नेपोलियन*

- जो मित्रता बराबरी की नहीं होती, हमेशा घृणा में ही समाप्त होती है।

*—गोल्ड स्मिथ*

- पुराने मित्र को नहीं भुलाना चाहिए। उसकी तुलना नए से नहीं हो सकती है। नया मित्र नई शराब के समान है।

*—बाइबिल*

- जो शत्रु तुम पर आक्रमण करते हैं, उनसे मत डरो। उन मित्रों से डरो, जो तुम्हारी चापलूसी करते हैं।

*—जनरल ओब्रगोन*

- शत्रु पंडित, मूर्ख हितैषी से अच्छा है।

*—अज्ञात*

- मित्र वह है जो हर निर्णय को मुस्कान के साथ स्वीकारता है, क्योंकि निर्णय के पीछे कोई कारण अवश्य होता है।

*—अज्ञात*

- असहिष्णुता और कट्टरता हमारी प्रगति के सबसे बड़े दुश्मन हैं।

*—एस. राधाकृष्णन*

- मित्रता और शत्रुता के भाव तो बादलों के समान है जो क्षण-प्रतिक्षण बदलते रहते हैं।

*—महाभारत*

- दुनिया में केवल तीन ही महान मित्र होते हैं—बूढ़ी पत्नी, पुराना कुत्ता और उपलब्ध धन।

*—बेंजामिन फ्रेंकलिन*

- दोस्ती और भाईचारा ही मानव-जीवन के सर्वश्रेष्ठ रत्न हैं।

*—एडविन मार्कहैम*

- जीवन में एक मित्र मिल गया तो बहुत है, दो अधिक हैं और तीन तो मिल ही नहीं सकते।

*—हेनरी एडम्स*

- अपने शत्रु से भी प्रेम करो।

*—ईसा मसीह*

- यद्यपि शत्रु से प्रेम करने के लिए आप बाध्य है, पर शत्रु के हाथ में तलवार दे देने के लिए आप बाध्य नहीं हैं।

*—डॉ. टॉमस फुलर*

- अति अभिमान, बहुत बोलना, त्याग का अभाव, क्रोध, आत्मपोषण की इच्छा और मित्र-द्रोह ये छः कारण हैं जिनसे पुरुष पूर्ण आयु तक जीवित नहीं रहता है।

*—महात्मा विदुर*

- नीति कहती है, मित्रता और शत्रुता बराबर वालों के साथ करना चाहिए।

*—वाल्मीकि*

## ❖ आचरण/चरित्र ❖

- जो बातें विचार पर छोड़ दी जाती हैं, वे कभी पूरी नहीं होतीं।

*—हरिभाऊ*

- मनुष्य जब एक बार पाप के नागपाश में फंसता है तब वह उसी में और लिपटता जाता है, उसी के गाढ़े आलिंगन में सुखी होने लगता है। पापों की शृंखला बन जाती है। उसी के नए-नए रूपों पर आसक्त होना पड़ता है।

*—अज्ञात*

- जो आदमी कोई गलती नहीं कर पाता, वह आमतौर पर कुछ नहीं भी नहीं कर पाता।

*—जान पर्सी*

- मौन बातचीत की एक महान कला है।

*—हैजलिट*

- जो अपने को बुद्धिमान समझता है, वह बड़ा बेवकूफ है।

*—वाल्टेयर*

- बातचीत का पहला अंश है सत्य, द्वितीय सुंदर समझबूझ, तृतीय सुंदर विनोद और चतुर्थ वाक्-चातुर्य।

*—सर डब्ल्यू टेमिनल*

- जो मनुष्य तौलकर बात नहीं करता है, उसे कठोर बातें सुननी पड़ती है।

*—साही*

- विचार का चिराग बुझ जाने पर आचार अंधा हो जाता है।

*—विनोबा भावे*

- अंधानुकरण से आत्मविश्वास के बजाय आत्मसंकोच ही पैदा होता है।

*—महर्षि अरविंद*

- दुनिया में हर आदमी विजयी नहीं हो सकता। विजयी वही होता है जो विजयी होने का साहस रखता है।

*—जवाहरलाल नेहरू*

- कोई कितना ही महान क्यों न हो, उसके पीछे अंधे होकर न चलें।

*—स्वामी विवेकानंद*

- खेल में सदा हम ईमानदारी का पल्ला पकड़कर चलते हैं, पर अफसोस कि कर्म में इस ओर ध्यान तक नहीं देते।

*—रस्किन*

- तुम सच्ची दिशा में काम करो, बस इतना ही काफी है।

*—इमर्सन*

- जिस क्षण हम कोई पाप करते हैं, उसी क्षण दंड के बीज भी बो देते हैं।

*—हैसियड*

- जहां पवित्रता है, वहां निर्भयता हो सकती है।

*—महात्मा गांधी*

- तुम्हारी इच्छाएं तुम पर हावी हों, इससे बेहतर है कि तुम उन पर हावी हो।

*—टाइरियस मैक्सीयस*

- भाषा मानव मस्तिष्क का अस्त्रागार हैं, इसमें अतीत के विजय-चिह्न भी है और भावी विजयों के अस्त्र भी।

*—एच. डेली*

- मनुष्य जिस समय पशु तुल्य आचरण करता है उस समय वह पशुओं से भी नीचे गिर जाता है।

*—रवींद्रनाथ ठाकुर*

- बड़ों की समता हम अत्यंत विनीत होकर ही कर पाते हैं।

*—रवींद्रनाथ ठाकुर*

- यद्यपि शत्रु से प्रेम करने के लिए आप बाध्य है, पर शत्रु के हाथ में तलवार दे देने के लिए आप बाध्य नहीं हैं।

*—डॉ. टॉमस फुलर*

- चिरस्थायी और सच्चे फल पाना हो तो हमें पहले निडर जरूर बनना होगा।

*—महात्मा गांधी*

- जो इच्छाओं से मुक्त है, वह न दुःख जानता है, न भय।

*—बुद्ध*

- कार्य में कुशलता ही योग है।

*—श्री कृष्ण*

- जीवन एक खान है, जिसमें हम एक पूर्ण चरित्र का निर्माण करते हैं।

*—गेटे*

- अच्छा दिल सोने के मूल्य का होता है।

*—शेक्सपीयर*

- व्यक्तित्व सभी अच्छाइयों का आधार है।

*—रिचर*

- नेकी का उपहार नेकी है।

*—इमर्सन*

- अपने आत्मविश्वास और चरित्र के बल पर एक साधनरहित व्यक्ति भी महान सफलता प्राप्त कर सकता है।

*—स्वेट मार्डेन*

- मनोवृत्ति का परिवर्तन ही हमारी असली विजय है।

*—प्रेमचंद*

- सबसे संपन्न व्यक्ति वह है जो आवश्यकताओं को कम करता है, बाहरी वस्तुओं पर कम निर्भर रहता है।

*—साहवी कनकश्री*

- अनसूया, क्षमा, शांति, संतोष, प्रिय वाणी तथा काम क्रोध का त्याग—ये श्रेष्ठ आचरण के लक्षण हैं।

*—वाल्मीकि*

- प्रार्थना आत्मशुद्धि का साधन है। यह विनम्रता को आमंत्रण देती है।

*—महात्मा गांधी*

- बुरे आचरण वाली माता भी शत्रु होती है।

*—चाणक्य*

- संतोष से बढ़कर कोई सुख नहीं।

*—चाणक्य*

- अपने शत्रु से भी प्रेम करो।

*—ईसा मसीह*

- स्पष्ट कहने वाला छली नहीं होता।

*—चाणक्य*

- चरित्र वृक्ष है और प्रतिष्ठा छाया।

*—लिंकन*

- क्रोध आए तो मुंह बंद रखें ताकि क्रोध को बढ़ने का अवसर ही न मिले।

*—स्वेट मार्डेन*

- क्रोध को अक्रोध से जीतें, दुष्ट को भलाई से जीतें, कृपण को दान से जीतें और झूठ बोलने वाले को सत्य से जीतें।

*—धम्मपद*

- अगर हम गिरते हैं तो अच्छी तरह चलने का रहस्य सीख जाते हैं।

*—महर्षि अरविंद*

- मूर्खता सदा कष्टदायक ही होती है। इसी तरह जवानी से भी कभी सुख की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। इन दोनों से भी अधिक कष्टदायक होता है किसी दूसरे के घर में निवास करना और किसी पर आश्रित होना।

*—चाणक्य*

- अपने पद या स्थान पर इठलाना, अपने को उससे नीचे दिखलाना है।

*—स्टर्न*

- प्रसन्नता तो चंदन है—दूसरे के माथे पर लगाइए तो आपकी अंगुलियां अपने-आप महक उठेंगी।

*—अज्ञात*

- गुणों का विकास एकांत में होता है और चरित्र का निर्माण संसार के भीषण कोलाहल में होता है।

*—गेटे*

- उत्तम चरित्र ही निर्धन का धन है।

*—अज्ञात*

- यदि तुम अपनी आय से कम में निर्वाह कर सकते हो तो निश्चय जानो कि तुम्हारे पास पारस पत्थर है।

*—महात्मा गांधी*

- ईमानदारी से किया गया परिश्रम सफलता को और समीप ला देता है।

*—अज्ञात*

- दुःखी पर दया दिखाना मानवोचित है उसके दुःख का निवारण करना देवोचित है।

*—होरेस*

- उपदेश वाणी से नहीं आचरण से करो।

*—अज्ञात*

- खुशी को हम जितना लुटाएंगे उतनी ही वह बढ़ेगी।

*—विकटर ह्यूगो*

- आप दुनिया के सबसे महान् पुरुष हैं पर एक ही दुर्गुण उसे ढंके हुए हैं वह है सादगी को व्यवहार में न लाना।

*—पं. श्रीराम शर्मा आचार्य*

- आय से अधिक खर्च करने वाले तिरस्कार सहते और कष्ट भोगते हैं।

*—पं. श्रीराम शर्मा आचार्य*

- बलवान होने में बड़प्पन नहीं, अपितु बल का सदुपयोग करने में बड़प्पन है।

*—एच.डब्ल्यू.बीचर*

- जो खुदा को जानता है वो अपनी तारीफ खुद नहीं करता।

*—अली*

- प्रत्येक व्यक्ति की अच्छाई ही लोकतांत्रिक शासन की सफलता का मूल सिद्धांत है।

*—राजगोपालाचारी*

- हर व्यक्ति को सुबह से शाम तक एक कीड़े के समान अपना काम करना चाहिए।

*—स्वामी विवेकानंद*

- लक्ष्मी उन लोगों के लिए वरदान है जो उसे दूसरों के लिए वरदान बना देते हैं।

*—फील्डिंग*

- एक बुराई दूसरे को जन्म देती है।

*—शेक्सपीयर*

- दुनिया का काम आपसी संबंधों से चलता है। अगर हम किसी से खिंचे रहें तो कोई कारण नहीं कि वह भी हम से खिंचा न रहे।

*—प्रेमचंद*

- किसी भी समस्या के विकराल बनाने से पहले ही उसकी पहचान कर लेने की योग्यता भी नेतृत्व की परीक्षा में से एक है।

*—आर्नोल्ड ग्लास्गो*

- अति अभिमान, बहुत बोलना, त्याग का अभाव, क्रोध, आत्मपोषण की इच्छा और मित्र-द्रोह ये छः कारण हैं जिनसे पुरुष पूर्ण आयु तक जीवित नहीं रहता है।

*—महात्मा विदुर*

- कीर्तिमान मनुष्यों के लिए कीर्तिनाश की अपेक्षा मृत्यु कहीं श्रेयस्कर है।

*—गीता*

- संसार में रहो, किंतु संसार के माया-मोह से निर्लिप्त रहो, उसी प्रकार जिस प्रकार कमल कीचड़ में विकसित होता है, तथापि वह कीचड़ के स्पर्श से परे रहकर सदैव निर्मल बना रहता है।

*—स्वामीजी*

- सदा अपने काम से काम रखो, व्यर्थ के विवाद में न पड़ो।

*—संत काशीराम*

- जो कर्ज आप पर है, उसे चुका दीजिए और तब आपको पता चलेगा कि आपके पास अपना क्या है।

*—बेंजामिन फ्रेंकलिन*

- जीतने वाले कोई अलग काम नहीं करते, वे हर काम अलग ढंग से करते हैं।

*—शिव खेड़ा*

- यश की प्राप्ति भले ही न हो किंतु अपयश होना उचित नहीं है।

*—राजशेखर*

- चापलूसी करना बहुत से लोग जानते हैं, लेकिन प्रशंसा करना किसी-किसी को ही आता है।

*—अज्ञात*

- अपना हृदय पवित्र रखोगे तो दस प्राणियों की ताकत रखोगे।

*—रामकृष्ण परमहंस*

- जब मनुष्य अपने अंदर युद्ध करने लगता है तब वह अवश्य ही किसी योग्य होता है।

*—राबर्ट ब्राउनिंग*

- डूबने वाले के साथ सहानुभूति का अर्थ यह नहीं कि उसके साथ डूब जाओ, बल्कि तैरकर उसे बचाने का प्रयास करो।

*—विनोबा भावे*

- जो व्यक्ति दूसरों के गुप्त भेद तुम्हारे सामने प्रकट करे, उसे अपने गुप्त भेदों से अवगत न होने दो, क्योंकि जो व्यवहार वह दूसरों के साथ कर रहा है वही तुम्हारे साथ करेगा।

*—हजरत अली*

- दुर्वचन पशुओं तक को अप्रिय है।

*—भगवान बुद्ध*

- समस्त आचरण-सिद्धांत का मूल तत्त्व है कि जो आचरण चिन्मुख है, वह श्रेष्ठ है।

*—हजारीप्रसाद द्विवेदी*

- एक आदमी दूसरे के मन की बात जान सकता है तो केवल सहानुभूति और प्यार से, उम्र और बुद्धि से नहीं।

*—शरतचंद्र*

- जब कोई आदरणीय व्यक्ति अपने यहां आएं तो कुछ दूर आगे बढ़कर उनका स्वागत करना चाहिए और जब वे वापस जाने लगें तो हमें कुछ दूर आगे चलकर उन्हें पहुंचाना चाहिए।

*—स्वामीजी*

- जो लोग कहते कुछ और हैं और करते कुछ और हैं, उनसे मेरा जी जलता है, क्योंकि उनके कहने और करने का कुछ ठिकाना नहीं है।

*—दादू*

- जिम्मेदार और गलत होने से बेहतर तो शायद गैर-जिम्मेदार और सही होना ही है।

*—विंस्टन चर्चिल*

- योग्य मनुष्यों के आचरण का सौंदर्य ही उनका वास्तविक सौंदर्य है।

*—तिरुवल्लुवर*

- सदाचार अपनाने से आयु और बल की वृद्धि होती है।

*—चाणक्य*

- फूल खिलने दो, मधुमक्खियां अपने-आप उसके पास आ जाएंगी। चरित्रवान बनो, जगत अपने-आप मुग्ध हो जाएगा।

*—रामकृष्ण परमहंस*

- ऊंचा आदर्श क्षुद्र, स्वार्थी और मूढ़-ग्राहों को भुलावा देता है।

*—संपूर्णानंद*

- महान आदर्श महान मस्तिष्क का निर्माण करते हैं।

*—इमन्स*

- जो पुरुष अपने सुख में प्रसन्न नहीं होता दूसरे के दुःख में प्रसन्न नहीं होता और दान देने के बाद संताप नहीं करता है, उसे ही उत्तम पुरुष की संज्ञा दी गई है।

*—महात्मा विदुर*

- धोखाधड़ी करने वालों को अंत में पछताने और शर्मिंदा होने के अलावा कुछ हाथ नहीं आता है।

*—जी बेली*

- जो जान गया है कि उससे गलती हो गई है और फिर भी वह उसे नहीं सुधारता है तो वह एक और गलती कर रहा है।

*—कन्फ्यूशियस*

- अगर किसी दस्तावेज पर अंकित वायदे नहीं निभाए जाते हैं तो उस दस्तावेज का कोई मूल्य नहीं है। उसे फाड़कर फेंक देना चाहिए।

  *—महात्मा गांधी*

- अपने जीवन का एक लक्ष्य बनाओ और अपनी शारीरिक व मानसिक शक्ति उसमें लगा दो।

  *—कार्लाइल*

- शब्द के द्वारा मन पर विजय पाई जाती है और व्यक्ति मोक्ष पाता है तथा गृहस्थ सुख-लाभ।

  *—गुरु नानक देव*

- फल आने पर पक्षी विनम्र हो जाते हैं और जल से मेघ धरती पर लटक आते हैं, सज्जन समृद्धि से विनम्र हो जाते हैं—यही परोपकारियों का स्वभाव है।

  *—भर्तृहरि*

- बोलो मत, करके दिखाओ; घोषित मत करो, महसूस करो।

  *—महर्षि अरविंद*

- हमारी इच्छाएं जितनी ही कम हों, उतने ही हम देवताओं के समीप हैं।

  *—सुकरात*

- चरित्र दो वस्तुओं से बनता है, अपनी विचारधारा से और समय बिताने के ढंग से।

  *—हर्बर्ट*

- एक छोटे-से परिहास से भी मानव के असली चरित्र पर काफी प्रकाश पड़ता है।

  *—प्लूटार्क*

- चरित्र एक ऐसा हीरा है **जो अन्य सभी** पाषाण-खंडों को काट देता है।

  *—वाल्टेयर*

- अच्छी दवा चाहे वह कड़वी ही क्यों न हो, रोग को दूर कर देती है। सहृदयतापूर्ण सलाह चाहे वह कटु ही क्यों न हो, हमारा पथ-प्रदर्शन करती है।

*—लुई फिशर*

- पानी पीने में पात्र का विचार रखा जा सकता है, पानी पीना ही बंद कर दिया जाए, यह नहीं हो सकता।

*—सर्वदानंद*

- किसी के हृदय पर पूर्ण विंजय करनी हो तो उसके दुःख के दिनों में उसकी सहायता करनी चाहिए।

*—आनंद कुमार*

- एक आदर्श संन्यासी होने की अपेक्षा एक आदर्श गृहस्थ होना अधिक कठिन है।

*—स्वामी विवेकानंद*

- मनुष्य अकेले अकेले काम करके संतोष और हर्ष को तो प्राप्त कर सकता है परंतु काम से आनंद तभी हाथ लग सकता है जब उसको दूसरों के सहयोग से किया जाए।

*—वृंदावनलाल वर्मा*

- यदि परमेश्वर नहीं है तो हमें स्वयं परमेश्वर गढ़ लेना चाहिए, क्योंकि उसका भय मनुष्य को उचित मार्ग पर चलाने में सहायक होता है।

*—यशपाल*

- जिस मनुष्य के साथ तुमने भलाई की है उसको सुखी देखकर तुम्हारा प्रसन्न होना ही तुम्हारी भलाई का पुरस्कार है।

*—शेख सादी*

- महत्ता के सुमन में नम्रता की सुगंध ही शोभा पाती हैं।

*—भर्तृहरि*

- यदि आप सफलता प्राप्त करने के लिए अपनी भावनाओं और इच्छा-शक्ति को प्रबल बनाना चाहते हैं तो क्रोध, चिड़चिड़ापन, ईर्ष्या, निराशा, मानसिक खिन्नता और चिंता को अपने पास न फटकने दें।

*—स्वेट मार्डेन*

- परिस्थितियां बदलने से चरित्र का दोष दुरुस्त नहीं हो जाता।

*—इमर्सन*

- जहां नम्रता से काम निकल जाए, वहां उग्रता नहीं दिखानी चाहिए।

*—प्रेमचंद*

- धमकी देने वाला सदा कायर होता है। शक्तिमान पुरुष कभी धमकी नहीं देता, वह तो जो चाहता है करके दिखा देता है।

*—बर्नार्ड शॉ*

- रिश्वत लेकर एक सच्चे आदमी का वोट खरीद लेने के लिए सारे संसार की संपत्ति भी अपर्याप्त है।

*—सेंट ग्रेगरी*

- मजदूर को उसका मेहनताना उसके पसीना सूखने से पहले दे दें।

*—हजरत मोहम्मद*

- थके हुए दिल को खुश करने और दुःखी व्यक्ति के कष्ट दूर करने का विशिष्ट पुरस्कार मिलता है। आफत के दिनों में ऐसे काम की याद प्रचंड धारा के समान आती है और हमारे बोझ को बहाकर ले आती है।

*—हजरत मोहम्मद*

- कौन-से काम सबसे बेहतरीन हैं? एक आदमी के दिल को खुश रखना, भूखों को खिलाना, मुसीबत में पड़े हुए की मदद करना, दुःखी व्यक्ति के दुःख को हल्का करना और पीड़ित व्यक्तियों पर हुए अत्याचारों को दूर करना।

*—हजरत मोहम्मद*

- किसी भी मादक द्रव्य का पान न करो, क्योंकि सभी बुरे कार्यों की जड़ में यह मादकता होती है और गुनाह करने से सावधान रहो।

*—श्रीराम शर्मा*

- हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हम सभी संसार के ऋणी हैं, संसार हमारा कुछ नहीं चाहता। हम सबके लिए यह तो एक महान सौभाग्य है कि हमें संसार के लिए कुछ करने का अवसर मिले। संसार की भलाई करने में हम वास्तव में अपनी भलाई करते हैं।

*—स्वामी विवेकानंद*

- अपनी सफाई बहुत कम पेश करनी चहिए। यदि आपका चरित्र स्वयं अपना बचाव नहीं कर सकता तो यह बचाने लायक है भी नहीं।

*—एफ. रॉबर्टसन*

- चरित्र की गिरावट ही हर अपराध की जिम्मेदारी है।

*—अज्ञात*

- चरित्र दो चीजों से बनता है आपकी विचारधारा से और आपके अपना समय बिताने के ढंग से।

*—हेवर्ड*

- बोलने, न बोलने से मौन का कोई वास्ता नहीं है। मौन का वास्ता तो है निर्विचार दशा से और वह अंतर्दशा बोलने से भी भंग नहीं होगी।

*—आचार्य रजनीश*

- फूल अपने लिए नहीं खिलता। दूसरों के लिए तुम भी अपने हृदय कुसुम को प्रस्फुटित कर देना।

*—बंकिमचंद्र*

- फूल खिलने दो, मधुमक्खियां अपने-आप आपके पास आ जाएंगी। चरित्रवान बनो, जगत अपने-आप मुग्ध हो जाएगा।

*—रामकृष्ण परमहंस*

- जो हाथ लोगों की सेवा करते हैं वह उस मुंह से कहीं बेहतर हैं जो सिर्फ दुआ करते हैं।

*—शिव खेड़ा*

- मानव-चरित्र कितना रहस्यमय है। हम दूसरों का अहित करते जरा भी नहीं झिझकते, किंतु जब दूसरों के हाथों हमें कोई हानि पहुंचती है तो हमारा खून खौलने लगता है।

*—प्रेमचंद*

- भगवान शारीरिक क्रिया से नहीं मिलते। भगवान को पाने के लिए भावना के अनुसार आचार होना चाहिए।

*—महात्मा गांधी*

- उत्तम व्यक्ति शब्दों में सुस्त और चरित्र में चुस्त होता है।

*—कन्फ्यूशियस*

- यदि नेता चरित्रवान नहीं है तो अनुयायियों में उसके प्रति श्रद्धा होना संभव नहीं है। शुद्ध चरित्र के आधार पर ही अटूट श्रद्धा और विश्वास पाया जा सकता है।

*—स्वामी विवेकानंद*

- शेर के अंदर भी परमात्मा विराजमान है, पर उसके सामने नहीं जाना चाहिए। दुष्ट मनुष्यों में भी ईश्वर मौजूद है, पर इसलिए उनका साथ करना उचित नहीं।

*—रामकृष्ण परमहंस*

- आचरण दर्पण के समान है। इसमें हर किसी का वास्तविक प्रतिबिंब दिखाई पड़ता है।

*—प्रेमचंद*

- अगर तुम सबको खुश रखना चाहते हो तो बुरी आदतों को छोड़ो।

*—अज्ञात*

- लोग क्या कहते हैं, इस पर ध्यान मत दो। सिर्फ यह देखो कि जो करने योग्य था, वह बन पड़ा या नहीं।

*—अज्ञात*

- किसी व्यक्ति की महानता की परख यह है क अपने से छोटे के लिए क्या सोचता और क्या करता रहा?

*—अज्ञात*

- जो पवित्र नहीं, उदार नहीं, उसका जप-तप निरर्थक है।

*—अज्ञात*

- जिनकी तुम प्रशंसा करते हो, उनके गुणों को अपनाओ और स्वयं भी प्रशंसा के योग्य बनो।

*—अज्ञात*

- दिन-भर के दुराचारों तथा बुरी आकांक्षाओं से अलग रहना रात-भर के भजन से अच्छा है।

*—अज्ञात*

- शील द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, शील हमारी गति के लिए संबल है।

*—रवींद्रनाथ ठाकुर*

- जो दूसरों के जीवन के अंधकार में सूर्य का प्रकाश पहुचाते हैं उनकी कीर्ति कभी नष्ट नहीं होती।

*—स्वेट मार्डन*

- सत्पुरुष दुःख पड़ने पर नहीं घबराते, ऐश्वर्य पाकर गर्व नहीं करते, भय में भी धीर बने रहते हैं तथा अनुकूल और प्रतिकूल स्थितियों में समान स्वभाव रखते हैं।

*—हाल सातवाहन*

- चंद्रमा अपना प्रकाश सारे आकाश में फैलाता है, परंतु अपना कलंक अपने ही भीतर रखता है।

*—रवींद्रनाथ ठाकुर*

- रूखी, कठोर और कटु वाणी सुनने वाले के मर्मस्थलों, हड्डियों और दिल को जला डालती है।

*—विदुर*

- जन-धन, यौवन का गर्व मत करो, क्षण मात्र में काल सब कुछ नष्ट कर देता है।

*—आदि शंकराचार्य*

- अपने पड़ोसियों के साथ हमेशा भाईचारे और हमदर्दी का सलूक करना चाहिए।

*—कबीर*

- अपनी आवश्यकताएं कम से कम रखें, ताकि जीवन का निर्वाह सहज रूप से होता रहे।

*—महात्मा गांधी*

- अच्छी नसीहत मानने से अपनी ही योग्यता बढ़ती है।

*—गेटे*

- जिस दिन आप पहली बार खुद पर हँसते हैं, उसी दिन आप वयस्क हो जाते हैं।

*—ईगल बेट्टीमोर*

- मानव-चरित्र न तो बिल्कुल स्याह होता है और न सफेद। अनुकूल स्थितियों में नीचे गिर जाता है।

*—प्रेमचंद*

- दूसरों के सामने अपनी श्रेष्ठता प्रकट करना उसी के लिए संभव है जो भीतर से श्रेष्ठ है।

*—अज्ञात*

- जिन दोषों के कारण हम दूसरों की भर्त्सना करते हैं, उनसे अपनी सफाई पहले कर डालें।

*—अज्ञात*

- कपट-रहित हृदय ही प्राणी मात्र पर दया करते हैं।

*—अज्ञात*

- जो उपदेशों के अंबार लगाते रहते हैं, प्रायः निज के जीवन में खोखले होते हैं।

*—अज्ञात*

- जो विचार हमारे अचेतन मन को प्रभावित करता है, वही चरित्र को सुधार सकता है।

*—अज्ञात*

- जो छोटों पर दया नहीं करते, उन्हें बड़ों से दया मांगने का अधिकार नहीं है।

*—अज्ञात*

- आत्मगौरव नष्ट करके जीना मृत्यु से भी बुरा है।

*—अज्ञात*

- ऋण लेने का स्वभाव दरिद्रता को निमंत्रण देता है।

*—अज्ञात*

- अपने स्वार्थ से पहले दूसरों के लाभ का भी ध्यान रखना चाहिए।

*—अज्ञात*

- छोटे-छोटे प्रलोभनों का आकर्षण चरित्र को गिरा देता है।

*—अज्ञात*

- दुनिया में झगड़ों की जड़ यही है कि हम देते कम हैं और मांगते ज्यादा हैं।

*—अज्ञात*

- लोकसेवा के लिए हम अपने संपर्क-क्षेत्र में उत्कृष्टता की आस्थाओं का बीजारोपण करें।

*—अज्ञात*

- छिद्रान्वेषण की वृत्ति अपने अंदर हो तो संसार के सभी मनुष्य दुष्ट-दुराचारी दिखाई देंगे।

*—अज्ञात*

- अनौचित्य की अवज्ञा पारिवारिक संबंधों और मर्यादाओं से महत्त्वपूर्ण है।

*—अज्ञात*

- यदि कुछ लेना चाहते हो तो कुछ देना सीखो।

*—सुभाषचंद्र बोस*

- जिनमें सन्मार्ग पर चलने का साहस है, उनका कभी पतन-पराभव नहीं होता।

*—अज्ञात*

- परिपूर्ण आनंद तो वह है जो हम दूसरों को देते हैं।

*—अज्ञात*

- एक निष्कपट व्यक्ति का आत्म-बलिदान उन लाखों व्यक्तियों के बलिदान की अपेक्षा लाख गुना शक्तिशाली है जो दूसरों के प्राण लेते हुए अपनी जान देते हैं।

*—अज्ञात*

- जो स्वयं को सुधारता है उसने दूसरों को सुधारने के लिए बहुत कुछ कर लिया है।

*—टॉमस ऐडम्स*

- अक्लमंदी यह है कि हम उस खुदा की बातें कम करें, जिसे हम समझ नहीं सकते और उन इंसानों की बातें अधिक करें, जिन्हें हम समझ सकते हैं।

*—खलील जिब्रान*

- अपना रखा हआ कदम ठीक होगा, तो उसका आज या कल अच्छा फल होगा ही।

*—महात्मा गांधी*

- शरारत करने के अवसर दिन में असंख्य मिलते हैं नेकी करने का अवसर वर्ष में एक बार।

*—वाल्टेयर*

- जब तुम अपने जीवन की गहराइयों तक पहुंच जाओगे, तब तुम्हें मालूम होगा कि न तो तुम पापियों से ऊंचे और श्रेष्ठ हो और न अवतारों से नीचे और कम हो।

*—खलील जिब्रान*

- एक कार्य को बो दो और एक आदत प्राप्त कर लो, एक आदत को बो दो और एक चरित्र प्राप्त कर लो, एक चरित्र को बो दो और एक भाग्य प्राप्त कर लो।

*—जी.डी. वार्डमेन*

## कर्तव्य

- कर्त्तव्य कोई ऐसी वस्तु नहीं जिसको नाप-जोखकर दिया जाए।

*—शरतचंद्र*

- सदैवं उस कर्त्तव्य का पालन करो, जो तुम्हारे सबसे निकटतम है।

*—गेटे*

- विश्व में सबसे निकृष्ट व्यक्ति कौन है? जो अपना कर्त्तव्य जानता है किंतु पालन नहीं करता है।

*—एम. हेनरी*

- शासन वही उत्तम है जो अपने अधीनस्थों को सुखी रखे।

*—कन्फ्यूशियस*

- जब तुम्हारे पड़ोसी के घर में आग लगी हो तो तुम्हारी संपत्ति भी खतरे में है!

*—होरेस*

- हृदय की सच्ची प्रार्थना से हमें सच्चे कर्तव्य का पता चलता है। आखिर में तो कर्तव्य करना ही प्रार्थना बन जाती है।

*—महात्मा गांधी*

- अपने निर्धारित कर्तव्य को पूरा करने में एक मिनट की भी देरी न करो।

*—चाणक्य*

- प्रकृति को भला-बुरा न कहो। उसने अपना कर्त्तव्य पूरा किया, तुम अपना करो।

*—मिल्टन*

- सहानुभूति और दया का कर्त्तव्य में कोई स्थान नहीं है। कमजोरी की निंदा करके व्यक्ति से उन कमजोरियों को दूर करना उचित होता है।

*—भगवतीचरण वर्मा*

- जो कर्त्तव्य को छोड़कर अकर्त्तव्य को करते हैं उनका चित्त मलिन से मलिनतर होता जाता है।

*—भगवान बुद्ध*

- एक कर्त्तव्य-पूर्ति का पुरस्कार है—दूसरे कर्त्तव्य को पूर्ण करने की योग्यता।

*—जार्ज इलियट*

- उपकार सौदे की तरह मत करो। उसे कर्त्तव्य मानकर करने से ही संतोष मिलता है।

*—अज्ञात*

- उच्च उद्देश्य से जुड़े कर्त्तव्यपालन का ही दूसरा नाम कर्मयोग है।

*—अज्ञात*

- कर्त्तव्य-बुद्धि के परिष्कार से ही गुणों की पराकाष्ठा तक पहुंच पाना संभव है।

*—अज्ञात*

- अच्छे लोग दूसरों के लिए जीते हैं, जबकि दुष्ट दूसरों पर जीते हैं।

*—शिव खेड़ा*

- जो हाथ लोगों की सेवा करते हैं वे उस मुंह से कहीं बेहतर हैं जो सिर्फ दुआ करते हैं।

*—शिव खेड़ा*

- कर्त्तव्य-पालन करने में जो मिठास है वह और कहीं नहीं।

*—महात्मा गांधी*

- कर्त्तव्य और वर्तमान हमारा है। फल और भविष्य ईश्वर के हाथ में हैं।

*—होरेस ग्रेले*

- कर्त्तव्यपरायणता की धार्मिकता है।

*—अज्ञात*

## धर्म/अध्यात्म/दान

- जो मन तेज है, वह बीमार है। जो मन धीमा है, वह स्वस्थ है। जो मन स्थिर है, वह दिव्य है।

*—मेहर बाबा*

- किसी भी कर्म को पाप नहीं कहा जा सकता, वह अपने में पूर्ण है, पवित्र है। युद्ध में हत्या करना धर्म है, परंतु दूसरे स्थल पर अधर्म।

*—जयशंकर प्रसाद*

- जिस प्रकार कोई व्यक्ति पेड़ पर चढ़ते समय स्वतंत्र होता है, किंतु गिरते समय शक्तिहीन हो जाता है, इसी प्रकार कर्मों के संचयन के समय आत्मा स्वतंत्र होती है, किंतु जब कर्म पक जाते हैं, तो वह असहाय बन जाती है।

*—भगवान महावीर*

- जिसके पास धीरज है, जो मेहनत से नहीं घबराता, कामयाबी उसकी चेरी है।

*—अज्ञात*

- धर्म आत्मा का विषय है, जिसका प्रचार चिंतन, ज्ञान, तपस्या और अनुभव से ही होती है।

*—विनोबा भावे*

- नास्तिक वह है जिसे स्वयं पर विश्वास नहीं।

*—स्वामी विवेकानंद*

- जो मनुष्य निरंतर प्रभु का भय मानता रहता है, वह धन्य है; परंतु जो अपना मन कठोर कर लेता है वह विपत्ति में पड़ता है।

*—ईसा मसीह*

- शब्द जितने कम होंगे, प्रार्थना उतनी ही अच्छी होगी।

*—लूथर*

- दान का भाव बड़ा उत्तम भाव है, पर इसका भाव यह नहीं कि समाज में दानपात्रों का एक वर्ग उत्पन्न किया जाए।

*—संपूर्णानंद*

- आत्म-चिंतन और आत्म-शोधन की साधना ही आत्मा को परमात्मा का पद प्रदान करती है।

*—पं. श्रीराम शर्मा आचार्य*

- जिससे अभ्युदय और कल्याण अथवा परमार्थ की सिद्धि हो, वही धर्म है।

*—अज्ञात*

- वेग से चलती हुई नौका में बैठे व्यक्ति को जिस प्रकार तटवर्ती वृक्ष विपरीत दिशा में भागते प्रतीत होते हैं, उसी प्रकार पुनर्जन्म की अवस्था का संबंध आत्मा के साथ मान लिया जाता है।

*—आदि शंकराचार्य*

- सबसे उत्तम तीर्थ अपना मन है जो विशेष रूप से शुद्ध किया हुआ है।

*—शंकराचार्य*

- जो स्वयं नहीं भोग सकता, वह प्रसन्न मन से दान भी नहीं कर सकता।

*—रवींद्रनाथ ठाकुर*

- प्रार्थना का अर्थ अमुक शब्दों का दोहराना नहीं है। प्रार्थना का अर्थ है दैविकता की अनुभूति और प्राप्ति।

*—स्वामी रामतीर्थ*

- जो बिना प्रार्थना किए सोता है हर दिवस को दो रजनी बनाता है।

*—हर्बर्ट*

- प्रार्थना है एक देखने वाली और उल्लास में मस्त रहने वाली आत्मा का आत्मनिवेदन।

*—इमर्सन*

- हमें अपनी प्रार्थनाओं से सामान्य मंगल-कामना करनी चाहिए, क्योंकि परमेश्वर भली-भांति जानता है कि हमारी किस में भलाई है?

*—सुकरात*

- दान से बड़ा धर्म और नहीं। सबसे नीच मनुष्य वह है, जिसके हाथ लेने के फैल जाते हैं। और सर्वोच्च व्यक्ति वह, जिसके हाथ देने को बढ़ जाते हैं।

*—स्वामी विवेकानंद*

- अपने मन को स्थिर और एकाग्र करने के लिए मूर्तिपूजा करो।

*—साईं बाबा*

- व्यक्ति के विचार जैसे होंगे वैसे ही रूप में वह भगवान के अस्तित्व को देखेगा।

*—स्वेट मार्डेन*

- ईश्वर का नाम सभी लेते हैं, परंतु केवल ईश्वर का नाम लेने से ही ईश्वर को पाया नहीं जा सकता है।

*—गुरु नानक देव*

- हीरा और सोने के आभूषण मुफ्त नहीं बंटते। पंचामृत और तुलसी-पत्र ही प्रसाद में मिलता है। माला घुमाने और अगरबत्ती जलाने की कीमत पर किसी की मनोकामना पूरी करने वाले देवी-देवता अभी जन्मे नहीं हैं।

*—पं. श्रीराम शर्मा आचार्य*

- धर्म का फल इस जीवन में नहीं मिलता। हमें आंखें बंद कर, नारायण पर भरोसा रखते हुए, धर्ममार्ग पर चलते रहना चाहिए।

*—अज्ञात*

- देवता को न पाकर हम पाषाण-प्रतिष्ठा करते हैं। देवता मिल जाए तो पाषाण को कौन पूजे!

*—प्रेमचंद*

- दुनिया को छोड़ने से परमात्मा नहीं मिलता। परमात्मा मिलने से दुनिया अपने-आप छूट जाती है।

*—आचार्य रजनीश*

- विज्ञान भौतिक सुख-सुविधाएं देता है तो अध्यात्म मानसिक संपन्नता देता है। दोनों आवश्यक हैं। बिना आध्यात्मिक संपदा के मनुष्य भिखारी ही रहता है।

*—आचार्य रजनीश*

- जब हाथ, पैर और शरीर अस्वच्छ हो जाता है, जल उन्हें धोकर शुद्ध कर देता है। जब वस्त्र अस्वच्छ हो जाते हैं, साबुन उन्हें अवश्य स्वच्छ कर देता है। जब मन पाप और लज्जा से अशुद्ध हो जाता है तब ईश्वर नाम के प्रेम से वह स्वच्छ हो जाता है।

*—गुरु नानक देव*

- यदि कोई राजा से मिलना चाहे तो प्रथम उसे राजा के किसी कृपापात्र से मिलना पड़ता है। यदि कोई ईश्वर के दर्शन को तरस रहा हो तो उसे पहले ऐसे व्यक्ति से मिलना चाहिए जो ईश्वर में लीन हो गया हो।

*—गुरु नानक देव*

- वह ईमान वाला नहीं है, जो अपनी अमानत को पूरा नहीं करता और उसका कोई धर्म नहीं है, जो अपने वादों को पूरा नहीं करता।

*—हजरत मोहम्मद*

- अपने लिए इस पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो, जहां कीड़े और काई बिगाड़ते हैं और जहां चोर सेंध लगाते हैं और चुराते हैं, परंतु अपने लिए स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, क्योंकि जहां तुम्हारा धन होगा, वहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा।

*—ईसा मसीह*

- कुछ मत मांगो। बदले में कुछ मत चाहो। तुम्हें जो देना है, दे दो, वह तुम्हारे पास लौटकर आएगा—पर अभी उसकी बात मत सोचो। वह वर्द्धित होकर, सहस्रगुणा वर्द्धित होकर वापस आएगा, पर ध्यान उधर नहीं जाना चाहिए। तुममें केवल देने की शक्ति है। दे दो, बस बात वहीं पर समाप्त हो जाती है।

*—स्वामी विवेकानंद*

- समान परिस्थितियों में जब दूसरे लोग संघर्षों की मार से दब जाते हैं, तब ईश्वर पर भरोसा करने वाले विजय प्राप्त करते हैं।

*—स्वेट मार्डेन*

- सिद्धियां प्राप्त करके लोग दुनिया में भ्रम फैलाते हैं कि वे दुनिया का उद्धार कर देंगे, किंतु यह कार्य ईश्वर का है, उसे ही करने दो। ऐसे लोग स्वार्थी होते हैं। ये सिद्धियां अज्ञान के कारण हैं, अतः झूठी हैं। ये यहां की उपज हैं।

*—महर्षि रमण*

- मोक्ष न योग से सिद्ध होता है और न सांख्य से, न कर्मों से और न विद्या से। वह केवल ब्रह्म और आत्मा की एकता के ज्ञान से ही होता है। और किसी प्रकार नहीं।

*—शंकराचार्य*

- भीतर आत्मा का प्रकाश फैला रहे तो बाहर से अनुशासन लादना आवश्यक नहीं।

*—अज्ञात*

- आत्मिक विकास का पौधा सांसारिक विषय-वासना की पृथ्वी पर नहीं उगता। उसके लिए यत्नपूर्वक तैयार की हुई, प्रेम से तर समतल भूमि चाहिए।

*—स्वामी रामतीर्थ*

- जो दिखाई देता है वह तो उपयोगी है ही, जो नहीं दिखाई देता वह महान् उपयोगी है। वही धुरी है जिस पर जीवनचक्र घूमता है।

*—लाओत्से*

- हमारा यदि कुछ छिन जाए तो दुःख प्रकट करते हैं, किंतु जो मिला है उसके लिए धन्यवाद नहीं देते परमात्मा को। जो छिना, वह भी स्वयं का नहीं था। चोरी का ही था!

*—आचार्य रजनीश*

- सच्चाई यह है कि आदमी ने ईश्वर को अपनी शक्ल का बनाया, इसलिए इतने ईश्वर हैं। ईश्वर ने हमें गढ़ा नहीं, लेकिन हम ईश्वर को रोज गढ़ रहे हैं, इसलिए सबके भिन्न-भिन्न ईश्वर हैं।

*—नीत्से*

- जिसे स्वर्ग की ऊंचाई छूनी हो, उसे नरक की गहराई भी छूनी पड़ती है। साधारण आदमी धर्म की ऊंचाई नहीं छू पाते, पापी छू लेते हैं। अति पर ही परिवर्तन होता है।

*—नीत्से*

- पंडित और संत में वही भेद है जो बुद्धि और हृदय में है। अनुभूति का एक कण मनोज्ञान से कहीं अधिक मूल्यवान है। धर्म अनुभूति की वस्तु है।

*—रामधारी सिंह दिनकर*

- धर्म और व्यापार को एक तराजू में तौलना मूर्खता है। धर्म, धर्म है; व्यापार, व्यापार। परस्पर कोई संबंध नहीं। संसार में जीवित रहने के लिए किसी व्यापार की जरूरत है, धर्म की नहीं। धर्म तो व्यापार का शृंगार है।

*—प्रेमचंद*

- अध्यात्म का अर्थ है, अपने को सही करना।

*—अज्ञात*

- जीवन के आध्यात्मिक ध्येय को जीवन के भीतर ही ढूंढ़ना चाहिए, बाहर नहीं।

*—अज्ञात*

- प्रेम और विश्वास के साथ राम का नाम जपने से मानव जाति का कल्याण होता है।

*—तुलसीदास*

- ईश्वर किसी निर्दोष व्यक्ति को सजा नहीं देते हैं।

*—बाइबिल*

- आदमी धर्म के लिए लड़ेगा, उसके लिए सब कुछ करेगा, लेकिन वह धर्म के अनुरूप आचरण नहीं करेगा।

*—जवाहरलाल नेहरू*

- खुदा कहते हैं कि तुम दान दो, मैं तुम्हें और अधिक दूंगा।

*—हजरत मोहम्मद*

- हम इतने धार्मिक हैं कि एक-दूसरे से नफरत कर सकें, लेकिन इतने धार्मिक नहीं है कि एक-दूसरे से प्रेम कर सकें।

*—जोनायन स्विफ्ट*

- वे सभी मोक्ष के अधिकारी है जो ईश्वर में विश्वास करते हैं और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं।

*—हजरत मोहम्मद*

- दान देकर लोगों को खुश होना चाहिए, क्योंकि मुसीबत दान की दीवार को कभी नहीं फांदती।

*—हजरत मोहम्मद*

- नरक ईश्वर का न्याय है। स्वर्ग उसका प्रेम है। पृथ्वी उसकी दीर्घकालीन यातना है।

*—वारोल बेसेनबर्ग*

- धर्म का सच्चा अधिकारी और पात्र वही हो सकता है जो सक्षम व गुणवान हो और लक्ष्मी जिसके चरण चूमती हो।

*—स्वामी विवेकानंद*

- ईश्वर अचल शक्ति है, उसका विश्व कभी अराजक नहीं हो सकता है।

*—इंजील*

- इस दुनिया में दया करने वाले लोगों पर खुदा भी दया करता है।

*—कुराना*

- ईश्वर पर विश्वास रखने से चिंता समाप्त हो जाती है और सारी कठिनाइयां सुलझ जाती हैं।

*—अज्ञात*

- आप ही के भीतर सच्चा आनंद है। आप ही के भीतर दिव्यामृत का महासागर है। इसे अपने भीतर ढूंढ़िए। अनुभव कीजिए कि वह भीतर ही है—आत्मा। यह न तन है न मन है, न बुद्धि है, न मस्तिष्क है।

*—अज्ञात*

- साधन उसी सीमा तक प्राप्त करना चाहिए, जिस सीमा तक वे अपनी प्रमाणिकता को न गंवा दें।

*—अज्ञात*

- भगवान ने मानव-शरीर उनको दिया है, जिनको परमात्मा-प्राप्ति के योग्य समझा है।

*—अज्ञात*

- भगवान के सामने सच्चे हृदय से अपने दोष स्वीकार करने से दोषों का परिमार्जन हो जाता है।

*—अज्ञात*

- सच्चा भक्त वह है जिसमें तड़पन हो, करुणा हो और सक्रियता हो।

*—अज्ञात*

- जब तक हृदय में स्वार्थपरता रहती है, तब तक भगवान से प्रेम नहीं हो सकता है।

*—अज्ञात*

- हाथ की शोभा कंगन से नहीं, दान से है।

*—अज्ञात*

- अंतःक्षेत्र की कालिमा धुले तो परमात्मा का प्रकाश अंदर पहुंचे।

*—अज्ञात*

- नास्तिकता ईश्वर की अस्वीकृति को नहीं, आदर्शों की अवहेलना को कहते हैं।

—*अज्ञात*

- व्यक्ति की संवेदना को परिष्कृत करने वाली विद्या है : धर्म।

—*अज्ञात*

- जो धर्म मानव की अनर्थों से रक्षा नहीं कर सकता है, वह धर्म निरर्थक है।

—*वाल्मीकि*

- जो भी रचा जाता है और जो भी रचा नहीं जाता है, वह परमात्मा है।

—*महात्मा गांधी*

- जिसे धर्म की शक्ति पर, धर्म-स्वरूप भगवान की अनंत करुणा पर पूर्ण विश्वास है, नैराश्य का दुःख कभी उसे पास नहीं फटक सकता।

—*महात्मा गांधी*

- त्याग से पाप का मूलधन चुकता है और दान से पाप का ब्याज।

—*विनोबा भावे*

## ❖ निंदा-स्तुति ❖

- निंदक अंततः स्वयं ही निंदित हो जाते हैं।

—*ऋग्वेद*

- जिसका हृदय सहानुभूति से परिपूर्ण है उसे ही समालोचना करने का अधिकार है।

—*अब्राहम लिंकन*

# ❖ युद्ध-शांति ❖

- युद्ध मनुष्यता के लिए सबसे भयानक महामारी है। यह धर्म को मिटा देता है और राष्ट्र का विनाश कर देता है।

*—मार्टिन लूथर किंग*

- शांति बाहर की किसी चीज से नहीं मिलती, वह अपने अंदर की चीज है।

*—महात्मा गांधी*

- शांति के समान कोई तप नहीं है।

*—चाणक्य*

- वाद-विवाद में शांति से काम लें, क्योंकि आक्रोश और तीव्रता के कारण छोटी-सी बात अवगुण बन जाती है और सच्चाई भी अनैतिक हो जाती है।

*—स्वेट मार्डेन*

- युद्ध कभी समस्या का हल नहीं करते।

*—अज्ञात*

- अगर सम्मान के साथ शांति कायम नहीं रखी जा सकती तो ऐसी शांति का कोई अर्थ नहीं है।

*—लार्ड जॉन रसेल*

- युद्ध मनुष्यता के लिए सबसे भयानक महामारी है, यह धर्म को मिटा देता हैं, राष्ट्रों का विनाश कर देता है और परिवारों का विध्वंस कर देता है।

*—मार्टिन लूथर किंग*

- किसी भी तरह का युद्ध धर्म और मानवता के सभी सिद्धांतों का उल्लंघन है।

*—एडवर्ड़ गिब्बन*

- वाह्य मौन से कोई आंतरिक शांति नहीं पा सकता चाहे युगों तक वह मौन क्यों न बैठा रहे।

*—गुरु नानक देव*

- काम के समान कोई अग्नि नहीं है तथा द्वेष के समान कोई अपराध नहीं है और शांति से ऊंचा कोई आनंद नहीं है।

*—भगवान महावीर*

- जिसने सुनना सीख लिया, जिसे श्रवण की कला आ गई, उसे तत्क्षण समझ में आना शुरू हो जाएगा—कहां मिलती है शांति।

*—आचार्य रजनीश*

- शांति और धैर्य जीवन के मूल मंत्र हैं।

*—स्वेट मार्डेन*

- सुख और संतोष का सबसे अधिक सुंदर रूप और शांति और भाईचारा है।

*—चैनिंग*

- शांति की बात करना ही काफी नहीं है। उसमें विश्वास होना चाहिए और विश्वास करना भी पर्याप्त नहीं है, उसके लिए काम किया जाना चाहिए।

*—एलीनर रूजवेल्ट*

- मनुष्य की शांति की परख समाज में ही हो सकती है, हिमालय की चोटी पर नहीं।

*—महात्मा गांधी*

- युद्ध मानव जाति का विनाशक है, अतः उससे बचने के सभी उपायों को आजमाना चाहिए।

*—महात्मा गांधी*

- दुनिया में आज तक 'अच्छा युद्ध' और 'खराब शांति' कभी नहीं हुई।

*—बेंजामिन फ्रेंकलिन*

- जहां शांति नहीं है, वहां असीमित दुःख और तकलीफें हैं।

*—स्वामी दयानंद*

- पहले आप अपने भीतर शांति रखिए तब आप दूसरों को भी शांति के लिए प्रेरित कर सकेंगे।

*—थामस केंपिस*

- पूर्ण शांति की राह मुझे कोई दिखाई नहीं देती सिवाय इसके कि मनुष्य अपने अंतर की आवाज पर चले।

*—इमर्सन*

- संतुष्ट बने रहो और अपने हृदय की गहराइयों में निवास करो। शांति प्राप्त करने का यही एकमात्र पथ है।

*—अज्ञात*

- शांति मनुष्य की सुखद और स्वाभाविक स्थिति है; युद्ध उसका पतन और कलंक है।

*—टामसन*

## ❖ राजनीति ❖

- राजनीतिज्ञ पारे की तरह होते हैं, उन पर अंगुली रखने की कोशिश करो तो उसके नीचे कुछ नहीं मिलता है।

*—आस्टिन*

- राजनीति साधुओं के लिए नहीं है।

*—लोकमान्य तिलक*

- राजनीतिज्ञों के लिए सत्ता और कुर्सी से बढ़कर शक्तिवर्द्धक औषधि कोई अन्य नहीं है।

*—हेनरी कीसिंजर*

- जुए की तरह राजनीति में ऐसा कुछ है जो मनुष्य को नीचे गिरा देता है। वह अच्छे मनुष्य को बुरा और बुरे को और भी जघन्य बना देती है।

*—डेसमांड शॉ*

- राजनीतिज्ञ जीत का जश्न जरूर मनाएं, लेकिन हार से सबक लेना न भूलें।

*—महर्षि अरविंद*

- जैसे माली बगीचे में एक-एक फूल को ग्रहण करता है, पर फूल से उनका उच्छेद नहीं करता, उसी प्रकार प्रजा से कर ग्रहण करें। जिस प्रकार अंगारकारक पेड़ों को समूल नाश करके कोयला बनता है, वैसे प्रजा का समूल उच्छेद न करें।

*—महात्मा विदुर*

- पुरुष स्थानीय राजनीति में केवल इसलिए आते हैं कि उनका वैवाहिक जीवन सुखी नहीं होता है।

*—नार्थकोर्ट पार्किंसन*

- राजनीति में अगले पखवाड़े के आगे जाकर चीजों को देखने का कोई मतलब नहीं है।

*—चैंबरलेन*

- राजनीति की दुनिया उत्तेजक है। इसमें आप अत्यंत दिलचस्प काम कर सकते हैं, पर यह डॉलर के समान गिरती भी है।

*—जॉन एफ कैनेडी*

- सिद्धांतों के लिए संघर्ष के नाम पर स्वार्थों की हलचल ही राजनीति है।

*—एंब्रोस बीयर्स*

- राजनीति में किसी बात पर तब तक भरोसा मत कीजिए जब तक उसका अधिकृत खंडन न हो जाए।

*—बिस्मार्क*

- जनता को उसके हितों से जुड़े मामलों से अलग रखने की कला ही राजनीति है।

*—पाल बैलेरी*

- व्यक्ति-पूजा और तानाशाही अस्थायी दौर हैं। ऐसी स्थिति लंबे समय तक नहीं चल सकती जहां लोग अपने मन की बात न कह सकें।

*—विंस्टन चर्चिल*

- राजनीति में कई मौकों पर अपने सभी पत्ते सामने रखकर बाजी खेलना सबसे अच्छा दांव साबित होता है।

*—एच.जी. वेल्स*

- व्यावहारिक राजनीति का मुख्य लक्ष्य जनता को भयभीत रखना और उसे सुरक्षा देने का काल्पनिक एहसास कराना है।

*—एच.एल. मेंकेन*

- किसी भी देश के नैतिक मूल्यों पर राजनीति से अधिक एक अच्छी किताब का प्रभाव पड़ता है।

*—ग्लेडस्टोन*

- तानाशाह ऐसे शेर की सवारी कर रहे होते हैं जिसकी पीठ से उतरने की वे हिम्मत नहीं कर सकते हैं।

*—अज्ञात*

## ✤ साहित्य/कला ✤

- कला का सबसे सुंदर रूप छिपाव है, दिखावा नहीं।

*—प्रेमचंद*

- बुरी पुस्तकें पढ़ना जहर समान है।

*—टालस्टाय*

- मैं नरक में भी पुस्तकों का स्वागत करूंगा, क्योंकि इनमें वो शक्ति है कि जहां ये होंगी वहां आप ही स्वर्ग बन जाएगा।

*—लोकमान्य तिलक*

- जो कृतिकारों की धूल उड़ाते हैं उनमें अधिकांशः मूढ़ व परगुण-द्वेषी होते हैं।

*—शेली*

- सबसे जीवित रचना वह है जिसे पढ़ने से प्रतीत होता हो कि लेखक ने अंतर से सब कुछ फूल की तरह प्रस्फुटित किया है।

*—शरतचंद्र*

- जो पुस्तकें तुम्हें जितना अधिक सोचने के लिए विवश करें, वे तुम्हें उतनी ही सहायता देती हैं।

*—जवाहरलाल नेहरू*

## नीति

- जिस प्रयत्न से कार्य-सिद्धि हो वही उपाय करना चाहिए।

*—चाणक्य*

- किसी भी कार्य की हित-अहित संबंधी योजना को गुप्त रखने से ही कार्य सिद्ध हो पाता है।

*—चाणक्य*

- बहुत नपे-तुले और कम शब्दों में अपनी बात कहना ही सफल कूटनीति की कला है।

*—बिल ड्यूरेंट*

- पुराना व्यभिचारी, झूठा राजा और घमंडी फकीर अभिशप्त होते हैं।

*—पं. श्रीराम शर्मा आचार्य*

- दाग जो लागा नील का, सौ मन साबुन धोय। कोटि जतन परबोधिये, काग हंस न होय।

*—कबीर*

- केवल नीति का आश्रय लेना कायरता है और शक्ति का प्रयोग करना पशुता है।

*—कालीदास*

- अपराधियों को इसलिए फांसी पर लटकाया जाता है ताकि अपराध न हो सकें।

*—लार्ड हेलिफेक्स*

- जो उपदेश आत्मा से निकलता है, वही आत्मा पर सबसे ज्यादा कारगर होता है।

*—टामस फुलर*

- जो बुराई को बिना विरोध किए स्वीकार लेता है, वह स्वयं वस्तुतः बुराई में सहयोगी होता है।

*—मार्टिन लूथर किंग*

- मीठी बातों से हर किसी को सुख मिलता है। कठोर बातों का त्याग एक तरह से वशीकरण मंत्र है।

*—तुलसीदास*

- उपयुक्त स्थान पर बना हुआ आवास, निस्तब्ध मन, पुण्यात्माओं का संसर्ग, शासन में सुव्यवस्था, कार्य में कुशलता ही श्रेष्ठ मानी जाती है।

*—लाओत्से*

- जो बांटते हैं उनकी मिठास सराही जाती है। जो समेटते हैं वे बड़े होने पर भी भर्त्सना सहते हैं।

*—पं. श्रीराम शर्मा आचार्य*

- पांव में एक कांटा गड़ जाए तो उसे दूसरे कांटे से निकालना होता है। किंतु कांटे के निकल जाने पर तो दोनों कांटों को फेंक ही देना चाहिए।
  *—रामधारी सिंह दिनकर*

- हानिकारक वस्तुओं को नहीं रहने देना चाहिए, चाहे उनसे तत्काल कोई नुकसान न भी होता हो।
  *—मैक्सिम गोर्की*

- अपनी मान्यताओं को सर्वश्रेष्ठ मानकर किसी की निंदा और आलोचना नहीं करनी चाहिए।
  *—अज्ञात*

- हर किसी की निंदा भले ही सुन लो, पर अपना फैसला गुप्त रखो।
  *—अज्ञात*

- जो वर्तमान की उपेक्षा करता है वह अपना सब कुछ खो देता है।
  *—अज्ञात*

- स्वार्थ का अंत होते ही, क्लेश का भी अंत समीप होता है।
  *—अज्ञात*

- इस संसार में कमजोर रहना सबसे बड़ा अपराध है।
  *—अज्ञात*

- आत्मगौरव के साथ जीने में ही जिंदगी का सच्चा आनंद है।
  *—अज्ञात*

- चालक, सेवक और अगुआ को गलती करने की कोई गुंजाइश नहीं होती।
  *—अज्ञात*

- समझौते की आवश्यक शर्त यह है कि उसमें कुछ भी अपमानजनक न हो।
  *—महात्मा गांधी*

- हम खतरों से इतना भी न डरें कि डरपोक दिखने लगें, पर अकारण खतरा मोल लेने की मूर्खता भी न करें।

*—मार्कस खिसेरो*

- अगर आप खुद को भेड़ बना लेंगे तो भेड़िये आकर खा ही जाएंगे।

*—जर्मन कहावत*

- चतुराई दरबारियों के लिए गुण है, पर साधुओं के लिए तो दोष है।

*—शेख सादी*

- भले और सज्जन लोगों का चुप बैठना बुराई की जीत का रास्ता खोलता है।

*—एडमंड बर्क*

- छोटे बनकर रहना उसी तरह अच्छा है जैसे दूब रहती है। जब और सब घास-पात जल जाते हैं, तब भी दूब ज्यों की त्यों बनी रहती है।

*—गुरु नानक देव*

- बिना उसूल गठबंधन सिर्फ पुरानी गंदगी को ही घुमाता है और नई योग्यता को उभरने नहीं देता।

*—शिव खेड़ा*

- किसी भी सौदेबाजी के लिए हाथ मिलाना ज़रूरी है।

*—शेक्सपीयर*

- समुद्र के सौंदर्य की प्रशंसा कीजिए, लेकिन उससे सुरक्षित दूरी भी बनाए रखिए।

*—हरबर्ट्स*

- खुशी अक्सर उस दरवाजे से आती है जो हम अनजाने में खुला छोड़ देते हैं।

*—जॉन बैरीमोर*

- जब तक आप रुकते हैं तब तक इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप धीरे चल रहे हैं।

*—कन्फ्यूशियस*

- हमें रक्षा सिर्फ उसकी नहीं करनी जो विरासत में मिला है, बल्कि उसकी भी करनी है जो हम अपने बच्चों के लिए छोड़कर जा रहे हैं।

*—शिव खेड़ा*

- आंधियां और समुद्री लहरें भी सबसे योग्य नाविकों का ही साथ देती हैं।

*—गिबन*

- जो अपना अदब नहीं करते, उनका सब अदब करेंगे ही।

*—बी कंसफील्ड*

- उस देश की हानि निश्चित है, जहां इंसाफ और उसूलों से ज्यादा जनमत एहतियात रखता है।

*—शिव खेड़ा*

- केवल मूर्ख और मृतक ही अपने विचारों को कभी नहीं बदलते।

*—लावेल*

- वैभव बढ़ाने में हर्ज नहीं, पर देखना है कि वह किस काम आया।

*—अज्ञात*

- ईर्ष्या मनुष्य को उसी प्रकार खा जाती है जिस प्रकार कपड़े को कीड़ा।

*—अज्ञात*

- जो अपने प्रति जितना कठोर होता है, वह उतना ही अच्छा साधक बन जाता है।

*—अज्ञात*

- अपनी ही नजर में जो गिर गया, सैकड़ों के उठाए नहीं उठ सकता।

*—अज्ञात*

- भावनाओं को पवित्र बनाने के लिए नशेबाजी को छोड़ना आवश्यक है।

*—अज्ञात*

- अपनी मान्यताओं को सर्वश्रेष्ठ मानकर दूसरों की आलोचना नहीं करनी चाहिए।

*—अज्ञात*

- भोगने से भोग की इच्छा शांत नहीं, प्रज्वलित ही होती है।

*—अज्ञात*

- अपनी बुराई अपने इसी जीवन में मरने दो।

*—अज्ञात*

- जो तुम दूसरों से चाहते हो, उसे पहले स्वयं करो।

*—अज्ञात*

- सिंह नीति से नहीं सीखता, वह केवल बल से ही जीवों का नाश करता है। परंतु शिक्षित, धीर पुरुष अपनी नीति से सैकड़ों सिंहों को मार देता है।

*—अज्ञात*

- मूर्खों से प्रशंसा के गीत सुनने की बजाय बुद्धिमान की फटकार सुनना कहीं अच्छा है।

*—इंजील*

- अमर होने के लिए जरूरी है कि पहले आप अपने तरीके से जीवित रहना सीखें।

*—कन्फ्यूशियस*

- महान पुरुष वही है जो न किसी का शासन मानता है और न किसी पर शासन करता है।

*—खलील जिब्रान*

- मुझे कभी इसका दुःख नहीं हुआ कि मैं मौन क्यों रहा, लेकिन इसका खेद कई बार हुआ कि मैं बोल क्यों पड़ा।

*—पाइथागोरस*

- मनुष्य जन्म से न तो मस्तक पर तिलक लगाकर आता है, न यज्ञोपवीत, जो सत्कर्म करता है वह द्विज और जो कुकर्म करता है वह नीच।

*—भगवान बुद्ध*

- नीति, विवेक और चातुर्य हमारे जीवन के अभिन्न अंग होने चाहिए।

*—लिंकन*

- अहंकार ही अनीति है व विश्व-व्यापकता ही नीति है।

*—स्वामी विवेकानंद*

## नैतिकता

- यह भ्रम है कि अपनी उन्नति दूसरों को दबाने से की जा सकती है।

*—राजेश मेहता*

- जहां पवित्रता है, वहीं निर्भयता हो सकती है।

*—महात्मा गांधी*

- जिस प्रकार मधु में फंस जाने पर मक्खी अपनी टांगें धीरे-धीरे परंतु दृढ़तापूर्वक मधु से मुक्त कर लेती है उसी प्रकार व्यक्तियों, नाम-रूपों की आसक्ति का एक-एक कण हमें अपने से दूर करना होगा।

*—स्वामी रामतीर्थ*

- मनुष्य की दुर्भावना उसके शत्रु की अपेक्षा उसे ही अधिक दुःख देती है।

*—चार्ल्स बक्सटन*

- मनुष्य को चाहिए क्रोध को दया से और बुराई को भलाई से जीते।

*—भगवान बुद्ध*

- नीति, विवेक और चातुर्य हमारे जीवन के अभिन्न अंग होने चाहिए।

*—लिंकन*

- दुष्ट को उपकार से नहीं, अपकार से शांत करना चाहिए।

*—कालीदास*

- जिस दुष्ट का अंतःकरण काम-वासना आदि मलों से भरा हुआ है, ऐसा मनुष्य बिल्कुल वैसे ही सैकड़ों बार भी तीर्थ-स्नान करे तो भी वह पवित्र नहीं हो सकता, जिस प्रकार शराब रखने का वर्तन आग पर जलाने से भी शुद्ध नहीं होता है।

*—चाणक्य*

- अपने सिद्धांतों के लिए लड़ना आसान है पर उनका खुद पालन करना कठिन है।

*—अलफ्रेड एडलट*

- नीति कहती है, मित्रता और शत्रुता बराबर वालों के साथ करना चाहिए।

*—वाल्मीकि*

- जिसका मन शुद्ध होता है, वह सभी को शुद्ध समझता है।

*—मां शारदा*

- मन के मद में मतवाला मनुष्य गिरे बिना होश में नहीं आता।

*—भर्तृहरि*

- किसी भी देश के नैतिक मूल्यों पर राजनीति से अधिक एक अच्छी किताब का प्रभाव पड़ता है।

*—ग्लेडस्टोन*

- नैतिकता के बल पर ही मनुष्यों और उनके कर्मों पर अधिकार प्राप्त किया जा सकता है।

*—कार्लाइल*

- सार्वजनिक नैतिकता का तकाजा है कि अपने अधीनस्थ की कठिनाई के समय में हमेशा मदद की जाए। गलती करने पर कभी-कभार, लेकिन अपराध करने पर कभी भी सहायता न की जाए।

*—गोल्डविन स्मिथ*

- व्यक्ति और समाज की प्रतिष्ठा, नैतिक शुद्धता और शिष्टता पर ही आधारित है।

*—अज्ञात*

- फिजूलखर्ची का विष-बीज अनैतिकता, दरिद्रता एवं दुर्व्यसनों के रूप में पनपता है।

*—अज्ञात*

- मानवता को नाक के बल-चलाने के सभी उपलब्ध साधनों में नैतिकता सर्वोत्तम है।

*—नीत्से*

## ❖ शिक्षा/विद्या ❖

- जिस विद्या में शक्ति नहीं, स्वतंत्र रूप से सोचने की बुद्धि नहीं, खतरा उठाने की वृत्ति नहीं, वह विद्या निस्तेज है।

*—विनोबा भावे*

- आज पढ़ना सब जानते हैं, किन्तु पढ़ना क्या है, यह कोई नहीं जानता है।

*—जार्ज बर्नार्ड शॉ*

- संसार के सब धर्मग्रंथों को हमें उसी तरह ग्रहण करना चाहिए, जिस भाव से हम रसायन-शास्त्र का अध्ययन करते हैं, जहां हम अपनी प्रत्यक्ष अनुभूति को ही अंतिम प्रमाण मानते हैं।

*—स्वामी रामतीर्थ*

- शिक्षा का सही नियम या तरीका यह है कि सर्वोत्तम पात्र के प्रति सर्वाधिक परिश्रम करो। खराब जमीन पर कभी श्रम न गंवाओ, परंतु अच्छी या अच्छी होने की क्षमता रखने वाली भूमि पर कोई कसर न रखो।

*—रस्किन*

- शिक्षा ही हमारी एकमात्र सुरक्षा है। शिक्षारूपी नौका के बाहर तो बाढ़ ही बाढ़ है।

*—एच. मान*

- हमारे जीवन का प्रत्येक अगला दिन पिछले दिन की अपेक्षा कुछ इस ढंग का हो, जिसमें हमने सीखा हो।

*—रवींद्रनाथ ठाकुर*

- शिक्षित मूर्ख, अशिक्षित की अपेक्षा अधिक मूर्ख होता है।

*—मोलियर*

- अक्षर पोथी में पढ़ो, अर्थ जीवन में खोजो।

*—विनोबा भावे*

- अच्छी पुस्तकें के पास होने से हमें मित्रों के साथ न रहने की कमी नहीं खलती है।

*—महात्मा गांधी*

- पुस्तकें वे प्रकाश-स्तंभ हैं जो समय के विशाल समुद्र में खड़े किए गए हैं।

*—विपिनचंद्र पाल*

- ठोकर लगे और दर्द उठे, तभी मैं सीख पाता हूं।

*—महात्मा गांधी*

- पुस्तक विचारों के युद्ध में अस्त्र का काम करती है।

*—बर्नार्ड शॉ*

- माता के समान शरीर का पोषक नहीं, चिंता के समान शरीर का शोषक नहीं, पत्नी के समान शरीर की तोषक नहीं, तथा विद्या के समान शरीर का आभूषण नहीं।

*—अज्ञात*

- संसार में जितने प्रकार की प्रप्तियां हैं, उनमें शिक्षा सबसे बढ़कर है।

*—निराला*

- अध्ययन आनंद, अलंकरण और योग्यता का काम करता है।

*—बेकन*

- सुनना सीखो। तुम्हें उन लोगों से भी लाभ होगा, जो ठीक से बात करना नहीं जानते।

*—प्लूटार्क*

- जिन्होंने विद्या नहीं प्राप्त की, वे अंधे हैं।

*—महात्मा गांधी*

- सबसे बड़ा धन विद्या है, जिसे न कोई छीन सकता है और न ही चुरा सकता है।

*—विनोबा भावे*

- शिक्षक उस मोमबत्ती के समान है जो खुद को जलाकर दूसरों को उजाला देता है।

*—ईश्वरचंद्र विद्यासागर*

- धन खर्च करने से घटता है; विद्या खर्च करने से बढ़ती है।

*—अज्ञात*

- विद्वत्ता से मनुष्य अपना योग्य साथी बन जाता है।

*—यंग*

- शिक्षा जीवन की विभिन्न परिस्थितियों को निभाने की योग्यता है।

*—जान हिवन*

- शिक्षा मनुष्य की आत्मा के लिए उसी तरह है जिस प्रकार संगमरमर के लिए शिल्प-कला।

*—एडीसन*

- यदि मनुष्य सीखना चाहे तो उसकी प्रत्येक भूल कुछ न कुछ शिक्षा दे सकती हैं।

*—चार्ल्स डिकेंस*

- जीवन का रहस्य विलास-भोग में नहीं बल्कि अनुभव के द्वारा शिक्षा-प्राप्ति में है।

*—स्वामी विवेकानंद*

- शिक्षा में किसी प्रकार की भी संकीर्णता शिक्षा के वास्तविक लक्ष्य का नाश कर देती है।

*—गणेशशंकर विद्यार्थी*

- जो शिक्षा हमें प्राचीन संस्थाओं तथा प्राचीन विचारों में ही फांसे रखे, वह शिक्षा अर्वाचीन समय में शिक्षा कहलाने योग्य नहीं।

*—गणेशशंकर विद्यार्थी*

- अविद्या नश्वर फल उत्पन्न करती है जो क्षणिक होते हैं, मानो वे प्रातः-काल उत्पन्न होते हैं और सायंकाल नष्ट हो जाते हैं।

*—आदि शंकराचार्य*

- विद्वत्ता अच्छे दिनों में आभूषण है, विपत्ति में सहायक एवं बुढ़ापे में संचित सामग्री है।

*—अरस्तू*

- संत सौ युगों का शिक्षक होता है।

*—एमर्सन*

- पानी से न डरना एक बात है और बिना तैरना जाने अथाह समुद्र में कूद पड़ना दूसरी बात है। दूसरी दशा में आदमी मूर्ख ही कहा जाएगा।

*—सर्वदानंद*

- चींटी से अच्छा कोई उपदेश नहीं दे सकता और वह मौन रहती है।

*—फ्रेंकलिन*

- मनुष्य को चाहिए कि यदि दीवार पर भी उपदेश लिखा हुआ मिले तो उसे अवश्य ग्रहण करे।

*—शेख सादी*

- सच्ची विद्या उस समय आरंभ होती है जब मनुष्य सब बाहरी सहारों को छोड़कर अपनी भीतरी अनंतता की ओर ध्यान देता है।

*—स्वामी रामतीर्थ*

- पुस्तकों का संकलन ही आज के युग का वास्तविक विद्यालय है।

*—कार्लाइल*

- विद्या पुस्तक से नहीं मिलती, वरन् जीवन-रूपी पुस्तक के अध्ययन से मिलती है, अनुभव से प्राप्त होती है।

*—लालजी राम*

- जो सीखता है मगर विद्या का उपयोग नहीं करता, वह किताबों से लदा भारवाहक पशु है।

*—शेख सादी*

- शिक्षा ईंट और चूने से बने मकान की भांति नहीं है, जिसका नक्शा मिस्त्री पहले से ही तैयार रखता है। शिक्षा वृक्ष की भांति है जो अपने जीवन की लय के साथ ताल मिलाकर उसके अनुरूप विकसित होता है।

  *—रवींद्रनाथ ठाकुर*

- क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, इसका ज्ञान ही सही शिक्षा है, विद्या है।

  *—अज्ञात*

- जिसने स्वयं को समझ लिया, वह दूसरों को समझाने नहीं जाएगा।

  *—अज्ञात*

- मूर्ख अपने घर में पूजा जाता है, मुखिया अपने गांव में पूजा जाता है, परंतु विद्वान सर्वत्र पूजा जाता है।

  *—चाणक्य*

- मूल्यहीन शिक्षा समाज में इंसान को जानवर से बदतर बना देती है।

  *—शिव खेड़ा*

- जो बच्चों को सिखाते हैं, उस पर बड़े यदि स्वयं अमल करें तो संसार स्वर्ग बन जाए।

  *—अज्ञात*

- विद्या शील के अभाव में शोचनीय हो जाती है और द्वेष से अपवित्र हो जाती है।

  *—अज्ञात*

- जीवनोद्धार के उपायों में स्वाध्याय का उपाय सबसे श्रेष्ठ, सरल, सुलभ और सुगम है।

  *—अज्ञात*

- अविवेकपूर्ण अध्ययन से बुद्धि को कोई आहार नहीं मिलता है।

  *—अज्ञात*

- बच्चों को पहला पाठ आज्ञा-पालन का सिखाना चाहिए।

*—अज्ञात*

- दूसरे के दुर्भाग्य से बुद्धिमान व्यक्ति यह शिक्षा ग्रहण करते हैं कि उन्हें किस बात से बचना चाहिए।

*—साइरस*

- कर्महीन मनुष्य शिक्षा के दान का अधिकारी नहीं हो सकता।

*—विनोबा भावे*

## ❖ स्वाधीनता (स्वतंत्रता/आजादी)/देशभक्ति ❖

- जब हम अपने जीवित रहने के अधिकार का पूरा मूल्य चुका देते हैं तभी आजादी पाते हैं।

*—रवींद्रनाथ ठाकुर*

- जब तक एक भी व्यक्ति आजादी से वंचित है तब तक कोई भी देश स्वतंत्र नहीं है।

*—जवाहरलाल नेहरू*

- कितनी ही राजनीतिक स्वतंत्रता हो, वह भूखी जनता की संतुष्ट नहीं कर सकती।

*—लेनिन*

- स्वतंत्रता का मूल्य निरंतर सावधानी है।

*—जे.पी. कुरन*

- स्वाधीनता विकास का प्रथम चरण है।

*—स्वामी विवेकानंद*

- स्वतंत्रता की तड़प आत्मा का संगीत है।

*—सुभाषचंद्र बोस*

- देश के लिए जरूरत है ऐसे निःस्वार्थ सेवकों की, जिन्हें न तो धन से खरीदा जा सके और न जिन्हें ताकत ही झुका सके।

  *—लाला लाजपतराय*

- किसी से मेहरबानी मांगना अपनी आजादी बेचना है।

  *—महात्मा गांधी*

- यदि किसी देशभक्त में मानवीयता कम है तो समझना चाहिए कि उसकी देशभक्ति में भी उस हद तक कमी है।

  *—प्लूटो*

- मनुष्य स्वतंत्रता से सुख को प्राप्त करता है। स्वतंत्रता से परम तत्त्व को प्राप्त करता है। स्वतंत्रता से ही शक्ति को प्राप्त करता है तथा स्वतंत्रता ही उसे परम पद दिलाती है।

  *—अष्टावक्र गीता*

- देशभक्त जननी का सच्चा पुत्र है।

  *—जयशंकर प्रसाद*

- संसार में सज्जन मनुष्य ही स्वतंत्र होते हैं। नीच मनुष्य दास होते हैं।

  *—प्लूटार्क*

- देशहित के समक्ष मातृस्नेह की भी परवाह न करने वाली माताओं से देश का नाम उज्ज्वल होता है।

  *—मुंशी प्रेमचंद*

- लोकतंत्र बंदर के पिंजड़े से सरकस चलाने की कला और विज्ञान है।

  *—एच.एल. मेकेन*

- अपने देश की अच्छे तरीके से सेवा करने वाला अपनी पार्टी की श्रेष्ठ सेवा करता है।

  *—रदरफोर्ड हेज*

- अवसरवादी कहते हैं–हमसे जो थोड़ा बन पाएगा हम करेंगे; जिम्मेदार नागरिक कहते हैं–देश को जो भी चाहिए वह करेंगे।

*–शिव खेड़ा*

- आजादी का अर्थ स्वैच्छिक संयम, अनुशासन और कानून के शासन को स्वेच्छा से स्वीकार करना है।

*–महात्मा गांधी*

- गुलामी मानव-समाज के सभी बुनियादी नियमों के खिलाफ है।

*–मांटेस्क्यू*

- जो अस्थायी सुरक्षा को खरीदने के लिए आजादी छोड़ देते हैं, वे आजादी और सुरक्षा दोनों के ही योग्य नहीं हैं।

*–शिव खेड़ा*

- अधिकतर कानून किसी बुराई के समान हैं क्योंकि ये मनुष्य की आजादी में बाधा डालते हैं।

*–जैरेमी बेंथम*

- आजादी के दुश्मन तर्क नहीं करते हैं, वे शोर मचाते हैं और गोलियां चलाते हैं।

*–डीन इंगे*

- आप दूसरे लोगों की आजादी की रक्षा करके ही अपनी आजादी सुरक्षित रख सकते हैं।

*–क्लेरेंस डैरों*

- दुःखद है कि अच्छे राष्ट्रभक्त को बाकी मानवजाति का दुश्मन मान लिया जाता है।

*–वाल्टेयर*

# सफलता-असफलता

- स्वावलंबन सफलता की पहली सीढ़ी है।

*—महात्मा गांधी*

- अनवरत असफलता के सिवा इस दुनिया में सब चीज सहन की जा सकती है।

*—गेटे*

- जहां बुद्धि शासन करती है, वहां सफलता समीप है।

*—टॉमसन*

- सफलता तो तभी मिलती है जब आप अपनी कल्पना के ढांचे में कर्म का रंग भी भरें।

*—स्वेट मार्डेन*

- मनुष्य का जन्म जीवन-संघर्ष में सफलता के लिए हुआ है, विफल होने के लिए नहीं।

*—हेनरी डेविड थोरियू*

- सफल मनुष्य वह है जो दूसरे लोगों द्वारा अपने पर फेंकी गई ईंटों से एक मजबूत नींव डाल सकता है।

*—इरविंग स्टोन*

- सफलता का यदि कोई रहस्य है तो वह दूसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण को समझने तथा उसके एवं अपने दृष्टिकोण से वस्तुओं को देखने में छिपा है।

*—हेनरी फोर्ड*

- सच्चा प्रयास कभी निष्फल नहीं होता।

*—विलसन*

- असफलता गिरने में नहीं, असफलता गिरकर हार मान लेने में है।

*—स्वेट मार्डेन*

- बहुत से व्यक्ति यदि महान् आकाक्षाओं से आक्रांत न होते, तो छोटी बातों में अवश्य सफल हो जाते।

*—लांगफेलो*

- अपने काम को चांद, तारों और सूरज के काम की तरह निःस्वार्थ बना दो, तभी सफलता मिलेगी।

*—स्वामी रामतीर्थ*

- महान् लक्ष्य के लिए प्रयास करने में ही आनंद है। अच्छे प्रयास में सफलता का भाव है।

*—जवाहरलाल नेहरू*

- सफलता अपने हाथों में नहीं, किंतु मेहनत अपने हाथों में है!

*—अज्ञात*

- लक्ष्य के प्रति एक निष्ठा, तन्मयता और एकाग्रता ही सफलता की कुंजी है।

*—अज्ञात*

- सफलता अदम्य उत्साह और सतत प्रयत्न की भगिनी है।

*—अज्ञात*

- विजय और सफलता से क्षणों में संयम रखकर ही महान लक्ष्य हासिल किए जा सकते हैं।

*—बिस्मार्क*

- सफलता उनके द्वारा पाई व सुरक्षित रखी जाती है, जिनके चिंतन की दिशाधारा विधेयात्मक है।

*—अज्ञात*

- कुछ सफलताएं पिछली असफलताओं की कमी को पूरा कर देती हैं।
*—राबर्ट ब्राउनिंग*

- यदि आप परिश्रम से घबराएंगे तो समझिए सफलता आपसे दूर चली गई हैं।
*—स्वेट मार्डेन*

- ईमानदारी से किया गया परिश्रम सफलता को और समीप ला देता है।
*—अज्ञात*

- संकल्प और सफलता एक-दूसरे के पूरक हैं।
*—स्वेट मार्डेन*

## व्यवहार/संस्कार/संस्कृति

- माता एक भाई पैदा करती है, वाणी दूसरा उत्पन्न करती है, वाणी से उत्पन्न भाई सहोदर से भी उत्तम एवं हितैषी होता है।
*—हितोपदेश*

- विनय व्यवहार में व्यक्त होने वाली शिष्टता है।
*—कालीदास*

- अच्छे संस्कार खरीदे नहीं जाते हैं और न ही रास्ते में पड़े हुए मिलते हैं।
*—अज्ञात*

- मनुष्य को अत्यंत सरल और सीधे स्वभाव का भी नहीं होना चाहिए। इससे सब लोग उसे दुर्बल मानने लगते हैं और हर समय उसे कष्ट देने का प्रयत्न करते हैं—जंगल में सीधे पेड़ काट दिए जाते हैं जबकि टेढ़े-मेढ़े वृक्षों को कोई हाथ भी नहीं लगाता!
*—चाणक्य*

- हमारे स्वभाव का प्रभाव हमारे परिवार के दूसरे सदस्यों की उन्नति या अवनति पर भी पड़ता है।

*—स्वेट मार्डेन*

- व्यक्ति का अंतःकरण ईश्वर की वाणी है।

*—बायरन*

- एक-दूसरे का सम्मान और शिष्टाचार ही संस्कृति की आधारशिला है।

*—महात्मा गांधी*

- व्यवहार के दर्पण में प्रत्येक वस्तु का प्रतिबिंब देखा जा सकता है।

*—गेटे*

- हरेक संस्था को सिद्धांतवादियों की आवश्यकता होती है, वरना उसमें जीवन और दृढ़ता नहीं आ सकेगी। परंपराओं के बिना आपका व्यक्तित्व नष्ट हो जाता है।

*—प्रेमचंद*

- परोपकार के लिए मरने का सौभाग्य तो संस्कार वालों को ही प्राप्त होता है।

*—प्रेमचंद*

- मनुष्य की बुद्धि और विनाश उसके अपने व्यवहार पर निर्भर करता है।

*—चाणक्य*

- स्वभाव ही मनुष्य के जीवन का स्वर्ग या नरक निर्धारित करता है।

*—स्वेट मार्डेन*

- उपलब्धि के लिए सुविधाओं और योग्यता के अलावा एक और चीज की भी जरूरत होती है जिस का नाम है—रवैया। अगर आपका रवैया सही होगा तभी आप अपनी योग्यता का अधिकतम उपयोग कर पाएंगे और आपको उसके अच्छे परिणाम अपने-आप मिलेंगे।

*—प्रोफेसर अर्विन एच. रोल*

- जो व्यक्ति दूसरों के गुप्त भेद तुम्हारे सामने प्रकट करे, उसे अपने गुप्त भेदों से अवगत न होने दो, क्योंकि जो व्यवहार वह दूसरों के साथ कर रहा है वही तुम्हारे साथ करेगा।

*—हजरत अली*

## नारी

- जहां नारियों की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं।

*—मनुस्मृति*

- सभी महान कार्यों के आरंभ में औरत का हाथ रहा है।

*—लामार्टिन*

- स्त्रियों के हक पवित्र हैं। उन्हें दिए गए अधिकार अबाधित रहें, इस बात की सावधानी रखो।

*—हजरत मोहम्मद*

- आभूषणों से स्त्रियां नहीं सजतीं, वे सजती हैं अपने सत्य से, अपने रूप से और अपने स्वभाव की पवित्रता से।

*—जयशंकर प्रसाद*

- यदि पुरुष के जीवन-विकास में स्त्री का आकर्षण विनाशकारी होता तो प्रकृति यह आकर्षण पैदा ही क्यों करती?

*—यशपाल*

- नारी के बिना पुरुष की बाल्यावस्था असहाय है, युवावस्था आनंदरहित हैं और वृद्धावस्था सांत्वना-शून्य है।

*—भगवतीचरण वर्मा*

- लज्जा और विनय ही भारत की देवियों का आभूषण है।

*—प्रेमचंद*

- पुरुष में नारी के गुण आ जाते हैं तो वह महात्मा बन जाता है। नारी में पुरुष के गुण आ जाते हैं तो वह कुलटा हो जाती है।

*—प्रेमचंद*

- पुरुषों की शिक्षा स्त्रियों को देना हानिकारक है। शारीरिक व मानसिक दोनों तलों पर, दोनों की प्रकृति भिन्न है। दोनों के लिए एक ही पाठ्यक्रम देना नारीत्व की हत्या करना है। इससे वह पुरुष तो नहीं बन सकीं किंतु नकली पुरुष बनकर रह गईं।

*—आचार्य रजनीश*

- केवल सेवा के कारण ही नारी को स्वर्ग में भी महती प्रतिष्ठा मिलती है।

*—मनुस्मृति*

- स्त्री का प्रेम पुरुष को कार्य में असफल, व्यवहार में झूठा, अनुत्तरदायी और जीवन में आवारा बना देता है।

*—यशपाल*

- एक आदर्श जननी सौ गुरुओं से भी श्रेष्ठ है।

*—जाज हर्बर्ट*

- एक स्त्री का शासन ही पुरुष के लिए कठिन काम है।

*—वृंदावनलाल वर्मा*

- मानव सभ्यता पर महान महिलाओं के प्रभाव की छाप महसूस की जा सकती है।

*—इमर्सन*

- महिलाओं के साथ भेदभाव करने के लिए पुरुषों को भारी कीमत चुकानी पड़ेगी।

*—महात्मा गांधी*

## ❖ क्षमा ❖

- यदि कोई दुर्बल मनुष्य तुम्हारा अपमान करे तो उसे क्षमा कर दो, क्योंकि क्षमा करना तो वीरों का काम है, परंतु यदि अपमान करने वाला बलवान है तो उसे अवश्य दंड दो।

*—गुरु गोविंद सिंह*

- दुष्टों का बल हिंसा है। राजाओं का बल दंड का अधिकार है। सज्जनों व गुणवानों का बल क्षमा है।

*—महात्मा विदुर*

- व्यक्ति दंड द्वारा उतना नहीं सुधारता, जितना प्रेम और क्षमा द्वारा।

*—अज्ञात*

## ❖ धन ❖

- धन या तो स्वामी की सेवा करता है या उस पर शासन।

*—होरेस*

- धनवान कौन है? जिसे संतोष है।

*—शेख सादी*

- धर्म खुद बहुत शक्तिशाली है, पर धन के बिना धार्मिक अनुष्ठान भी नहीं किए जा सकते। इसलिए कहा जाता है कि धन से धर्म की रक्षा होती है।

*—चाणक्य*

- जहां धन ही परमेश्वर है वहां सच्चे परमेश्वर को कोई नहीं पूजता।

*—स्वामी रामतीर्थ*

- धनहीन होने और दरिद्र होने में अंतर है। धनहीन व्यक्ति श्रीमान हो सकता है और धनवान दरिद्र। क्योंकि दरिद्र तो वह है जिसकी तृष्णा विशाल है, और जिसकी भूख शांत नहीं होती।

*—आदि शंकराचार्य*

- अधिक धनी होने पर भी जो असंतुष्ट रहता है, वह सदा निर्धन है। धन से रहित होने पर भी जो संतुष्ट है, वह सदा धनी है।

*—अश्वघोष*

- धन-संग्रह की अपेक्षा तपस्या का संग्रह श्रेष्ठ है।

*—वेदव्यास*

- प्रसन्नता में योगदान देने वाली वस्तुओं में स्वास्थ्य से बढ़कर और धन से घटकर कुछ नहीं।

*—शॉपेन हावर*

- धन की जीवन में जरूरत है—जैसे पित्त की स्वास्थ्य के लिए, पर धन के प्रभाव में मदहोश नहीं होना चाहिए।

*—साईं बाबा*

- दुनिया में धन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण चीज है। यह सेहत, ताकत, सम्मान, उदारता और सौंदर्य का प्रतिनिधित्व करता है।

*—बर्नार्ड शॉ*

- कुछ जीव हैं जिनसे सावधान रहना चाहिए। वे हैं—धनवान आदमी, कुत्ता, सांड और शराबी।

*—रामकृष्ण परमहंस*

- धन का देना मित्रता का कारण होता है, परंतु वापस लेना शत्रुता का।

*—शुक्राचार्य*

- धन तभी धन है जब वह किसी उद्योग उपयोग में लगा रहे, अन्यथा उसमें और कूड़े-करकट में क्या अंतर?

*—पं. श्रीराम शर्मा आचार्य*

- धन जैसे ही अपनी सीमा लांघता है, कुरूप दिखने लगता है।

*—अज्ञात*

- पैसा बचाने और खर्च करने वाला व्यक्ति सबसे सुखी है, क्योंकि वह दोनों तरह के आनंद ले सकता है।

*—सैमुअल जॉनसन*

- अगर आगे-आगे धन हो तो सब रास्ते आसानी से खुलते जाते हैं।

*—शेक्सपीयर*

- संपत्ति को अपने अधिकार में रखो, स्वयं संपत्ति के अधिकार में मत हो जाओ।

*—अज्ञात*

- तलवार की कीमत म्यान से नहीं, बल्कि धार से मापी जाती है; इसी प्रकार मानव की कीमत धन से नहीं, सदाचार से आंकी जाती है।

*—पं. श्रीराम शर्मा आचार्य*

- धन हाथ या पैर के समान है। उसका उपयोग कीजिए, अन्यथा आप उसे खो देंगे।

*—हेनरी फोर्ड*

## कर्म/कर्मठता/पुरुषार्थ/परिश्रम

- कर्महीन अत्यधिक अध्ययन मनुष्य को मिटा डालता है।

*—बाइबिल*

- मनुष्य का निर्माण भाग्य नहीं, पुरुषार्थ करता है। गौरव परिश्रम का अनुगामी है। काम आत्मा के लिए रसायन का काम करता है। श्रम ही मनुष्य की आत्मा है।

*—स्वामी कृष्णानंद*

- किसी अड़चन से हताश न होकर, आत्मविश्वास न खोकर, अनवरत कार्यरत रहना ही तुम्हारा कर्त्तव्य है, अगर यह किया तो उसके सुंदर फल दिन-दिन बढ़ते हुए परिमाण में तुम्हारी सेवा में हाजिर रहेंगे।

*—स्वामी विवेकानंद*

- अकर्मण्यता से जीवन से यशस्वी जीवन और यशस्वी मृत्यु अधिक अच्छी है।

*—सर सी.वी. रमन*

- इस संसार में वही व्यक्ति सफल होते हैं जो परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना लेते हैं और यदि वे नहीं बना सकते तो अपने अनुकूल परिस्थितियां पैदा कर लेते हैं।

*—बर्नार्ड शॉ*

- अभ्यास की दृष्टि हो तो साधन काम आते हैं। अभ्यास की दृष्टि न रही तो उत्तम साधन भी निकम्मे हो जाते हैं।

*—विनोबा भावे*

- प्रतिज्ञाहीन जीवन बिना नींव का घर है। प्रतिज्ञा के बल पर ही संसार टिका हुआ है। प्रतिज्ञा न लेने का अर्थ अनिश्चित या डांवाडोल रहना है।

*—महात्मा गांधी*

- मनुष्य परिस्थितियों का दास नहीं है, परिस्थितियां मनुष्य की दास हैं।

*—डिजरायली*

- प्रतिभा महान् कार्यों को प्रारंभ करती है, किंतु परिश्रम उसे समाप्त करता है।

*—जोवरी*

- संसार इस बात की चिंता नहीं करता कि हमने यहां रहकर क्या कहा, पर वीरों ने जो काम किए, उसे वह कभी नहीं भूलता।

*—लिंकन*

- शक्ति ही जीवन है, परम सुख है।

*—स्वामी विवेकानंद*

- यदि कष्ट को हँसते-हँसते सहन किया जाए तो वह भी सुखद हो जाता है, पर यह तभी हो सकता है जब कर्म को महान् बना दिया जाए।

*—अरस्तू*

- आलस्य का एकमात्र इलाज काम करना है, स्वार्थ-भावना का इलाज है त्याग, अविश्वास का इलाज है दृढ़ विश्वास, कायरता का इलाज है जोखिम-भरे काम का बीड़ा उठाना और तन-मन-धन से उसमें जुट जाना।

*—रदरफोर्ड*

- लक्ष्य ही कर्म-शक्ति है।

*—स्वामी विवेकानंद*

- जो महान् उद्देश्य के लिए मरते हैं, उनकी हार नहीं होती है।

*—बायरन*

- परिश्रम सभी पर विजयी होता है।

*—होमर*

- यदि आप परिश्रम से घबराएंगे तो समझिए सफलता आपसे दूर चली गई हैं।

*—स्वेट मार्डेन*

- पुरुषार्थ किए बगैर भाग्य का निर्माण नहीं हो सकता।

*—वाल्मीकि*

- संसार में जितने भी बड़े काम हुए हैं, उन सबको कराने वाली महत्त्वाकांक्षा ही है।

*—अज्ञात*

- सही और गलत का निर्णय लेना आवश्यक है, इसलिए कि आप वही बन सकते हैं जो आप जानते हैं और इसका कर्म के सिद्धांत के साथ घनिष्ठ संबंध है।

*—चाणक्य*

- व्यक्ति के कर्म ही उसके व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं।

*—विनोबा भावे*

- ईमानदारी से किया गया परिश्रम सफलता को और समीप ला देता है।

*—अज्ञात*

- हम जिस वस्तु की मूलतः कामना करते हैं, उसी से कर्म की उत्पत्ति होती है।

*—अज्ञात*

- प्राणियों के सारे कर्म दस बुराइयों से दूषित हो जाते हैं और यदि इन दस बुराइयों से दूर रहा जाए, तो वे अच्छे बन जाते हैं। इसमें तीन बुराइयां शरीर की हैं, चार जीभ की और तीन मन की।

*—भगवान बुद्ध*

- कर्म की सार्थकता फल में नहीं, कर्मठता में हैं, उस पुरुषार्थ में है, जो एक-एक कदम की गति, एक-एक कदम की चढ़ाई का आनंद लेता है। वास्तव में चढ़ाई के प्रयत्न का सुख अपने-आपमें इतना मीठा है कि उसकी तृप्ति की कोई सीमा नहीं।

*—जवाहरलाल नेहरू*

- मेरे दाहिने हाथ में कर्म है, बाएं हाथ में जय है।

*—अथर्ववेद*

- परिश्रम ऋण को चुकाता है, आलस्य उसे बढ़ाता है।

*—स्वामी विवेकानंद*

- कर्म ही कामधेनु है।

*—महात्मा गांधी*

- देह जल से पवित्र होती है मन सत्य से, आत्मा धर्म से और बुद्धि मन से पवित्र होती है।

*—मनुस्मृति*

- परस्पर विरोधी बातों के बीच एकता कराने से अधिक कठिन काम कोई और नहीं है।

*—ओवेन डिक्सन*

- अन्याय को मिटाओ, लेकिन अपने-आपको मिटाकर नहीं।

*—प्रेमचंद*

- कर्म ही मानव जीवन को पवित्र, अहिंसक और पूर्ण बनाता है।

*—विनोबा भावे*

- चूंकि अपने कर्मों के फल से बचना असंभव है, इसलिए हम सत्कर्म करें।

*—भगवान बुद्ध*

- संपूर्ण सद्कर्मो का मूल सत्य है।

*—जवाहरलाल नेहरू*

- जीवन में विजय प्राप्त करना जरूरी नहीं है, बल्कि ठीक से लड़ना आवश्यक है।

*—पियरे डि काउबर्टिन*

- कर्म करना बहुत अच्छा है, पर वह विचारों से आता है, इसलिए अपने मस्तिष्क को उच्च विचारों और उच्चतम आदर्शों से भर लो, उन्हें रात दिन अपने सामने रखो, उन्हीं में से महान् कार्यों का जन्म होगा।

*—महर्षि अरविंद*

- जो अपने परिश्रम से जीविका चलाता है तथा अन्यों का पोषण करता है, वही पथ-पदर्शन कर सकता है।

*—गुरु नानक देव*

- अच्छा कर्म बुरे को काटता नहीं। दोनों का फल भोगना ही पड़ेगा।

*—रजनीश*

- कर्महीन मनुष्य शिक्षा के दान का अधिकारी नहीं हो सकता।

*—विनोबा भावे*

- पत्थर आखिरी चोट से टूटता है, पर पहले की चोट बेकार नहीं जाती।

*—विनोबा भावे*

- केवल वही व्यक्ति बेकार नहीं है जो बैठा रहता है, बल्कि वह भी बेकार माना जाएगा जिसकी योग्यता का पूर्ण लाभ नहीं लिया जाता।

*—सुकरात*

- ईश्वर उसी के निर्वाह की चिंता करता है जो अपनी शक्ति-भर पूरा श्रम करता है और श्रम करने में प्रतिष्ठा समझता है।

*—कृष्णदत्त*

- समुद्र में एक बार डुबकी लगाने से अगर रत्न न पाओ तो समुद्र को रत्नहीन मत कहो।

*—रामकृष्ण परमहंस*

- अपने कुकर्मों का फल चखने में कड़वा परंतु परिणाम में मधुर होता है।

*—जयशंकर प्रसाद*

- तुम निरंतर कर्म करते रहो, किंतु कर्म में आसक्ति का त्याग कर दो—यही 'कर्म-योग' है।

*—स्वामी विवेकानंद*

- संसार में ऐसा कोई पहाड़, आकाश, समुद्र, स्वर्ग आदि नहीं हैं जहां पर किए हुए कर्मों का फल न मिलता हो।

*—योगबासिष्ठ*

- कर्मयोग के अनुसार बिना फल उत्पन्न किए कोई भी कर्म नष्ट नहीं हो सकता। प्रकृति की कोई भी शक्ति उसे फल उत्पन्न करने से नहीं रोक सकती।

*—स्वामी विवेकानंद*

- अपने ही प्रयत्न के सिवा कभी और कोई हमको सिद्धि देने वाला नहीं है, इसलिए कुछ प्राप्त करना चाहते हो तो उसके लिए प्रयत्न करो।

*—योगबासिष्ठ*

- कर्म, ज्ञान और शक्ति इन तीनों का जिस जगह सेवन होता है, वही श्रेष्ठ पुरुषार्थ है।

*—महर्षि अरविंद*

- परमात्मा सब प्राणियों को रोटी-पानी देता है, परंतु इनको उनके घरों में नहीं फेंकता है।

*—अज्ञात*

- प्रकृति को अपने विकास में रुकना नहीं आता, इसलिए अकर्मण्यता पर वह अपना अभिशाप जताती है।

*—गेटे*

- श्रम मानव जीवन के लिए अनिवार्य है और यही मानव-कल्याण का मूल स्रोत है।

*—टालस्टाय*

- प्रयत्न देव है व भाग्य देवता है। इसलिए प्रयत्न देव की उपासना करना ही श्रेयस्कर है।

*—समर्थ रामदास*

- कर्म सदैव भले ही सुख न ला सके, पर कर्म के बिना सुख नहीं मिलता।

*—डिजरायली*

- कर्म ही पुरुष है और पुरुष ही कर्म है। ये दोनों इस प्रकार अभिन्न हैं जैसे बर्फ और उसकी शीतलता।

*योगबासिष्ठ*

- जिस व्यक्ति ने कल्पना के महल नहीं बनाए, उसे वास्तविक महल की उपलब्धि कभी नहीं हो सकती।

*—निवेदिता*

- समय और सागर की लहरें किसी की प्रतीक्षा नहीं करतीं।

*—रिचर्ड ब्रैथव्हेर*

- कुछ कर्म स्वभाव से ही करने योग्य नहीं होते, उसी प्रकार वे भी करने योग्य नहीं होते, जिनमें किया गया पुरुषार्थ निष्फल हो।

*—महात्मा विदुर*

- अपने लक्ष्य को मत भूलो अन्यथा जो कुछ मिलेगा केवल उसमें संतोष करना पड़ेगा।

*—बर्नार्ड शॉ*

- निराशा हमारी प्रसन्नता, सुख और शांति को ही नष्ट नहीं करती, वह हमारे उन संकल्पों को भी नष्ट कर डालती है जो हमने कुछ सत्कर्मों को करने के लिए किए थे।

*—स्वेट मार्डेन*

- संसार में सबसे बड़ा दिवालिया वह है जिसने अपना उत्साह खो दिया है, चाहे उसका सब कुछ क्यों न चला गया हो। यदि उसने अपना उत्साह बचा लिया है तो वह मुसीबतों का मुकाबला कर फिर से सफलता प्राप्त कर लेगा।

*—एच. डब्ल्यू, अरनॉल्ड*

- संसार के समस्त संबंध तथा पदार्थ क्षणिक हैं, केवल अपना कर्म ही शेष रहता है।

*—धनंजय*

- कार्य को अच्छी तरह करने के लिए उसमें रस लेना चाहिए और कार्य में रस आए इसके लिए कर्म आपकी पसंद का होना चाहिए। जिन लोगों ने राष्ट्र, संस्कृति जैसे निर्माण के बड़े-बड़े कार्य किए हैं वे सभी तत्पर और जागृत कार्यकर्त्ता थे, जय-जयकार के फेर में न पड़कर, अच्छे फल के लिए कोशिश कीजिए।

*—विट्ठलदास मोदी*

- काम ही भावनाओं का आग्रज होता है।

*—डॉ. जॉर्ज डब्ल्यू क्रेन*

- इससे बड़ी कोई घातक भूल नहीं हो सकती कि हम किसी मंजिल को अंतिम लक्ष्य समझें या किसी पड़ाव पर अधिक देर तक ठहरे रहें।

*—महर्षि अरविंद*

- अच्छाई से नजदीकी और बुराई से दूरी बनाकर कर्म करने में ही भलाई है।

*—अज्ञात*

- हमारा मन एक उपजाऊ भूमि है जिसमें जो वस्तु चाहो सीधे रास्ते से पैदा कर सकते हो।

*—अज्ञात*

- कर्महीन मनुष्य शिक्षा का, दान का अधिकारी नहीं हो सकता।

*—अज्ञात*

- अपने पुरुषार्थ से अर्जित ऐश्वर्य का ही दूसरा नाम सौभाग्य है।

*—अज्ञात*

- देश कभी चोर-उच्चकों की करतूतों से बरबाद नहीं होता, बल्कि शरीफ लोगों की कायरता और निकम्मेपन से होता है।

*—शिव खेड़ा*

- अपने अंदर निवास करो, बाहरी घटनाओं से विचलित न हो।

*—अज्ञात*

- जो जान गया है कि उससे भूल हो गई और उसे ठीक नहीं करता वह एक और भूल कर रहा है।

*—कन्फ्यूशियस*

- श्रम और पूंजी एक-दूसरे पर आश्रित हैं। पूंजी श्रम के बिना नहीं पनप सकती और श्रम का पूंजी के अभाव में कोई अस्तित्व नहीं।

*—पोप लियो*

- जिनके पास अपनी शक्ति नहीं, उन्हें भगवान भी शक्ति नहीं देता। शक्ति आत्मा के अंदर से आती है, बाहर से नहीं।

*—सुदर्शन*

- जब मनुष्य का युद्ध अपने-आपसे आरंभ होता है तब उसका कुछ मूल्य होता है।

*—ब्राउनिंग*

- चंद्रमा के लिए छलांग लगाइए, अगर आप चूक भी गए तो सितारों के बीच होंगे।

*—लेस ब्राउन*

- उत्कृष्टता इसी में है कि सामान्य से अलग हटकर कार्य पूर्ण करें। हम न केवल योजना बनाएं और कार्य करें, वरन स्वप्न भी देखें और उन्हें साकार भी करें।

—*अज्ञात*

- जब जीवन का पथ उबड़-खाबड़ हो तब अपने मस्तिष्क को सहज रखें। जैसे कि पहाड़ों से फूटकर पानी निकलता है और एक शांत जलधारा में मिल जाता है।

—*अज्ञात*

- पुरुषार्थी बढ़ते हैं और सिद्धियां पाते हैं। अकर्मण्य पिछड़ते हैं और प्रगति से वंचित रह जाते हैं।

—*अज्ञात*

- अग्नि सोने को परखती है और आपत्ति वीर पुरुषों को।

—*अज्ञात*

- विपदाएं ऐसी परीक्षाएं हैं जो हमें मजबूत बनाने, मनोबल को परखने व जीवट को जांचने के लिए आती है।

—*अज्ञात*

- ईश्वर की पूजा सत्कर्मों के पुष्पों से की जाती है।

—*अज्ञात*

- आपत्तियों की अग्नि हमारी हड्डियों को फौलाद जैसी मजबूत बनाती है।

—*अज्ञात*

- अच्छे से अच्छे के लिए प्रयास करें, बुरी से बुरी परिस्थितियों के लिए तैयार रहें।

—*अज्ञात*

- आत्म-कल्याण के लिए गुण, कर्म और स्वभाव का परिष्कार आवश्यक है।

  *—अज्ञात*

- कुरीति के अधीन रहना कायरता है और उसका विरोध करना पुरुषार्थ।

  *—अज्ञात*

- काम उद्यम से सिद्ध होते हैं, मनोरथ से नहीं।

  *—अज्ञात*

- कार्य को उदारतापूर्वक करना ही उसका इनाम पाना है।

  *—अज्ञात*

- मार्ग उन्हीं का अवरुद्ध रहता है, जो अपने ऊपर भरोसा नहीं करते।

  *—अज्ञात*

- उत्तम कृत्य स्वयं फल है।

  *—अज्ञात*

- जो लोग कभी कोई काम नहीं करते हैं उन्हें कभी भी अवकाश नहीं मिलना चाहिए।

  *—सैमुअल*

- अनंत संभावनाओं के बावजूद पहाड़ के नीचे विश्राम करने की बजाय शिखर तक पहुंचे बगैर चैन से मत बैठो।

  *—मिलर*

- जब तक प्रकाश है आगे बढ़ते रहो, अन्यथा अंधकार हमें घेर लेगा।

  *—बाइबिल*

- संयम और श्रम मानव के दो सर्वोत्तम चिकित्सक हैं।

  *—अज्ञात*

- सबसे अच्छा मनुष्य वह है जो अपनी प्रगति के लिए सबसे अधिक **श्रम** करता है।

*—सुकरात*

- कठिनाइयां और परीक्षा ही मनुष्य का निर्माण करती हैं वे उन्नति की चिह्न हैं। यदि प्रत्येक नवयुवक के पास पर्याप्त हो और वह यह कभी न जान सके कि जीवन की आवश्यकताओं को पूरी न कर सकना कैसा होता **है** तो परीक्षा का समय आने पर वह अपने में कभी अनुभव करेगा।

*—महात्मा गांधी*

- मनुष्य जन्म से न तो मस्तक पर तिलक लगाकर आता है, न **यज्ञोपवीत,** जो सत्कर्म करता है वह द्विज और जो कुकर्म करता है वह नीच।

*—भगवान बुद्ध*

- मनुष्य जन्म से न तो मस्तक पर तिलक लगाकर आता है, न यज्ञोपवीत, जो सत्कर्म करता है वह द्विज और जो कुकर्म करता है वह नीच।

*—भगवान बुद्ध*

- खेल में सदा हम ईमानदारी क़ा पल्ला पकड़कर चलते हैं, पर अफसोस कि कर्म में इस ओर ध्यान तक नहीं देते।

*—रस्किन*

- ईमानदारी से किया गया परिश्रम सफलता को और समीप ला देता है।

*—अज्ञात*

- जिस प्रकार कोई व्यक्ति पेड़ पर चढ़ते समय स्वतंत्र होता है, किंतु गिरते समय शक्तिहीन हो जाता है, इसी प्रकार कर्मों के संचयन के समय आत्मा स्वतंत्र होती है, किंतु जब कर्म पक जाते हैं, तो वह असहाय बन जाती है।

*—भगवान महावीर*

- जिसके पास धीरज है, जो मेहनत से नहीं घबराता, कामयाबी उसकी चेरी है।

*—अज्ञात*

- जीव अपने पुरुषार्थ के कारण ही पुरुष कहलाता है।

*—योग वासिष्ठ*

- सफलता तो तभी मिलती है जब आप अपनी कल्पना के ढांचे में कर्म का रंग भी भरें।

*—स्वेट मार्डेन*

- प्रत्येक अच्छा कार्य पहले असंभव नजर आता है।

*—कार्लाइल*

## भाग्य

- यद्यपि सब एक ही मिट्टी के बने हैं, तथापि कुछ आदेश देते हैं और कुछ उसका पालन करते हैं।

*—लांगफेलो*

- दुर्भाग्य हमेशा उसी दरवाजे से आता है, जो हम ख़ुला छोड़कर रखते हैं।

*—लोकोक्ति*

- एक कार्य को बो दो और एक आदत प्राप्त कर लो, एक आदत को बो दो और एक चरित्र प्राप्त कर लो, एक चरित्र को बो दो और एक भाग्य प्राप्त कर लो।

*—जी.डी. वार्डमेन*

- उत्साह आदमी की भाग्यशीलता का पैमाना है।

*—तिरुवल्लपुर*

- एक की मूर्खता से दूसरे का भाग्य बनता है।

  *—बेकन*

- किस्मत जिसे दुलार करती है, उसे मूर्ख बना देती है।

  *—बेकन*

- बालक का भाग्य सदैव उसकी मां द्वारा निर्मित होता है।

  *—नेपोलियन*

- भाग्य पुरुषार्थ के पीछे चलता है अर्थात् पुरुषार्थ के द्वारा भाग्य अनुकूल हो जाता है।

  *—चाणक्य*

- भाग्य क्या है? भूत में किए गए कर्म। इसलिए प्रयत्न से भाग्य पलटा जा सकता है।

  *—महर्षि रमण*

- सौभाग्य हमेशा परिश्रम के साथ दिखाई देता है।

  *—गोल्डस्मिथ*

- अभिमान और घृणा ही भाग्य को रोककर नष्ट करते हैं।

  *—अज्ञात*

- भाग्यवादी सिद्धांत कायर पुरुषों का है।

  *—अज्ञात*

- महान उद्देश्य से शासित व्यक्ति को भाग्य नहीं रोक सकता।

  *—अज्ञात*

- अपने पुरुषार्थ से अर्जित ऐश्वर्य का ही दूसरा नाम सौभाग्य है।

  *—अज्ञात*

# ❖ जीवन-मृत्यु ❖

- मृत्यु अमरता का प्रासाद खोलने की सुनहरी चाबी है।

*—मिल्टन*

- जीवन का मौत से उतना ही करीबी रिश्ता है जितना जन्म का।

*—रवींद्रनाथ ठाकुर*

- स्पर्द्धा ही जीवन है, उसमें पीछे न रहना ही जीवन की प्रगति का प्रतीक है।

*—निराला*

- खाने और सोने का समय जीवन नहीं है और जीवन नाम है सदैव आगे बढ़ने की लगन का।

*—मुंशी प्रेमचंद*

- जीवन रोने के लिए नहीं है, जीने के लिए तो हँसना ही चाहिए। रोना पाप है, क्यों कोई रोए। जीवन का प्रवाह जैसे बहता है, बहने देना चाहिए।

*—पं. सिद्धिविनायक*

- जीवन की उसकी पूर्णता में जान लेना ही मनुष्य का अंतिम चरम लक्ष्य और परम उद्देश्य है।

*—आचार्य रजनीश*

- मृत्यु एक परदा है जिसे जीवित रहने वाले जीवन कहते हैं। उनके सोते ही परदा गिर जाता है।

*—पी.सी. शैली*

- जीवों की मृत्यु निश्चित है और मृतकों का जन्म भी तय है, इसलिए होनी पर शोक नहीं करना चाहिए।

*—भगवद्गीता*

- मृत्यु थकावट के समान है, लेकिन वास्तविक अंत तो अनंत की गोद में ही है।

*—रवींद्रनाथ ठाकुर*

- जीवन हर व्यक्ति को प्रिय है, लेकिन सम्मान तो जीवन से अधिक मूल्यवान है।

*—शेक्सपीयर*

- उद्देश्य ही जीवन को सार्थक बनाता है, ठीक वैसे ही जैसे ऋतुओं की चेतना प्रकृति में रंग-बिरंगी छटा बिखेर देती है।

*—अज्ञात*

- जीवन का उद्देश्य यही जानना है कि हम कौन हैं और कहां जा रहे हैं, ठीक वैसे ही जैसे ऊषाकाल में चमकते हुए पर्वत प्रकट होते हैं।

*—अज्ञात*

##  अवसर/समय 

- इस बात की कल्पना भी मत करो कि अवसर तुम्हारे द्वार पर आकर दोबारा पुकारेगा। वह जीवन में एक बार ही द्वार पर आता है।

*—चैंफर्ट*

- खोया हुआ समय कभी वापस नहीं लौटता।

*—अनाम*

- किसी भी व्यक्ति को तुम ऐसा अवसर न दो कि वह तुम्हें इतना नीचे गिरा दे कि तुम उससे घृणा करने लगो।

*—मार्टिन लूथर किंग*

- समय वह जड़ी है, जो तमाम रोगों का इलाज कर देती है।

*—फ्रेंक*

- समय पर किया गया काम ही श्रेष्ठ होता है।

*—अज्ञात*

- अक्लमंद आदमी को जितने अवसर मिलते हैं, उससे अधिक वह पैदा करता है।

*—बेकन*

- ईश्वर प्रत्येक मनुष्य को जीवन में एक ऐसा सुअवसर जरूर देता है, जिसका लाभ उठाकर वह धन, वैभव और सम्मान के साथ अपना जीवन व्यतीत कर सकता है।

*—स्वेट मार्डेन*

- विजयी लोगों के साथ लंबा कारवां जुड़ता है, लेकिन हारने वाले अनाथ हो जाते हैं।

*—काउंट सिएनो*

- समय हाथ से निकल जाने के बाद केवल पश्चाताप ही हाथ लगता है।

*—स्वेट मार्डेन*

- सावधान रहो, चौकस रहो और प्रार्थना करो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि कब समय आ जाएगा।

*—ईसा मसीह*

- बकवास में समय न गंवाओ! काम में लगे रहो या चुप रहो।

*—भगवान बुद्ध*

- उस व्यक्ति के लिए अवसर का क्या महत्त्व है, जो उसका उपयोग करना ही न जानता हो।

*—जॉर्ज इलियट*

- संकट का समय ही किसी भी मनुष्य को परखने की कसौटी है।

*—टॉमस पेन*

- जब समुद्र शांत हो तब तो जहाज की कमान कोई भी व्यक्ति संभाल सकता है।

*—पबिलियस साइरस*

- व्यस्त व्यक्ति को समय की कभी तंगी नहीं होती है।

*—अज्ञात*

- जिस व्यक्ति को समय का मूल्य नहीं मालूम, वह जीवन में क्या कर सकता है?

*—अज्ञात*

- पैसे से भी अधिक महत्त्वपूर्ण संपति है : समय।

*—अज्ञात*

- ऐसा कोई दुःख नहीं जो समय की गति के साथ कम और हल्का न हो जाए।

*—सिसरो*

- अगर हम समान अवसर देने की प्रणाली पर अब भी नहीं चलेंगे तो मुसीबत हमारे दरवाजे पर होगी।

*—डगलस मैकआर्थर*

- परिपूर्णता धीरे-धीरे प्राप्त होती है। उसको समय की आवश्यकता होती है।

*—वाल्टेयर*

- शिथिलता से समय सिकुड़ता है तथा मुस्तैदी में फैलता है।

*—अज्ञात*

# ❖ न्याय/इंसाफ ❖

- भारी से भारी ताकत इंसान को नीचे नहीं गिरा सकती, इंसाफ को नीचे गिराने वाला इंसान खुद है।

*—महात्मा गांधी*

- जिसे हम फांसी लगाते हैं, उसे सुधारना हमारा उद्देश्य नहीं होता है, उसके द्वारा हम दूसरों को सुधारते तथा चेतावनी देते हैं।

*—माटेन*

- इंसाफ जरूर हो, चाहे आसमान ही क्यूं न फट पड़े।

*—मुहम्मद शाह*

- देर से किया गया न्याय अन्याय के समान है।

*—लेंडर*

- दूसरे पक्ष की बात सुने बगैर भले ही सही फैसला दिया जाए, लेकिन उसे न्याय नहीं कहा जाएगा।

*—लूसियस सेनेका*

- अपनी भूल को स्वीकार करने में जो गौरव है, वह अन्याय को चिरायु रखने में नहीं।

*—प्रेमचंद*

- एक भी व्यक्ति को नुकसान पहुंचाने और उसके साथ अन्याय करने वाले कानून को बदल देना चाहिए।

*—लाला लाजपतराय*

- सहनशील होना अच्छी बात है, परंतु अन्याय का विरोध करना उससे भी उत्तम है।

*—जयशंकर प्रसाद*

- पहले हम विश्वास करें कि न्याय में ही शक्ति है। फिर इस विश्वास के आधार पर अंत तक अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करें।

*—लिंकन*

- अगर अन्याय नहीं होता तो शायद मनुष्य न्याय के महत्त्व को नहीं समझ पाता।

*—हेराक्लिटस*

- न्यायसंगत बात कहने के लिए हर समय उपयुक्त समय है।

*—सोफोक्लीज*

- अगर आपके पड़ोसी पर अत्याचार और अन्याय हो रहा है और आपको नींद आ जाती है तो अगला नंबर आपका है।

*—शिव खेड़ा*

- जहां इंसाफ नहीं होता, वहां नागरिकों की नजरों में कानून के लिए इज्जत गिर जाती है।

*—शिव खेड़ा*

- कोई भी इस सिद्धांत को स्वीकार नहीं करेगा कि अन्याय सहने की अपेक्षा अन्याय करना अधिक अच्छा है।

*—अरस्तू*

- बेइंसाफ और अन्यायी शासन व्यवस्थित शोषण है।

*—शिव खेड़ा*

- केवल न्याय में ही वास्तविक सुख है। अन्याय करने वाले को कभी न कभी दुःखी होना पड़ता है।

*—सुकरात*

- अगर अन्याय न हो तो बहादुरी का गुण ही समाप्त हो जाएगा।

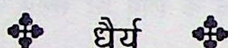
*—एजिसलस*

- उस देश की हानि निश्चित है, जहां इंसाफ और उसूलों से ज्यादा जनमत एहतियात रखता है।

—*शिव खेड़ा*

- अन्याय को मिटाओ, लेकिन अपने-आपको मिटाकर नहीं।

—*प्रेमचंद*



## धैर्य

- जिसके पास धैर्य है, उसके पास सब कुछ है।

—*फ्रेंकलिन*

- जिसके पास धैर्य है उसे उसका वांछित फल अवश्य मिलता है।

—*फ्रेंकलिन*

- संकट और परीक्षा के समय धैर्य धारण करना ही मानो आधी लड़ाई जीत लेना है।

—*प्लाटस*

- धैर्य सब उल्लासों और शक्तियों का मूल है।

—*रस्किन*

- धैर्य तो नैराश्य की अंतिम अवस्था का नाम है। नैराश्य की अंतिम अवस्था विरक्ति होती है।

—*प्रेमचंद*

- धैर्य के साथ शांतिमय लड़ाई लड़ने वाला जीत से कभी फूल नहीं उठता और न मर्यादा ही छोड़ता है।

—*महात्मा गांधी*

- धैर्य व विनय मनुष्य का आभूषण है।

*—अज्ञात*

- कार्य में धैर्य और निष्ठा का अभाव सफलता के द्वार से वापस लौटा देता है।

*—अज्ञात*

## त्याग

- संसार में सबसे बड़े अधिकार सेवा और त्याग से मिलते हैं।

*—प्रेमचंद*

- त्याग के समान कोई सुख नहीं है।

*—महाभारत*

- अहंकारपूर्ण जीवन को छोड़ देना ही त्याग है, और वही सौंदर्य है।

*—स्वामी रामतीर्थ*

- त्याग ही आध्यात्मिकता का प्रथम सोपान है।

*—स्वामी विवेकानंद*

- प्राणी कर्म का त्याग नहीं कर सकता, कर्मफल का त्याग ही त्याग है।

*—भगवद्‌गीता*

- यश त्याग से मिलता है, धोखाधड़ी से नहीं।

*—प्रेमचंद*

- आत्म-त्याग से आप दूसरों को बिना संकोच के त्याग करने के लिए प्रेरित करते हैं।

*—बर्नार्ड शॉ*

- त्याग से पाप का मूलधन चुकता है और दान से पाप का ब्याज।

*—विनोबा भावे*

- आत्म-बलिदान में कितना सुख होता है, यह आत्म-बलिदान करने वाला ही जानता है।

*—भगवतीचरण वर्मा*

- योग से आत्मा का शोषण होता है, त्याग से आत्मा को पोषण मिलता है।

*—विनोबा भावे*

- त्याग का अर्थ है अपना सर्वस्व सत्य को अर्पण करना।

*—स्वामी रामतीर्थ*

- जिसका मन काम में लिप्त नहीं है, जो घृणा से प्रभावित नहीं है, जिसने शुभ और अशुभ दोनों का परित्याग किया है, ऐसे जागरूक व्यक्ति को कोई भय नहीं होता।

*—भगवान बुद्ध*

## ❖ मानवता ❖

- प्रत्येक मनुष्य के अंदर उसका तेज और विशिष्टता सुप्तावस्था में रहती है। अवसर पाते ही वह जागृत हो जाती है।

*—स्वेट मार्डेन*

- मानवता जीवन की रातरानी है जो भयानक अंधियारे में भटकती है।

*—बालकृष्ण बालटुवा*

- अकृतज्ञता मानवता के प्रति विश्वासघात है।

*—इमर्सन*

- आदमी पहले ईमानदार और नेक बने और बाद में तहजीब और खुशी की पॉलिश चढ़ाए।

*—कन्फ्यूशियस*

- दमकते हृदय और स्वच्छ अंतरंग के लिए दुनिया में डर की कोई बात नहीं है।

*—हैसन*

- मस्तिष्क मनुष्य के लिए पहलू मात्र होता है, लेकिन हृदय तो सब कुछ है।

*—खिरोल*

- जीवन का नियम प्रगति अवश्य है, परंतु अभी मनुष्य बनने में हमें देर है।

*—ब्राउनिंग*

- क्रोध, घृणा, अहम्, मोह, आसक्ति ऐसे भाव हैं जो मनुष्य की सोचने-समझने की शक्ति समाप्त कर देते हैं और वह खुद अपना विनाश कर लेता है। इस विनाश से बचने के लिए मनुष्य को आत्ममंथन करना चाहिए।

*—स्वेट मार्डेन*

- बुरा आदमी तब और भी बुरा बन जाता है, जब वह साधु बनने का स्वांग रचता है।

*—बेकन*

- यह ध्येय है; मृत्यु नहीं, जो मानव को शहीद बना देता है।

*—नेपोलियन*

- आपत्ति मनुष्य बनाती है और संपत्ति राक्षस।

*—विक्टर ह्यूगो*

- मानव का दानव होना उसकी हार है। मानव का महामानव होना उसका चमत्कार है, और मनुष्य का 'मानव' होना उसकी जीत है।

—*डा. राधाकृष्णन*

- महत्ता सदैव विनयशील होती है और दिखावा पसंद नहीं करती है, किंतु क्षुद्रता सारे संसार में अपने गुणों का ढिंढोरा पीटती नजर आती है।

—*अज्ञात*

- जिसमें अच्छी सेवा की योग्यता है, ऐसा मनुष्य कभी बुरा नहीं हो सकता।

—*बर्क*

- मानवता को नाक के बल-चलाने के सभी उपलब्ध साधनों में नैतिकता सर्वोत्तम है।

—*नीत्से*

- मानव जितना महान् होगा उतना ही नम्र होगा।

—*टैनिसन*

- नम्रता और मीठे वचन ही मनुष्य का आभूषण है।

—*स्वामी विवेकानंद*

- मेरे विचार में मनुष्य का मूल्य उसके काम या उसके कथन से नहीं, बल्कि वह जीवन में स्वयं क्या बन रहा है, उसे देखकर आंकना चाहिए।

—*महर्षि अरविंद*

- पैदा होने से ही कोई मनुष्य नहीं हो जाता है। मनुष्य बनाना पड़ता है। पैदा होना एक अवसर मात्र है। मनुष्य होना जरूरी है।

—*आचार्य रजनीश*

- मानवता प्रकाश की वह नदी है जो सीमित से असीमित की ओर बहती है।

—*खलील जिब्रान*

- मानव के दो रूप हैं एक वह जो घने अंधकार में भी जागता है, और दूसरा वह जो प्रकाश में भी सोता रहता है।

*—खलील जिब्रान*

- जिस मनुष्य को अपने मनुष्यत्व का भान है, वह ईश्वर के सिवा किसी से नहीं डरता।

*—महात्मा गांधी*

- यदि इस दुनिया में बुरे इंसान न होते तो यहां अच्छे वकील भी न होते।

*—चार्ल्स डिकेंस*

- मानवता का वास्तविक स्वरूप शांतिमय हृदय में है, वाचाल मन में नहीं।

*—खलील जिब्रान*

- बच्चे जनना कठिन काम अवश्य है, परंतु मनुष्य को मनुष्यता सिखाना उससे भी कठिन है।

*—मैक्सिम गोर्की*

- बेवकूफी की हद के बाहर की सहनशीलता इंसानियत नहीं बल्कि कायरता है।

*—शिव खेड़ा*

- समुद्रों से बड़ी एक चीज है और वह है आकाश। आकाश से भी बड़ी एक चीज और है वह है मनुष्य की आत्मा।

*—विक्टर ह्यूगो*

- मानव का मानव के प्रति अत्याचार असंख्य मनुष्यों को दुःख में ड़ाल देता है।

*—राबर्ट बर्न्स*

- कसूरवार को सजा न देना इंसानियत पर अत्याचार है।

*—शिव खेड़ा*

- केवल आदमी ही वह प्राणी है जो लज्जित होता है या जिसे वैसा होने की जरूरत है।

*—मार्क ट्वेन*

- मानव इतिहास बनाने वाला प्राणी है, जो न अपने अतीत को पीछे छोड़ सकता है और न दोहरा सकता है।

*—आडेन*

- जो मनुष्य पड़ोसी की सेवा करता है, वह दुनिया की सेवा करता है।

*—महात्मा गांधी*

- सबका अधिक से अधिक भला करना ही एक सच्चा गौरवपूर्ण और मानवतापूर्ण सिद्धांत है।

*—महात्मा गांधी*

- महान पुरुष अपनी महानता का परिचय छोटे मनुष्यों के साथ किए गए अपने व्यवहार से देते हैं।

*—कार्लाइल*

## ❖ ज्ञान ❖

- ज्ञान युवकों को संयमी बनाता है, बूढ़ों को सुविधा प्रदान करता है। वह निर्धनों के लिए संपत्ति और धनिकों के लिए आभूषण के समान है।

*—अज्ञात*

- जिस प्रकार लकड़ी के दो टुकड़ों के लगातार घर्षण से अग्नि प्रज्वलित हो उठती है उसी प्रकार लगातार ध्यान द्वारा ज्ञानाग्नि उद्दीप्त हो जाती है जो अज्ञान-रूपी ईंधन को पूर्णतया भस्म कर देती है।

*—आदि शंकराचार्य*

- मन जब दर्पण की भांति निर्मल हो जाता है तब उसमें ज्ञान प्रकट होता है, अतः मन को शुद्ध करने का प्रयत्न करना चाहिए।

*—आदि शंकराचार्य*

- अज्ञानता ही मोह और स्वार्थ की जननी है, अतः अज्ञानी ही दुष्ट है।

*—महात्मा गांधी*

- जो मनुष्य परमात्मा का ज्ञान प्राप्त कर लेता है, वह परमात्मा का ही स्वरूप बन जाता है और इस तरह से सिद्ध है कि गुरु के आसन पर मनुष्य नहीं, अपितु परमात्मा स्वयं आसीन रहते हैं।

*—निराला*

- अज्ञान के समान दूसरा वैरी नहीं है।

*—चाणक्य*

- जिज्ञासा कुशाग्र बुद्धि का एक स्थायी व निश्चित गुण है।

*—सेमुअल जॉनसन*

- बड़पन सिर्फ उम्र में नहीं, उम्र के कारण मिले ज्ञान और चतुराई में भी है।

*—महात्मा गांधी*

- प्रकाश के आगमन पर अंधेरा चला जाता है। ऐसे ही ज्ञान के आगमन पर जीवन में जो भी कलुषित है, वह जाता है और तब जो शेष रह जाता है वह संन्यास है।

*—आचार्य रजनीश*

- ईश्वर ने बुद्धि की कोई सीमा निश्चित नहीं की है।

*—बेकन*

- ज्ञान केवल सत्य में ही पाया जा सकता है।

*—गेटे*

- अज्ञान से भी खतरनाक वह ज्ञान है जो अज्ञान को छिपाने में सहयोगी बनता है।

*—आचार्य रजनीश*

- ज्ञान की प्राप्ति केवल विचार से ही हो सकती है, अन्य किसी साधन से नहीं। यह ठीक उसी प्रकार है जैसे बिना प्रकाश की सहायता के कोई वस्तु दृष्टिगोचर नहीं होती।

*—आदि शंकराचार्य*

- जो पुरुष क्रोध और हर्ष के उठे हुए वेग को ज्ञानपूर्वक रोकता है और आपत्तियों के आने पर जो मोह को प्राप्त नहीं होता है, वही पुरुष संपत्ति का पात्र होता है।

*—महात्मा विदुर*

- एकांत, मूर्ख के लिए कैदखाना और ज्ञानी के लिए स्वर्ग है।

*—अज्ञात*

- शिक्षक उस मोमबत्ती के समान है जो खुद को जलाकर दूसरों को उजाला देता है।

*—ईश्वरचंद्र विद्यासागर*

- तप का फल है प्रकाश और ज्ञान।

*—वेदव्यास*

- दूसरों के अनुभव जान लेना भी व्यक्ति के लिए एक अनुभव है।

*—रामकृष्ण परमहंस*

- सुखपूर्वक प्राप्त किया हुआ ज्ञान दुःख के आने पर नष्ट हो जाता है; अतः अपनी शक्ति के अनुसार दुःखों द्वारा आत्मचिंतन करना चाहिए।

*—भगवान महावीर*

- ज्ञान तब तक प्राप्त नहीं हो सकता, जब तक मनुष्य अपने-आपको उसकी प्राप्ति का दास न बना ले।

*—प्लेटो*

- नेत्र ही ज्ञान के द्वार हैं।

*—अज्ञात*

- रात-रात-भर प्रार्थना करने की अपेक्षा एक घंटा भी दूसरों को ज्ञान देने में खर्च करना अधिक अच्छा है।

*—हजरत मोहम्मद*

- अज्ञान के अतिरिक्त आत्मा के और किसी रोग का मुझे पता नहीं है।

*—बेन जॉन्सन*

- हम दो पैसे में अपना धर्म, सच्चाई, ईमानदारी सब बेच देते हैं। इसका कारण हमें अपने भीतर का पता नहीं कि जिसे हम बेच रहे हैं वह कितना मूल्यवान है।

*—आचार्य रजनीश*

- इतिहास के अनुभवों से हम सबक नहीं लेते हैं, इसलिए इतिहास की पुनरावृत्ति होती है।

*—विनोबा भावे*

- जितना ही कम ज्ञान होता है, उतनी ही अच्छी नींद आती है।

*—मैक्सिम गोर्की*

- एक शिक्षित मूर्ख एक अज्ञानी से कहीं अधिक मूर्ख होता है।

*—मोलियर*

- मस्तिष्क में भरे हुए ज्ञान का जितना अंश काम में लाया जाए, उतने ही का मूल्य है, बाकी सब व्यर्थ बोझा है।

*—महात्मा गांधी*

- धूर्त अध्ययन का तिरस्कार करते हैं, सामान्य जन उसकी प्रशंसा करते हैं और ज्ञानी उसका उपयोग करते हैं।

*—बेकन*

- अपनी पत्नी, भोजन और धन—इन तीनों में संतोष करना चाहिए। परंतु अध्यापन, तप और दान, इन तीनों में कभी संतोष नहीं करना चाहिए।

*—चाणक्य*

- विज्ञान हमारी उतनी शक्ति बढ़ाता है जितना हमारा घमंड कम करता है।

*—बर्नार्ड शॉ*

- पुस्तकें ज्ञान की सड़क पर लगे चिह्न हैं, स्वयं ज्ञान नहीं हैं। ज्ञान स्वयं के भीतर से आता है, बाहर से नहीं।

*—महर्षि रमण*

- मानसिक उन्नति भौतिक उन्नति से श्रेष्ठ है। तुच्छ स्वार्थ मानसिक उन्नति का सबसे बड़ा विधाता है। स्वार्थ छोड़ देने से आत्मा-रूपी हंस के पैरों की बेड़ियां खुल जाती हैं और वह अपने पैरों को फैलाता हुआ बराबर आकाश में ज्ञान-रूपी सूर्य की ओर बढ़ता हुआ चला जाता है।

*—गोविंदवल्लभ पंत*

- कठिनाइयां हमें आत्मज्ञान कराती हैं। वे हमें ज्ञान कराती हैं कि हम किस मिट्टी के बने हैं।

*—जवाहरलाल नेहरू*

- ज्ञान दो तरह के होते हैं। एक वह जिसे हम अपने-आप ग्रहण करते हैं और दूसरा वह जिसके बारे में हम जानते हैं कि वह वहां मिल सकता है।

*—सैमुअल जॉन*

- संदेह को बुद्धिमानी का अंत नहीं, बल्कि उसकी शुरुआत कहना उचित होगा।

*—जार्ज हैस*

- मानव का अनुभव ही उसकी राह का प्रकाश होता है।

*—पेट्रिक सेनरी*

- ज्ञान-प्राप्ति के लिए निकाला गया समय, खर्च किया गया धन कभी बेकार नहीं जाता।

*—अज्ञात*

- ज्ञान वह सीपी है, जिसमें प्रवेश कर मानव-जीवन मोती बन जाता है।

*—अज्ञात*

- स्वाध्याय के बिना ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे इसमें संदेह है।

*—अज्ञात*

- ज्ञान-चर्चा मनुष्य की इच्छाओं का नियंत्रण करती है, उनकी तृप्ति नहीं।

*—अज्ञात*

- आत्मज्ञान ही वह मार्ग है जो मनुष्य को स्थायी सुख, शांति और आनंद प्रदान करता है।

*—अज्ञात*

- आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए घर छोड़ने की आवश्यकता नहीं, आसक्ति से विमुख होना चाहिए।

*—अज्ञात*

- ज्ञान के अभाव में सारी शक्तियां लघु प्रतीत होती हैं।

*—अज्ञात*

- गीता के ज्ञान में जीवन की प्रत्येक गुत्थी को सुलझाने की सामर्थ्य विद्यमान है।

*—अज्ञात*

- दुःख में विवेक जागता है और सुख में ज्ञान होता है।

*—अज्ञात*

- अपनी विद्वता पर अभिमान करना सबसे बड़ा अज्ञान है।

*—अज्ञात*

- उड़ने की अपेक्षा झुकने के समय ज्ञान हमारे अधिक नजदीक होता है।

*—वर्ड्सवर्थ*

- ज्ञान मंत्र है, कर्म तंत्र है; उपासना इन दोनों को जोड़ देती है।

*—विनोबा भावे*

## ❖ विवेक ❖

- आवश्यकता और विलास में अंतर अनगढ़ मनुष्य नहीं कर सकता। यह देवदूत का काम है। देवदूत विवेक को कहते हैं।

*—पं. श्रीराम शर्मा आचार्य*

- जिस प्रकार तीर बनाने वाला तीर को सीधा करता है, उसी प्रकार विवेकी व्यक्ति अस्थिर, चंचल, दुर्रक्षित और दुर्नियंत्रित मन को सीधा कर लेता है।

*—भगवान बुद्ध*

- कमल की तरह तू मृत्युलोक में निर्लिप्त रह, कीचड़ से अपना सिर ऊपर रख अथवा हंस की तरह रह, जो जल से आकाश तक उड़ने पर अपने पंख भीगने से बचाए रहते हैं।

*—गुरु नानक देव*

- सबसे अधिक अपने मन की रक्षा कर, क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही हैं।

*—ईसा मसीह*

- अपनी निर्णय-क्षमता को मजबूत बनाने का एक ही तरीका है, उससे अधिक से अधिक काम लेना।

*—शॉफ्ट*

- अविवेकी और चंचल व्यक्ति की इंद्रियां बेखबर सारथी के दुष्ट घोड़ों की तरह बेकाबू हो जाती हैं।

*—कठोपनिषद्*

- मन सरसों की पोटली जैसा है, एक बार बिखर गई तो उसे समेटना असंभव हो जाता है।

*—अज्ञात*

- परावलंबी व्यक्ति के पास न अपना विवेक होता है, न अपनी बुद्धि।

*—अज्ञात*

- आगे आने की अपेक्षा आगे लाने में अपनी शान समझें।

*—अज्ञात*

- आपत्तियां हमारे विवेक और पुरुषार्थ को चुनौती देने आती हैं।

*—अज्ञात*

- नीति, विवेक और चातुर्य हमारे जीवन के अभिन्न अंग होने चाहिए।

*—लिंकन*

- मन के हाथी को विवेक के अंकुश में रखो।

*—अज्ञात*

## ❖ मान-अपमान ❖

- तलवार का घाव भर जाता है पर अपमान का घाव नहीं भरता।

  *—अज्ञात*

- अपकीर्ति मृत्यु-तुल्य है।

  *—अज्ञात*

- मैं अपने सम्मान पर आघात पहुंचने की अपेक्षा दस सहस्र बार मरना ज्यादा अच्छा समझता हूं।

  *—एडीसन*

- अगर हमारी बेइज्जती होती है तो उसके जिम्मेदार हम स्वयं हैं।

  *—महर्षि अरविंद*

- विश्व में सम्मान के साथ रहने का सबसे छोटा और शर्तिया उपाय यह है कि हम जो कुछ बाहर से दिखाना चाहते हैं वैसे ही वास्तव में भी हों।

  *—सुकरात*

- जीवन हर व्यक्ति को प्रिय है, लेकिन सम्मान तो जीवन से अधिक मूल्यवान है।

  *—शेक्सपीयर*

- महान् व्यक्तियों के लिए अपना सम्मान और गौरव जीवन से कहीं अधिक मूल्यवान होता है।

  *—महात्मा गांधी*

## ❖ विश्वास/आत्मविश्वास ❖

- वक्त और लहरें किसी का इंतजार नहीं करतीं।

  *—अंग्रेजी कहावत*

- जो वक्त की जरूरतों को पूरा नहीं करते, वक्त उन्हें बर्बाद कर देता है।

*—अज्ञात*

- इस दुनिया में किसी भी व्यक्ति का स्वभाव प्राकृतिक रूप से ऐसा नहीं है जिसे संपूर्ण कहा जा सके। उसे आवश्यकता होती है देखभाल की, आत्मसंयम की।

*—स्वेट मार्डेन*

- विश्वास जीवन की शक्ति है।

*—टालस्टाय*

- विश्वास का अभाव अज्ञान है।

*—स्वामी रामतीर्थ*

- केवल विश्वास ही हमारा एक ऐसा संबल है जो हमें मंजिल तक पहुंचाता है।

*—स्वेट मार्डेन*

- जिसने एक बार विश्वासघात किया, उसका विश्वास कभी न करें।

*—शेक्सपियर*

- वे ही विजयी हो सकते हैं, जिन्हें विश्वास है कि वे विजयी होंगे।

*—वार्जिल*

- केवल विश्वास ही हमारा एक ऐसा संबल है जो हमें मंजिल तक पहुंचाता है।

*—स्वेट मार्डेन*

- वे ही व्यक्ति महान और शक्तिशाली बनते हैं जिन्हें अपने-आप पर विश्वास है।

*—स्वामी विवेकानंद*

- जिस व्यक्ति में आत्मविश्वास हो उसे सफलता पाने से कोई नहीं रोक सकता।

*—स्वेट मार्डेन*

- अपनी ताकत पर भरोसा करो, उधार की शक्ति तुम्हारे लिए घातक है।

*—सुभाषचंद्र बोस*

- असंतोष अपने-आप पर विश्वास का परिणाम है। यह कमजोर इच्छा का रूप है।

*—इमर्सन*

- हम विश्वास के आधार पर चलते हैं, दृष्टि के आधार पर नहीं।

*—बाइबिल*

- संदेह करने से संदेह बढ़ता है और विश्वास से विश्वास में वृद्धि होती है।

*—विनोबा भावे*

- मनुष्य को अपने-आपमें विश्वास होना चाहिए, कानूनों पर नहीं—कानून मनुष्य से नीचा होता है।

*—मैक्सिम गोर्की*

- विश्वास बच्चों की चीज है। दिखावट और सच्चाई में भेद करना यह बड़ों का अधिकार है।

*—अज्ञेय*

- आत्मविश्वास, आत्मज्ञान और आत्मसंयम जीवन को बल और संबल प्रदान करते हैं।

*—अज्ञात*

- आत्मबल से बढ़कर मनुष्य जीवन में और कोई बड़ी विभूति नहीं।

*—अज्ञात*

- आत्मविश्वास टूटा, तो सामर्थ्य चाहे कितनी ही प्रचंड अजेय क्यों न हो, काम नहीं आती।

*—अज्ञात*

- जिस वस्तु का अस्तित्व नहीं, उसे हम विश्वास से उत्पन्न कर सकते हैं।

*—टेनीसन*

- अपना मूल्य समझो और विश्वास करो कि तुम संसार के सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हो।

*—अज्ञात*

- कठिनाई और विरोध की मिट्टी से आत्मविश्वास बढ़ता है और रास्ते आसान होते हैं।

*—सुकरात*

- हम विश्वास के आधार पर चलते हैं, दृष्टि के आधार पर नहीं

*—बाइबिल*

- विश्व हटकर उस व्यक्ति को राह दे देता है जो यह जानता है कि वह कहां जा रहा है।

*—डी.एस. जार्डन*

- अंधानुकरण से आत्मविश्वास के बजाय आत्मसंकोच ही पैदा होता है।

*—महर्षि अरविंद*

- अपने आत्मविश्वास और चरित्र के बल पर एक साधनरहित व्यक्ति भी महान सफलता प्राप्त कर सकता है।

*—स्वेट मार्डेन*

- आलस्य का एकमात्र इलाज काम करना है, स्वार्थ-भावना का इलाज है त्याग, अविश्वास का इलाज है दृढ़ विश्वास, कायरता का इलाज है जोखिम-भरे काम का बीड़ा उठाना और तन-मन-धन से उसमें जुट जाना।

*—रदरफोर्ड*

- विश्वास करना कठिन है, तो अविश्वास करना असंभव।

*—विक्टर हयूगो*

## साहस/शौर्य

- मूर्ख मनुष्य भय से पहले ही डर जाता है, कायर भय के समय डरता है और साहसी भय के बाद डरता है।

*—अज्ञात*

- संसार में आधे से अधिक लोग तो इसलिए असफल हो जाते हैं कि समय पर उनमें साहस का संचार नहीं हो पाता और वे भयभीत हो उठते हैं।

*—स्वामीजी*

- साहसी मनुष्य परिस्थितियों के दास नहीं, स्वामी होते हैं।

*—स्वेट मार्डेन*

- हमें साहसपूर्वक अंधकार के छटने और प्रकाश के आने की आशा कभी नहीं छोड़नी चाहिए।

*—स्वेट मार्डेन*

- बदला साहस नहीं, परंतु उसका सहना साहस है।

*—शेक्सपीयर*

- राग, द्वेष और क्रोध को जीतने का नाम है : शौर्य।

*—अज्ञात*

- निश्चित पथ से वीर पुरुष पीछे नहीं मुड़ते।

*—अज्ञात*

- साहसिकता वह सराहनीय है, जो आदर्शों के साथ जुड़े।

*—अज्ञात*

- सज्जनता की शोभा साहसिकता से ही निखरती है।

*—अज्ञात*

- ध्वंस में नहीं, सृजन में मनुष्य का शौर्य परखा जाता है।

*—अज्ञात*

- शूरवीर वही है जो बिना शस्त्र धारण किए शत्रु के सामने छाती खोलकर मरने का साहस करता है।

*—गांधी*

- दुनिया में हर आदमी विजयी नहीं हो सकता। विजयी वही होता है जो विजयी होने का साहस रखता है।

*—जवाहरलाल नेहरू*

- अग्नि सोने को परखती है और आपत्ति वीर पुरुषों को।

*—अज्ञात*

## प्रेम-द्वेष

- उसकी प्रार्थना सर्वोत्तम है, जिसका प्रेम सर्वोत्तम है।

*—कोलरिज*

- प्रेम का जवाब प्रेम से ही देना चाहिए।

*—अज्ञात*

- प्रेम आंखों से नहीं, मन से देखता है।

*—शेक्सपीयर*

- प्रेम का स्वभाव है अनेक को एक करना और द्वेष का स्वभाव है एक को अनेक करना।

*—अज्ञात*

- प्रेम एक ऐसी मोहिनी है जिसके वशीभूत होकर महात्मा तक को तपस्या भंग करनी पड़ी।

*—महात्मा गांधी*

- प्रेम-भरा हृदय अपने प्रेम-पात्र की भूल पर दया करता है और स्वयं घायल हो जाने पर भी उससे प्यार करता है।

*—महात्मा गांधी*

- अगर तुम चाहते हो कि लोग तुम्हें प्रेम करें तो तुम प्रेम करो और प्रेम किए जाने योग्य बनो।

*—फ्रेंकलिन*

- प्रेम न हो तो दोष ही दोष दिखते हैं।

*—अज्ञात*

- प्रेम ही सर्वोच्च कानून है और सौंदर्य भी। दोनों ही पूर्णता को प्राप्त करते हैं।

*—के.एम. मुंशी*

- फूल प्रेम की सच्ची भाषा है।

*—पी. बेंजामिन*

- जहां प्रेम और भक्ति नहीं वहां परमात्मा नहीं।

*—गुरु रामदास*

- कृत्रिम प्रेम बहुत दिनों नहीं टिक सकता। स्वाभाविक प्रेम की नकल नहीं की जा सकती।

*—स्वामी रामतीर्थ*

- प्रेम चतुर मनुष्य के लिए नहीं, वह तो शिशु से सरल हृदय की वस्तु है।

*—जयशंकर प्रसाद*

- जहां प्रेम का सहज संपर्क है, वहां बंधन तो व्यर्थ है। प्रेम का माने मुक्ति है।

*—विमल मित्र*

- बल और शक्ति की आज्ञा टालना आसान है, मगर प्यार की आज्ञा टालना आसान नहीं है।

*—सुदर्शन*

- भाई-बहनों को एक करने वाली अगर कोई शक्ति है तो वह मातृ-प्रेम है।

*—विनोबा*

- जीवन एक पुष्प है और प्रेम उसका मधु।

*—विक्टर ह्यूगो*

- नम्रता, प्रेमपूर्ण व्यवहार तथा सहनशीलता से मनुष्य तो क्या देवता भी वश में हो जाते हैं।

*—लोकमान्य तिलक*

- व्यक्ति दंड द्वारा उतना नहीं सीखता, जितना प्रेम और क्षमा द्वारा।

*—अज्ञात*

- द्वेष करने वाला अपने भोजन को भी विषाक्त कर देता है।

*—अज्ञात*

- परमात्मा पूजा से नहीं, प्रेम से मिलता है।

*—अज्ञात*

- आत्मीयता की प्रेम-भावना से लबालब भरा हुआ अंतःकरण प्रत्यक्ष स्वर्ग है।

*—अज्ञात*

- प्रेम के बिना संसार एक बड़ा कब्रिस्तान है।

*—अज्ञात*

- प्रेम पर आधारित शक्ति दंड के भय से हासिल की गई शक्ति की अपेक्षा हजार गुनी अधिक प्रभावशाली और स्थायी होती है।

*—अज्ञात*

- प्रेम कभी नहीं मरता। वह तो ईश्वर के समान अमर है।

*—जॉन कीट्स*

- द्वेष और कपट को त्याग दो, संगठित होकर दूसरे की सेवा करना सीखो, यही हमारे देश की महती आवश्यकता है।

*—स्वामी विवेकानंद*

## ✥ पाप-पुण्य ✥

- पापी का उपकार करो या पापी का प्रतिकार करो।

*—मैथिलीशरण गुप्त*

- भय ही पतन और पाप का कारण है।

*—स्वामी विवेकानंद*

- पाप के कई औजार होते हैं जिन्हें झूठ का सहारा लेकर कारगर बनाया जाता है।

*—ओ.डब्ल्यू. होम्स*

- पुण्य और पवित्र कार्य के संबंध में सज्जनों का चित्त स्वयं साक्षी होता है।

*—महर्षि योगी*

- पाप की स्वीकृति मुक्ति का श्रीगणेश है।

*—लूथर*

- जिस प्रकार जंग लोहे से उत्पन्न होते हुए भी पैदा होते ही लोहे को खा जाता है, वैसे ही पापी व्यक्ति के अपने कर्म ही उसे दुर्गति की ओर ले जाते हैं।

*—भगवान बुद्ध*

- एक छेद भी जहाज को डुबो देता है और एक पाप भी व्यक्ति को नष्ट करने के लिए काफी है।

*—जॉन बेन्यन*

- जब तक पाप पकता नहीं तब तक मीठा लगता है, लेकिन जब पकने लगता है तब बड़ा दुःख देता है।

*—भगवान बुद्ध*

- जब पड़ोसी भूखा मरता हो, तब मंदिर में भोग चढ़ाना पुण्य नहीं, पाप है।

*—विवेकानंद*

- पवित्रता की माप है मलिनता, सुख का आलोचक है दुःख, पुण्य की कसौटी है पाप।

*—जयशंकर प्रसाद*

- कितने ही पुण्यफल ऐसे हैं जिनके सत्परिणाम प्राप्त करने के लिए अगले जन्मों की प्रतीक्षा करनी पड़ती है। परलोक-साधना का परमार्थ ऐसा है जिसका प्रतिफल हाथोंहाथ मिलता है।

*—पं. श्रीराम शर्मा आचार्य*

- जिस घड़ी से मनुष्य पाप को समझने लगता है उसी क्षण से उसका पश्चात्ताप आरंभ हो जाता है। जैसे अग्नि के ताप से स्वर्ण शुद्ध वर्ण होकर निकलता है ऐसे ही पश्चात्ताप के ताप से मनुष्य के सब पाप भस्म हो जाते हैं।

*—गोविंदवल्लभ पंत*

- कानून पाप को खोज सकता है, किंतु मिटा नहीं सकता।

*—मिल्टन*

- इत्मीनान रखिए, आपका पाप आपको ढूंढ़ निकालेगा।

*—मोजेज*

- जुल्म करना पाप है, जुल्म सहना उससे भी बड़ा पाप है।

*—शिव खेड़ा*

- पाप अपने साथ रोग, शोक, पतन और संकट भी लेकर आता है।

*—अज्ञात*

- पाप और अनाचार करने वाले को खुद अपने हाथ काट डालने चाहिए।

*—पंचतंत्र*

- मनुष्य जब एक बार पाप के नागपाश में फंसता है तब वह उसी में और लिपटता जाता है, उसी के गाढ़े आलिंगन में सुखी होने लगता है। पापों की शृंखला बन जाती है। उसी के नए-नए रूपों पर आसक्त होना पड़ता है।

*—अज्ञात*

- जिस क्षण हम कोई पाप करते हैं, उसी क्षण दंड के बीज भी बो देते हैं।

*—हैसियड*

## संकल्प/निश्चय

- संकल्प ही आदमी का बल है, वह बल शंका या संशय की राह से बूंद-बूंद आदमी से रिसता रहता है।

*—जैनेंद्र*

- दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ने की प्रबल इच्छा से ही हर काम में सफलता मिलती है।

*—महात्मा गांधी*

- असंभव शंब्द केवल मूर्खों के ही शब्दकोशों में मिलता है।

*—नेपोलियन*

- दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ने की प्रबल इच्छा से ही हर काम में सफलता मिलती है।

*—महात्मा गांधी*

- संकल्प और सफलता एक-दूसरे के पूरक हैं।

*—स्वेट मार्डेन*

- जिसका निश्चय दृढ़ और अटल है, वह दुनिया को अपने सांचे में ढाल सकता है।

*—गेटे*

- इतिहास और पुराण साक्षी हैं कि मनुष्य के संकल्प के सामने देव और दानव सभी पराजित होते हैं।

*—इमर्सन*

- लक्ष्य के प्रति तन्मयता ही सबसे महान् साधक की निशानी है।

*—अज्ञात*

- अनुभव बताता है कि आपत्तिकाल में दृढ़ निश्चय और संकल्प ही पूरी सहायता करता है।

*—शेक्सपीयर*

- दबाव पड़ने पर इच्छाएं कमजोर पड़ जाती हैं, इरादे और मजबूत हो जाते हैं।

*—शिव खेड़ा*

- संकल्प स्वतंत्र नहीं होता। वह भी किसी काम या कारण से बंधा तत्त्व है, पर संकल्प के पीछे कुछ तो स्वतंत्र है।

*—स्वामी विवेकानंद*

- दृढ़ निश्चय के अलावा सफलता के लिए अन्य कोई गुण जरूरी नहीं है। इससे हर कठिनाई से पार पाया जा सकता है, कभी-कभार प्रकृति के मजबूत वातावरण से भी।

*—अज्ञात*

- संकल्प-शक्ति असंभव को भी संभव बना देती है।

*—अज्ञात*

- महानता उनके पास आती है, जिन्होंने अपनी समूची इच्छाशक्ति व क्रिया को महान उद्देश्यों के प्रति नियोजित कर दिया है।

*—अज्ञात*

## ❖ सुंदरता (सौंदर्य) ❖

- सुंदर आकृतियों को आभूषण की आवश्यकता नहीं है।

*—कालीदास*

- सौंदर्य जीवन-सुधा है।

*—कीट्स*

- अच्छा स्वभाव हमेशा सुंदरता के अभाव को पूरा कर देता है। लेकिन सुंदरता अच्छे स्वभाव की पूर्ति नहीं कर सकती।

*—एडीसन*

- यदि आंखें देखने के लिए बनाई गई हैं तो सौंदर्य अपने अस्तित्व के लिए स्वयं बहाना है।

*—इमर्सन*

- जो कुछ सुंदर और कल्याणमय हैं, उसके साथ यदि हम हृदय की समीपता बढ़ाते रहें तो संसार सत्य और पवित्रता की ओर अग्रसर होगा।

*—जयशंकर प्रसाद*

- यदि सुंदरता के साथ सद्गुण है तो वह हृदय का स्वर्ग है, यदि उसके साथ दुर्गुण हो तो वह आत्मा का नरक है—वह ज्ञान की होली और मूर्ख की भट्टी है।

*—क्वाल्सी*

- सुंदरता की सृष्टि ही इसलिए हुई है कि उसे अपलक नयनों से निहारा जाए। सच तो यह है कि सुंदरता की उपासना उस सौंदर्य को सृजन करने वाले की उपासना है जिसे हम देख नहीं पाते।

*—भगवतीचरण वर्मा*

- प्रेम ही सर्वोच्च कानून है और सौंदर्य भी। दोनों ही पूर्णता को प्राप्त करते हैं।

*—के.एम. मुंशी*

## सुख-दुःख

- दुःख के बाद जो सुख होता है, वही विशेष आनंद देता है, जैसे धूप से व्याकुल मनुष्य को वृक्ष की छाया विशेष सुख देती है।

*—कालीदास*

- संसार में उस मनुष्य से अधिक कोई दुःखी नहीं जो हर बात में संदिग्ध रहता है, जिसे छोटे-छोटे कामों के करने के लिए भी अधिक देर तक विचार करना पड़ता है।

*—विलियम जेम्स*

- वही सुखी है जिसने स्वार्थ-परायणता को जीत लिया; वही सुखी है जिसने शांति प्राप्त कर ली है और वही सुखी है जिसने सत्य को पा लिया है।

*—भगवान बुद्ध*

- कोई भी व्यक्ति न तो उतना दुःखी है न उतना सुखी, जैसी कि वह कल्पना करता है।

*—रोशे फूकोल्ड*

- सुखों के चले जाने पर हम उनका महत्त्व समझ सकते हैं—जब हम सुखी होते हैं, तब नहीं।

*—अरस्तू*

- मन का दुःख मिट जाने पर शरीर का दुःख भी मिट जाता है।

*—वेदव्यास*

- मन में जब कभी सुख-दुःख की कल्पना उभरे, उसका विरोध करो। उसे घर मत करने दो। वह शुद्ध भ्रांति है।

*—साईं बाबा*

- दरिद्रता रूपी जीवन मानव का अभिशाप है।

*—चाणक्य*

- दरिद्रता प्रकट करना दरिद्र होने से अधिक दुःखदायी होता है।

*—प्रेमचंद*

- महापुरुष सदैव सदाचार का विचार करता है, क्षुद्र व्यक्ति सुख का।

*—कन्फ्यूशियस*

- पैसा ऊपर का आडंबर है और सुख अंदर की तरंग।

*—अज्ञात*

- स्वेच्छा से ग्रहण किए हुए दुःख को ऐश्वर्य के समान भोगा जा सकता है।

  *—अज्ञात*

- इसमें कोई संदेह नहीं कि मानव-जीवन में सुख की अपेक्षा दुःख ही अधिक है।

  *—महात्मा गांधी*

- अधिकांश लोग उतने ही प्रसन्न रहते हैं जितना कि वे चाहते हैं।

  *—अज्ञात*

- यदि मनुष्य का स्वभाव अच्छा है तो उसके साथ उसका स्वर्ग है, उसकी प्रसन्नता से भरी दुनिया उसके साथ है। और यदि उसका स्वभाव दोषपूर्ण है तो वह जहां भी जाएगा, उसका दुःख उसके साथ चलेगा।

  *—अज्ञात*

- प्रसन्न रहने के दो ही उपाय हैं—प्रथम—अपनी आवश्यकताएं कम करो, दूसरा—परिस्थितियों के साथ समझौता करो।

  *—अज्ञात*

- महापुरुष दुःखों के पालने में झूलते हैं और विपत्तियों का तकिया लगाते हैं।

  *—अज्ञात*

- दुःखों का कारण हैं—इच्छाएं, वासनाएं। इनके छूटते ही आनंद उपलब्ध हो जाता है।

  *—अज्ञात*

- पार्थिव सुखों को ही सब कुछ मानने की भूल न करें।

  *—अज्ञात*

- अनासक्त होकर अपने कर्त्तव्य को भली भांति पूरी करना ही सुखी रहने का सर्वोत्तम साधन है।

*—अज्ञात*

- जिसे कभी दुःख नहीं हुआ वह सुख अनुभव नहीं कर सकता!

*—अज्ञात*

- यदि दुःख के बाद सुख न आता, तो उसे कौन सहता!

*—अज्ञात*

- सुख के पीछे दुःख रहा है, दुःख के पीछे सुख। धूप है तो छाया भी है। प्रकाश है तो अंधेरा भी। जन्म है तो मृत्यु भी। इस द्वंद्व से हटना अनासक्ति है।

*—अज्ञात*

- सभी सुखी परिवार एक दूसरे के साथ चलते हैं और प्रत्येक असंतुष्ट परिवार अपने तरीके से अप्रसन्न रहता है।

*—टालस्टाय*

- खून की नदियां बहाने की बजाय लोगों के आंसू पोंछने में ही वास्तविक सुख और प्रसिद्धि है।

*—बायरन*

- जो इच्छाओं से मुक्त है, वह न दुःख जानता है, न भय।

*—भगवान बुद्ध*

- दुःखी पर दया दिखाना मानवोचित है उसके दुःख का निवारण करना देवोचित है।

*—होरेस*

- जो पुरुष अपने सुख में प्रसन्न नहीं होता दूसरे के दुःख में प्रसन्न नहीं होता और दान देने के बाद संताप नहीं करता है, उसे ही उत्तम पुरुष की संज्ञा दी गई है।

*—महात्मा विदुर*

## अतीत-वर्तमान-भविष्य

- भविष्य वर्तमान द्वारा खरीदा होता है।

*—जॉनसन*

- वर्तमान कार्यक्षेत्र के लिए है, भविष्य कर्मठता के लिए।

*—रूसो*

- कल की चिंता न करो, क्योंकि कल का दिन अपनी चिंता आप कर लेगा।

*—ईसा मसीह*

- पिछले अनुभवों से समझदार व्यक्ति भविष्य का अनुमान लगा सकते हैं।

*—सोफोक्लीज*

- जो वर्तमान की उपेक्षा करता है वह अपना सब कुछ खो देता है।

*—शिलर*

- व्यक्ति के स्वभाव पर उसका भविष्य निर्भर करता है।

*—स्वेट मार्डेन*

- समझदार और बुद्धिमान व्यक्ति भूतकाल के अनुभव से भविष्य का अनुमान लगा लेते हैं।

*—सोफोक्लीज*

- भविष्य इरादेमंद को राह दिखाता है और गैर-इरादेमंद को घसीटता है।

*—शिव खेड़ा*

- हमारी आज की समस्याएं बीते हुए कल के अदूरदर्शी समाधानों का नतीजा हैं।

*—शिव खेड़ा*

- आदमी भविष्य का मालिक बनना चाहता है, क्योंकि वह अतीत को बदलने की इच्छा रखता है।

*—मिलान कुंदेरा*

- वर्तमान का उपयोग ठीक हो रहा है तो भविष्य के उत्तम होने की संभावना तो है ही।

*—अज्ञात*

- अतीत पर नियंत्रण करने से भविष्य और वर्तमान पर नियंत्रण करने से अतीत काबू में रहता है।

*—जार्ज ऑरवेल*

## ❖ विविध ❖

- कमजोर मस्तिष्क एक माइक्रोस्कोप की तरह होता है जो छोटी-छोटी चीजों को तो बड़ा बना देता है, लेकिन बड़ी चीजों को ग्रहण करने में असमर्थ रहता है।

*—चेस्टर फील्ड*

- सूर्य की किरणें को किसी बाहरी स्पर्श से बिगाड़ना असंभव है।

*—जॉन मिल्टन*

- दूसरों के अनुभव से होशियारी सीखने की मनुष्य की इच्छा नहीं होती है।

*—विनोबा भावे*

- चापलूसी का जहरीला प्याला आपको तब तक नुकसान नहीं पहुंचा सकता, जब तक कि आपके कान उसे अमृत समझकर न पी पाएं।

*—प्रेमचंद*

- पुरानी बातों में से किसी अच्छी बात का चयन कर लेना नए अविष्कार जैसा है।

*—टुब्ले*

- ऐसे व्यक्ति पर कभी विश्वास न करो जो प्रशंसा के पुल बांध दे।

*—अज्ञात*

- तालियों की गड़गड़ाहट अपशब्द की शुरुआत है।

*—जापानी कहावत*

- हम संसार से घृणा भले ही करें, किंतु उसके बिना रह नहीं सकते।

*—वेरन बेसन गर्ग*

- सहज बुद्धि इतनी सहज नहीं होती।

*—वाल्टेयर*

- दूसरे ने हमारा बुरा किया तो हमें बुरा लगा, तो दोनों एक ही दर्जे के हैं।

*—शीलनाथ*

- वृक्ष अपने सर पर गर्मी सह लेता है, किंतु अपनी छाया से औरों को गर्मी से बचाता है।

*—कालीदास*

- निंदक के लिए मोक्ष के दरवाजे बंद हैं।

*—हजरत मोहम्मद*

- अपनी क्षमता का ज्ञान हमें शीलवान बना देता है।

*—प्रेमचंद*

- क्रोध मन के दीपक को बुझा देता है।

*—इंगरसोल*

- खामोश रहो या ऐसी बात कहो जो खामोशी से बेहतर हो।

*—पाइथागोरस*

- बल सब पर विजय प्राप्त करता है, परंतु वह विजय क्षणिक होती है।

*—लिंकन*

- अतिथि समाज की व्यक्त मूर्ति है।

*—विनोबा भावे*

- भोजन के लिए सबसे अच्छी चटनी भूख है।

*—सुकरात*

- तृष्णा चतुर को भी अंधा बना देती है।

*—सादी*

- पत्र व्यक्तिगत अखबार है।

*—इमर्सन*

- रुचियां जीवन की परख हैं।

*—रस्किन*

- यदि प्रसन्नता स्वभाव में बस गई है तो रोग, शोक दूर से ही भाग जाएंगे।

*—अज्ञात*

- प्रत्येक अच्छा कार्य पहले असंभव नजर आता है।

*—कार्लाइल*

- जीवन में आकांक्षाएं होती है तो अपना स्वाभिमान व आत्माभिमान भी होता है।

*—अज्ञात*

- मौन में और करुणा में विरोध नहीं है। मौन से करुणा पैदा होती है और करुणावान व्यक्ति धीरे-धीरे मौन होता चला जाता है।

*—आचार्य रजनीश*

- संपन्न व्यक्ति उन्हें हेय दृष्टि से देखता है जो उसकी बहुत ज्यादा खुशामद करते हैं। और जो खुशामद नहीं करते, उन्हें घृणा की दृष्टि से।

*—विमल मित्र*

- सभी गंभीर गलतियों की तह में व्यक्ति के अभिमान की प्रमुख भूमिका होती है।

*—रस्किन*

- परिपूर्णता धीरे-धीरे प्राप्त होती है। उसको समय की आवश्यकता होती है।

*—वाल्टेयर*

- विपत्ति के समान कोई शिक्षा नहीं।

*—डिजरायली*

- जहां पशुओं को कष्ट होता है, जहां स्त्रियों का अनादर होता है व जहां भाई लड़ते हैं वहां दरिद्रता का आना सुनिश्चित है।

*—अग्नि पुराण*

- दुखते हुए फोड़े में कितना मवाद भरा है, यह उस समय पता चलता है जब नश्तर लगाया जाता है। मन का विष उस समय पता चलता है, जब कोई उसे खोलकर हमारे सामने रख देता है।

*—प्रेमचंद*

- यदि कोई मनुष्य अप्रसन्न है तो यह उसी का दोष हैं क्योंकि प्रकृति ने तो सभी को प्रसन्न बनाया है।

*—इपिक्टस*

- लोगों को सही राह बताना नेताओं का काम है।

*—विनोबा*

- क्रोध प्रीति को नष्ट करता है, मान विनय को नष्ट करता है, माया मैत्री को नष्ट करती है और लोभ सब कुछ नष्ट करता है।

*—भगवान महावीर*

- ठहरना चाहते अतिथि को जल्दी विदा कर देना और विदा चाहते अतिथि को रोक लेना, दोनों समान रूप से आपत्तिजनक होते हैं।

*—होमर*

- जब मनुष्य भूखा हो या मर रहा हो, उस वक्त संस्कृति या भगवान के विषय में बात करना बेवकूफी है और किसी भी चीज के बारे में बात करने से पहले आदमी को उसकी जिंदगी की आम जरूरत की चीजें मिलना चाहिए।

*—जवाहरलाल नेहरू*

- पशु न बोलने के कारण कष्ट उठाता है और मनुष्य अधिक बोलने के कारण।

*—लुकमान*

- वेदना और हर्ष, प्रकाश और छाया की भांति एक के बाद एक आते हैं।

*—लारेंस स्टर्न*

- मैं गाली खा लेना अच्छा समझता हूं, बजाय इसके कि कोई मुझे भुला दे।

*—डॉ. जानसन*

- वही उन्नति कर सकता है जो स्वयं को उपदेश देता है।

*—अज्ञात*

- हमें कोई धोखा नहीं देता, हम स्वयं अपने-आपको धोखा देते हैं।

*—गेटे*

- त्रुटियों के संशोधन का नाम ही उन्नति है।

*—लाला लाजपतराय*

- सत्ता की महत्ता तो मोहक भी बहुत होती है, एक बार हाथ में आने पर और कंटीली होने पर भी छोड़ी नहीं जाती।

*—वृंदावनलाल वर्मा*

- अच्छा पड़ोसी ईश्वर की नियामत है और बुरा पड़ोसी किसी अभिशाप से कम नहीं है।

*—हैसियड*

- सभी वस्तुएं नवीन और विभिन्न रूपों में परिवर्तित होती रहती हैं।

*—लांगफेलो*

- दुनिया में बुद्धि का नहीं, बल्कि लक्ष्मी का साम्राज्य है।

*—सिसरो*

- प्रकृति की आज्ञा मानकर ही हम उसका नेतृत्व करते हैं।

*—बेकन*

- दोषी को दंड देने और बेकसूर की रक्षा के लिए कानून बनाया गया है।

*—डेविड वेबस्टर*

- परिवर्तन आसानी से नहीं होता है, भले ही वह खराब से बेहतर स्थिति के लिए ही क्यों न हो।

*—रिचर्ड हुकर*

- पराजय के मुकाबले विजय की समस्याओं पर जल्दी सहमति बन जाती है, लेकिन उन पर काबू पाना भी आसान नहीं।

*—विंस्टन चर्चिल*

- दुनिया में ऐसा कोई भी रहस्य नहीं है जो सामने नहीं आता है।

*—बाइबिल*

- हार्दिक उपहार से बढ़कर कोई चीज न तो इस संसार में मिल सकती है और न स्वर्ग में।

*—तिरुवल्लुवर*

- एक अच्छी माता सौ शिक्षकों के बराबर होती है, इसलिए उसका हर हालत में सम्मान करना चाहिए।

*—जार्ज हरबर्ट*

- लगन के बिना किसी में भी महान प्रतिभा उत्पन्न नहीं हो सकती।

*—अस्तू*

- महान् परिणामों को जन्म देने वाली घटनाएं प्रायः निरर्थक परिस्थितियों से उत्पन्न होती हैं।

*—लिवी*

- यादें ही केवल ऐसा स्वर्ग हैं जहां से हमको भगाया नहीं जा सकता।

*—रिचर*

- पंखहीन पक्षी पिंजरा बंद रहने में ही अपनी कुशलता समझता है।

*—मुंशी प्रेमचंद*

- प्रतिभा और अभिव्यक्ति के सामंजस्य से व्यक्तित्व का निखार बढ़ता है। निखरा हुआ व्यक्तित्व जीवन की अमूल्य निधि है।

*—विश्वकर्मा*

- प्रसन्नता परम स्वास्थ्यवर्द्धक है, देह और मन दोनों के लिए मित्र तुल्य है।

*—एडीसन*

- कमजोरी का इलाज कमजोरी का विचार करना नहीं, वरन शक्ति का विचार करना है। मनुष्यों को शक्ति की शिक्षा दो, जो पहले ही उनमें है।

*—महर्षि अरविंद*

- जितनी भलाई माता-पिता या दूसरे भाई-बंधु नहीं कर सकते, उससे अधिक भलाई ठीक मार्ग पर लगा हुआ चित्त करता है और वह व्यक्ति का उन्नयन करता है।

*—महात्मा गांधी*

- बहुत अधिक प्रसिद्धि पाने वाले व्यक्तियों पर अपेक्षाओं का बोझ भी बढ़ जाता है।

*—फ्रांकोई वालटेयर*

- जैसे नमक के बिना अन्न स्वादरहित और फीका लगता है, वैसे ही वाचाल के कथन निस्सार होते हैं और किसी को रुचिकर नहीं लगते।

*—संत तुकाराम*

- जब शरीर नश्वर है और आत्मा अमर है तो फिर भय किसका और किसलिए?

*—महात्मा गांधी*

- चिंता तो चिता समान होती है जो मनुष्य को घुन की तरह अंदर ही अंदर खोखला कर देती है और उसकी क्रियाशीलता नष्ट हो जाती है।

*—स्वेट मार्डेन*

- अपराध किसी अन्य बुराई के समान एक बीमारी है और यह प्रचलित सामाजिक प्रणाली की उपज है।

*—महात्मा गांधी*

- वास्तव में इतिहास मानवता के अपराधों, मूर्खताओं और दुर्भाग्य के लेखा-जोखा से अधिक कुछ नहीं है।

*—गिबन*

- जो मानव एक पाठशाला खोलता है, वह विश्व का एक बंदीगृह बंद कर देता है।

*—विक्टर ह्यूगो*

- मूर्ख लोग जो कुछ पढ़ते हैं उससे अपना अहित करते हैं और जो कुछ लिखते हैं उससे दूसरों का अहित करते हैं।

*—रस्किन*

- बदमाश जितना ही बड़ा होता है उतने ही उत्तरदायित्व से हीन उसके तर्क होते हैं। सदा कोई न कोई उसका विश्वास कर ही लेता है।

*—लुई फिशर*

- अपराध या तो आवश्यकता का दूसरा नाम है या वह बीमारी का एक पहलू है।

*—खलील जिब्रान*

- महत्त्वाकांक्षा का विष पिलाने से कभी स्वस्थ मस्तिष्क नहीं बन सकता। यह धुन एक पागलपन है जिसे रोके बिना स्वस्थ व्यक्तित्व का निर्माण असंभव है।

*—आचार्य रजनीश*

- स्वस्थ आदमी को शराब पागल कर देती है, किंतु बेहोश आदमी को स्वस्थ करने के लिए उसकी जरूरत पड़ती है।

*—अज्ञेय*

- वाणी का वर्चस्व रजत है, किंतु मौन कंचन।

*—रामधारी सिंह दिनकर*

- बाध्य करने की जितनी शक्ति गांधी के एक उपवास में हैं, उतनी हिटलर के आतंक में नहीं।

*—लुई फिशर*

- दुनिया में तीन तरह के आदमी हैं—एक इंजन की तरह, दूसरे गाड़ी की तरह और तीसरे ब्रेक की तरह।

*—उपेंद्रनाथ अश्क*

- शैतान अपना काम निकालने के लिए धर्मशास्त्र का पाठ भी कर सकता है।

*—शेक्सपीयर*

- महान् व्यक्तियों के जीवन का कोई उद्देश्य होता है। साधारण मनुष्य केवल इच्छाएं रखते हैं।

*—जार्ज वाशिंगटन*

- अगर कोई दगाबाज सच्चे आदमियों के मार्ग में आता है और उनको दगा देने की घात में रहता है तो उसको नष्ट न करना दगाबाजी को प्रोत्साहित करना है।

*—मैक्सिम गोर्की*

- जब दुष्ट लोग गुट बना लें, तो सज्जनों को भी संगठित हो जाना चाहिए, अन्यथा एक-एक करके उन सबकी बलि चढ़ जाएगी।

*—वर्क*

- परिवर्तन जब धीरे-धीरे आता है तब सुधार कहलाता है। जब एकदम आता है, तब क्रांति कहलाता है।

*—रामधारी सिंह दिनकर*

- प्रशंसा वहां आरंभ होती है जहां परिचय समाप्त होता है।

*—एस. जानसन*

- सरकारी नौकरी में रहकर स्वतंत्र विचार और निष्पक्ष सम्मति रखने की बात ही हास्यास्पद है।

*—सर्वदानंद*

- दुष्टबुद्धि और निम्न कोटि के मनुष्यों के साथ परिहास नहीं करना चाहिए।

*—रामचंद्र*

- राजमहल के कंगूरे पर बैठने से कौआ गरुड़ की पदवी नहीं पा सकता।

*—आनंद कुमार*

- बुद्धिमान मनुष्य मूर्ख से भी अधिक गलतियां करता है, लेकिन वह एक गलती को दोबारा नहीं करता। मूर्ख अधिक गलतियां इसलिए नहीं करता कि वह कुछ करता ही नहीं।

*—आचार्य रजनीश*

- लोग बुरे को देखते हैं तभी उन्हें पता लगता है कि क्या अच्छा है। बुरा नहीं हो तो क्या पता लगे कि अच्छा क्या है?

*—अज्ञेय*

- दुनिया में जो इतनी बुराई फैली हुई है उसका दोष केवल बुरा काम करने वालों पर ही नहीं है, बल्कि दोष उन अच्छे आदमियों का भी है जो बुरे काम करने वालों की खुशामद करने और उन्हें खुश करने के लिए सदा तैयार रहते हैं।

*—लुई फिशर*

- बुद्धिमान का एक घंटे का जीवन मूर्ख के संपूर्ण जीवन के बराबर माना जाता है।

*—आनंद कुमार*

- डींग मारना निर्लज्जता की पराकाष्ठा है।

*—राहुल सांकृत्यायन*

- प्रसिद्धि श्वेत वस्त्र के सदृश है जिस पर एक धब्बा भी नहीं छिप सकता।

  *—प्रेमचंद*

- धूर्तता तो निर्बलों का हथियार है। बलवान कभी नीच नहीं होता।

  *—प्रेमचंद*

- नफा तो दूसरों की मेहनत की चोरी का प्रतिष्ठित नाम है।

  *—राहुल सांकृत्यायन*

- विष किसी भी नीयत से खाया जाए, विष ही का काम करेगा, कभी अमृत नहीं हो सकता।

  *—प्रेमचंद*

- इंसान तनकर सीधा खड़ा नहीं रह सकता, जब तक कोई ऐसी चीज उसके सामने मौजूद न हो जो खुद उससे अधिक ऊंची हो।

  *—जर्मन दार्शनिक*

- विजयी लोगों के साथ लंबा कारवां जुड़ता है, लेकिन हारने वाले अनाथ हो जाते हैं।

  *—काउंट सिएनो*

- कौन ऐसी मां बालक पर शासन करने की आशा रख सकती है, जो स्वयं पर ही अंकुश नहीं रख पाती हो।

  *—स्वेट मार्डेन*

- मौन में और करुणा में विरोध नहीं है। मौन से करुणा पैदा होती है और करुणावान व्यक्ति धीरे-धीरे मौन होता चला जाता है।

  *—आचार्य रजनीश*

- शब्द के संवाद द्वारा मनुष्य मृत्यु के द्वार से भी बिना आंच लगे निकल आता है।

  *—गुरु नानक देव*

- किसी व्यक्ति के साथ एक घंटा खेलकर ही आप उसे इतना जान लेते हैं, जितना एक साल तक उससे बात करते रहने के बाद भी नहीं जान सकते।

*—प्लेटो*

- जो लोग पांव भीगने के खौफ से पानी से बचते रहते हैं, समुद्र में डूब जाने का खतरा उन्हीं के लिए है। लहरों में तैरने का जिन्हें अभ्यास है वे मोती लेकर बाहर आएंगे।

*—रामधारी सिंह दिनकर*

- स्वर्ग और नरक कोई स्थान नहीं हैं। यह मानसिक दशाएं व अनुभूतियां हैं जो मनुष्य की मृत्यु के बाद व उसके पुनः जन्म लेने के बीच के अंतराल के समय अनुभव में आती हैं।

*—आचार्य रजनीश*

- जिन कामों को कानून से नहीं रोका जा सकता, उन पर शर्म और बदनामी के डर से नियंत्रण पाना संभव है।

*—सेनेका*

- गुप्त वे बाते रखी जाती हैं जो अनुचित होती हैं, गुप्त रखना भय का द्योतक है और भयभीत होना मनुष्य के अपराधी होने का द्योतक है।

*—भगवतीचरण वर्मा*

- जीवन में अनुभव की उतनी ही आवश्यकता होती है जितनी उपासना की।

*—भगवतीचरण वर्मा*

- गलत लोगों को सुधारना मुश्किल तो है, पर असंभव नहीं।

*—अज्ञात*

- उदासीनता मृत्यु से भी अधिक कष्टदायक है।

*—अज्ञात*

- परिस्थितियां सदा अनुकूल ही रहें, ऐसी आशा न करो। संसार केवल तुम्हारे लिए ही नहीं बना है।

*—अज्ञात*

- नशे का पहला आक्रमण बुद्धि पर होता है।

*—अज्ञात*

- किसी सिद्धांत की सार्थकता उसकी व्यावहारिक अनुभूति में है।

*—अज्ञात*

- आत्मोन्नति के धर्मयुद्ध में वह आनंद मिलेगा, जो दुनिया की किसी चीज से नहीं मिल सकता।

*—अज्ञात*

- संतोष के आधार पर कठिन प्रसंगों का भार आधा हल्का हो जाता है।

*—अज्ञात*

- शिथिलता से समय सिकुड़ता है तथा मुस्तैदी में फैलता है।

*—अज्ञात*

- नजरअंदाज करने से कठिनाइयां समाप्त नहीं होतीं और उपेक्षा किए जाने से वे चरमसीमा पर पहुंचती हैं, जिसका परिणाम बहुत भयंकर होता है।

*—पार्किंसन*

- जानबूझकर की गई भूल हमारी इच्छा पर निर्भर करती है, लेकिन अनजाने में की गई भूल की भी कोई सीमा है!

*—रस्किन*

- संबंधों की असली परीक्षा असहमति के बावजूद हाथ थामकर साथ चलने में है।

*—सोफोक्लीज*

- केवल विजय नहीं, बल्कि रोमांचक मुकाबले में आनंद है। संकट के बीच हासिल विजय संतोष देती है।

*—पास्कल*

- रहस्य खुलने से दुःखी मत हो। इस संसार में पद, प्रतिष्ठा, मान और मर्यादा सब कुछ नष्ट होने वाले हैं।

*—हाफिज*

- आदत रस्सी की तरह है जिसमें हम रोज एक बट देते हैं, लेकिन अंत में इसे तोड़ नहीं सकते।

*—मान*

- कानून अपनी भव्य समानता के दायरे में अमीरों और गरीबों के बीच कोई फर्क नहीं करता है।

*—अनतोली फ्रांस*

- हम प्रकृति की अनदेखी करते हैं लेकिन वह हमें अपनी मौजूदगी का हमेशा आभास कराती है।

*—होरेस*

- अनियंत्रित आबादी रेखागणित के अनुपात से बढ़ती है, जबकि वस्तुओं की वृद्धि अंकगणित के हिसाब से होती है।

*—थामस माल्थस*

- प्रत्येक नायक अंत में अलोकप्रिय और उबाऊ हो जाता है।

*—इमर्सन*

- दुनिया में आए हैं तो हमें समुद्र, नदियां, पहाड़ सहित सब कुछ देखना चाहिए।

*—सुकरात*

- हर विपत्ति और समस्या संघर्ष के लिए प्रेरित करती है तथा मूल्यवान संकेत देती है।

*—इमर्सन*

- अगर सभी अर्थशास्त्रियों को इकट्ठा कर दिया तो वे किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सकेंगे।

*—बर्नार्ड शॉ*

- वाद-विवाद से बचना चाहिए। वह ज्यादातर निरर्थक होता है और कम ही अर्थपूर्ण होता है।

*—आस्कर वाइल्ड*

- महान् कार्य महान् मस्तिष्क के द्योतक हैं।

*—अज्ञात*

- विपत्ति किसी व्यक्ति को मजबूत बनाती है तो किसी व्यक्ति को कमजोर और शिथिल करती है।

*—लेनिन*

- अपराध तो मनुष्य के मुंह पर लिखा रहता है।

*—महात्मा गांधी*

- ईश्वर बड़े-बड़े साम्राज्यों से विमुख हो जाता है लेकिन छोटे फूलों से कभी खिन्न नहीं होता है।

*—रवींद्रनाथ ठाकुर*

- आकाशगंगा की खिड़कियों से देखने वालों के लिए पृथ्वी और सूर्य के बीच की दूरी के भी कोई मायने नहीं हैं।

*—खलील जिब्रान*

- वास्तव में इतिहास केवल परिवर्तन का लेखा-जोखा है।

*—जवाहरलाल नेहरू*

- कठिनाइयों में ही सिद्धांतों की परीक्षा होती है। विपत्ति में पड़े बिना मनुष्य यह नहीं जान सकता कि वह ईमानदार है या नहीं।

*—फील्डिंग*

- अपने दोषों की ओर से अनभिज्ञ रहने से बड़ा प्रमाद इस संसार में और कोई दूसरा नहीं हो सकता।

*—विनोबा भावे*

- यह चिंता न करें कि सुबह होगी या नहीं। इसका भी आनंद लेने हेतु तैयार रहें कि ग्रीष्म ऋतु में समुद्र शांत रहकर मस्त रहता है।

*—अज्ञात*

- हमेशा दो ही रास्ते हैं चलने के लिए। एक है आसान, जिसका एकमेव लाभ यही है कि वह आसान है। इसके स्थान पर ऊंचे-नीचे टेढ़े-मेढ़े रास्तों का आनंद लेने का प्रयास करें।

*—अज्ञात*

- प्राचीन गौरव, प्रजा और प्रकृति की निरंतर शाश्वत विरासत को देखें, जिसका बसेरा अस्त होते हुए सूर्य का प्रकाश है।

*—अज्ञात*

- कठिनाइयों को आपका रास्ता न रोकने दें। हो सकता है, आपको गिरने से रोकने के लिए यही रेत कार्य करें।

*—अज्ञात*

- तूफानी हवाओं, स्वच्छंद बादलों और उफनते समुद्र के लिए हमेशा तैयार रहें, इसी में ब्रह्मांड का ओज है।

*—अज्ञात*

- मनुष्य की शारीरिक शक्ति की तुलना में उसकी भावनाओं की शक्ति अधिक बड़ी है।

*—अज्ञात*

- सेवा वह अग्नि है जिसमें तपे बिना कोई अंतःकरण की कसौटी पर खरा उतर सकने योग्य नहीं बन सकता।

—*अज्ञात*

- मनुष्य की आयु वृक्षों की कृपा पर आधारित है।

—*अज्ञात*

- पात्रता के अभाव में किसी को सम्मान मिलने की आशा नहीं बांधनी चाहिए।

—*अज्ञात*

- आप ढूंढ़ें तो परेशानी का आधा कारण तो अपने में ही मिल जाता है।

—*अज्ञात*

- उपेक्षा करने से हर चीज घटती है और नष्ट होती है।

—*अज्ञात*

- व्यक्ति के विकास के लिए समाज का स्तर ऊंचा उठना चाहिए।

—*अज्ञात*

- आलस्य सब प्रकार का बुरा है, पर मानसिक आलस्य सबसे बुरे स्तर का है।

—*अज्ञात*

- भोजन में अमृत की भावना करते हुए उसे प्रसाद समझकर ग्रहण करें।

—*अज्ञात*

- कठिनाइयां मनुष्य को जितना सिखातीं हैं, उतना कोई भी नहीं सिखा सकता।

—*अज्ञात*

- परोपकार मूर्खता नहीं बुद्धिमानी है, क्योंकि इसका कई गुना लाभ हमें भी मिलता है।

*—अज्ञात*

- उपकृत व्यक्ति से यह आशा नहीं करना चाहिए कि वह उसका प्रतिदान चुकाएगा।

*—अज्ञात*

- आत्मा ही श्रेष्ठ मार्गदर्शक है।

*—अज्ञात*

- जिसे हारने का डर है उसकी हार निश्चित है।

*—अज्ञात*

- युग का अवसान सद्विचारों एवं सद्प्रवृत्तियों के घट जाने से होता है।

*—अज्ञात*

- व्यक्तित्व की गरिमा आत्मिक महानता पर निर्भर है।

*—अज्ञात*

- तालियों की गड़गड़ाहट अपशब्द की शुरुआत है।

*—अज्ञात*

- धन या पद पाने की अपेक्षा लोकश्रद्धा प्राप्त करना अधिक मूल्यवान है।

*—अज्ञात*

- स्वस्थ शरीर में स्वस्थ आत्मा रहती है। इसलिए जिस हद तक आत्मा वासनाओं से स्वतंत्र और स्वस्थ होती है, उसी हद तक शरीर भी उसी स्थिति को प्राप्त होता है।

*—अज्ञात*

- जब हमारी घृणा हिंसक हो जाती है तो यह हमें उन लोगों से भी तुच्छ बना देती है, जिनसे हम घृणा करते हैं।

*—अज्ञात*

- कानून से भी सब कुछ व्यवस्थित रहता है। अच्छा कानून अच्छी व्यवस्था सुनिश्चित करता है।

*—अरस्तू*

- यश का मार्ग स्वर्ग की राह के समान अत्यंत कष्टमय है।

*—सुकरात*

- अंतरात्मा की अदालत दुनिया की सभी अदालतों से बढ़कर है।

*—महात्मा गांधी*

- जब अपनी ही सरकार में सुनवाई न हो तो शांतिपूर्ण आंदोलन जनता का स्वभाविक अधिकार है।

*—महात्मा गांधी*

- वसंत के मौसम में पेड़ों की पत्तियां तक फूलों की रंगत ओढ़ लेती हैं।

*—अलबर्ट कामू*

- जो लोग अपने सिद्धांतों से अधिक महत्त्व विशेषाधिकारों को देते हैं, वे जल्द ही उन दोनों को खो देते हैं।

*—आइजन हावर*

- कोई नया कदम उठाने और किसी किस्म के परिवर्तन से लोग सबसे अधिक डरते हैं।

*—फ्योदोर दोस्तोवस्की*

- प्रकृति का हल्का-सा स्पर्श समूची दुनिया को प्रभावित करता है।

*—शेक्सपीयर*

- दंड में उपयोगिता होनी चाहिए। जब किसी मनुष्य को फांसी दे दी गई हो तो इस सजा से उसे क्या लाभ होगा?

*—वालटेयर*

- अंतरात्मा हमारे अंदर की आवाज है जो चेतावनी देती है कि कोई हमें देख रहा है।

*—सुकरात*

- व्यंग्य और ताना पैनी तलवार के समान अपने मालिक की ही उंगलियों को काट देता है।

*—ऐरोस्मिथ*

- हमारी शंकाएं हमें उन अच्छाइयों से वंचित रखती हैं, जिन्हें हम कोशिश करके प्राप्त कर सकते हैं।

*—शेक्सपीयर*

- सात समुद्रों के पानी की अपेक्षा मानव के नेत्रों से कहीं अधिक आंसू बह चुके हैं।

*—भगवान बुद्ध*

- महान् व्यक्तियों के लिए अपना सम्मान और गौरव जीवन से कहीं अधिक मूल्यवान होता है।

*—महात्मा गांधी*

## ❖ चिंतन ❖

- चिंतन और चिंता में वही अंतर होता है जो एक आत्मविश्वास-भरे स्वस्थ व्यक्ति और रोगी व्यक्ति में होता है।

*—स्वेट मार्डेन*

- कष्ट इतना कष्टकर नहीं होता जितनी की उसकी चिंता कष्टकर होती है।

*—स्वेट मार्डेन*

- प्रभावशाली और सक्षम व्यक्ति अन्य लोगों के लिए जगह बनाते हैं। यह समाज चिंतकों की सेना है और उनमें से सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति अच्छे पद पाते हैं।

*—इमर्सन*

- चिंतन मनुष्य को शक्तिशाली और आत्मविश्वासी बनाता है।

*—स्वेट मार्डेन*

- मनुष्य का मन आंतरिक चिंतन से बलवान होता है।

*—अज्ञात*

- अनुपयोगी चिंतन हमारी बहुमूल्य शक्ति को नष्ट करता है। जिसने आमदनी और खर्चे में तालमेल बिठाना सीखा है, वही सत्कर्मों के लिए कुछ बचा पाता है।

*—अज्ञात*

- चिंता तो चिता समान होती है जो मनुष्य को घुन की तरह अंदर ही अंदर खोखला कर देती है और उसकी क्रियाशीलता नष्ट हो जाती है।

*—स्वेट मार्डेन*

## ❖ राष्ट्र/लोकतंत्र ❖

- जातियां व्यक्तियों से बनती हैं लेकिन राष्ट्र का निर्माण केवल संस्थाओं द्वारा होता है।

*—डिजरायली*

- राष्ट्रीयता भयानक रूप से संक्रामक बीमारी के समान है।

*—आइंस्टीन*

- प्रत्येक व्यक्ति की अच्छाई ही लोकतांत्रिक शासन की सफलता का मूल सिद्धांत है।

*—राजगोपालाचारी*

- शासन वही उत्तम है जो अपने अधीनस्थों को सुखी रखे।

*—कन्फ्यूशियस*

- लोकतंत्र बंदर के पिंजड़े से सरकस चलाने की कला और विज्ञान है।

*—एच.एल. मेकेन*

## ❖ सत्ता ❖

- प्रमुख पदों पर बैठने वाले कई व्यक्ति प्रगति की बजाय अपनी सुरक्षा करना सीख जाते हैं।

*—जे.आर. लावेल*

- वह शासक अत्याचारी है जो स्वेच्छा के अतिरिक्त कोई नियम नहीं जानता।

*—वाल्टेयर*

- अनियंत्रित सत्ता और शक्ति की भूख उसके उपयोग के साथ-साथ बढ़ती जाती है।

*—जवाहरलाल नेहरू*

- यदि कानून केवल शासकीय अधिकारियों के पास रहे, तो कानून का शीघ्र अंत हो जाए।

*—हर्बर्ट हूवर*

- सत्ता की महत्ता तो मोहक भी बहुत होती है, एक बार हाथ में आने पर और कंटीली होने पर भी छोड़ी नहीं जाती।

*—वृंदावनलाल वर्मा*

## धर्म/हिंसा-अहिंसा

- धर्म वस्तुतः एक ही लक्ष्य की ओर ले जाने वाले विभिन्न मार्ग हैं। जब हम एक ही लक्ष्य पर पहुंचना चाहते हैं तो किसी भी मार्ग से होकर जाने से क्या फर्क पड़ता है!

*—महात्मा गांधी*

- सब अपने धर्म का पालन करें, तो कोई दुःखी नहीं रहेगा।

*—महात्मा गांधी*

- धर्म परमेश्वर की कल्पना कर मनुष्य को दुर्बल बना देता है और उसमें आत्मविश्वास उत्पन्न होने नहीं देता और उसकी स्वतंत्रता का अपहरण करता है।

*—आचार्य नरेंद्रदेव*

- समाज हिंसक हो जाता है जहां, शोषण ही जीने का तत्त्व बन जाता है।

*—शिव खेड़ा*

- अग्नि का अपना कोई निश्चित आकार नहीं, लेकिन चमकती लपटों के रूप में वह विभिन्न आकार ग्रहण कर लेती है, इसी प्रकार निराकार ब्रह्म कभी-कभी अपने-आपको सगुण रूपों में ढाल लेता है।

*—रामकृष्ण परमहंस*

- सदा भाव, समता और निर्भयता ही अहिंसा है।

*—विनोबा भावे*

- गमन करते समय इस बात की भी पूरी सावधानी रखनी चाहिए कि नाना प्रकार के जीव-जंतु, पशु-पक्षी आदि इधर-उधर से चारे-दाने के लिए मार्ग में इकट्ठा हो गए हों तो उनके सामने भी नहीं जाना चाहिए, ताकि वे भयग्रस्त न हों।

  *—भगवान महावीर*

- आलसी सुखी नहीं हो सकता, निद्रालु विद्याभ्यासी नहीं हो सकता, ममत्व रखने वाला वैराग्यवान नहीं हो सकता और हिंसक दयालु नहीं हो सकता।

  *—भगवान महावीर*

- आकाश के पक्षियों को देखो। वे न बोते हैं, न काटते हैं और न बटोरते हैं तो तुम्हारा स्वर्गस्थ पिता उन्हें खिलाता है। क्या तुम उनसे अधिक मूल्य नहीं रखते?

  *—ईसा मसीह*

- जो अनेक लोगों को एक रखती है, मतभेदों के बीच समझौते का रास्ता ढूंढ़ती है, वही अहिंसा है।

  *—विनोबा भावे*

- हिंसा के द्वारा प्राप्त की गई जीत हार के बराबर है, क्योंकि वह क्षणिक है।

  *—महात्मा गांधी*

- तानाशाही और हिंसा लोकतंत्र की बजाय मानवता को अधिक नुकसान पहुंचाती हैं।

  *—फ्रेंकलिन रूजवेल्ट*

- जो लोग पहले तलवार निकालते हैं, उनका अंत भी तलवार से ही होता है।

  *—बाइबिल*

## ❖ साधना/उपासना/तप ❖

- साधना से मन को दुष्प्रवृतियों से जूझने योग्य सशक्त बनाया जा सकता है।

*—अज्ञात*

- जो साधक अपना भला चाहता है, वह दूसरों की बुराई न देखे।

*—अज्ञात*

- भजन की अपेक्षा ईश्वरीय आदेशों का पालन करना ही सच्ची उपासना है।

*—अज्ञात*

- परमात्मा की उपासना के साथ कामनाएं जोड़ना ओछापन है।

*—अज्ञात*

- मानव के अंतर्मन में कल्याण के देवता का निवास है, उसकी संवर्द्धना ही उत्तम पूजा है।

*—जयशंकर प्रसाद*

## ❖ आलस्य ❖

- आलस्य से बढ़कर अधिक घातक और समीपवर्ती शत्रु दूसरा नहीं।

*—पं. श्रीराम आचार्य*

- आलस्य का एकमात्र इलाज काम करना है, स्वार्थ-भावना का इलाज है त्याग, अविश्वास का इलाज है दृढ़ विश्वास, कायरता का इलाज है जोखिम-भरे काम का बीड़ा उठाना और तन-मन-धन से उसमें जुट जाना।

*—रदरफोर्ड*

- आलस्य सब प्रकार का बुरा है, पर मानसिक आलस्य सबसे बुरे स्तर का है।

*—अज्ञात*

# ❖ ईमान/ईमानदारी ❖

- बड़ी से बड़ी संपत्ति ईमानदारी के सामने तुच्छ है।

  *—कन्फ्यूशियस*

- ईमानदारी बरतना और स्पष्ट बात कहना खतरे से खाली नहीं है।

  *—शेक्सपीयर*

- ईमानदार मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है।

  *—अज्ञात*

- ईमानदार होना दस हजार में एक होना है।

  *—शेक्सपीयर*

- प्रसिद्ध होने के बजाय ईमानदार होना अधिक अच्छा है।

  *—थ्योडोर रूजवेल्ट*

- न्यायाधीशों को विद्वान, चतुर और विवेकवान होना चाहिए। इससे बढ़कर ईमानदारी और निष्ठा उनका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण गुण है।

  *—फ्रांसिस बेकन*

- सच्चाई और ईमानदारी के बिना बुद्धि और ज्ञान निरर्थक और हानिकारक हैं। सिद्धांतहीन राजनीति, चरित्रहीन शिक्षा, मानवताहीन विज्ञान, नैतिकताहीन व्यापार निश्चिय रूप से विदारक और विनाशक होते हैं।

  *—सत्य साईं बाबा*

- ईमानदारी बरगद के पेड़ के समान है जो देर से बढ़ती है, किंतु चिरस्थायी रहती है।

  *—अज्ञात*

- पैसा ईमानदारी से कमाएं और शराफत से खर्च करें।

*—अज्ञात*

- ईमानदारी से कमाए थोड़े-से पैसे भी करोड़पतियों से अधिक आनंद देते हैं।

*—अज्ञात*

- हमारी जरूरतें बड़ी हैं और ईमान छोटा है। हम ईमान को बेचकर जरूरतें पूरी कर रहे हैं।

*—आचार्य रजनीश*

- यदि आपके हृदय में ईमान है तो सारा संसार आपके सामने हथियार डाल देगा।

*—स्वामी रामतीर्थ*

- ईमान और भगवान ही मनुष्य के सच्चे मित्र हैं।

*—अज्ञात*

- ईमानदारी से किया गया परिश्रम सफलता को और समीप ला देता है।

*—अज्ञात*

- आदमी पहले ईमानदार और नेक बने और बाद में तहजीब और खुशी की पॉलिश चढ़ाए।

*—कन्फ्यूशियस*

## ❖ बुद्धि/बुद्धिमान ❖

- बुद्धिमान मनुष्य साधारण उपायों से सिद्ध होने वाले बड़े फल वाले कर्मों को शीघ्र आरंभ करता है, उस प्रकार के कर्मों को यह कदापि छोड़ता नहीं है।

*—महात्मा विदुर*

- बुद्धिमान प्राणी चिंता नहीं करते—चिंतन करते हैं।

*—स्वेट मार्डेन*

- बुद्धि के बिना मनुष्य अपंग के समान है।

*—महात्मा गांधी*

- वह मनुष्य वास्तव में बुद्धिमान है, जो क्रोधावस्था में भी गलत बात मुख से नहीं निकालता है।

*—शेख सादी*

- जिसके पास बुद्धि है उसके पास सब कुछ है, किंतु मूर्ख के पास सब कुछ होने पर भी कुछ नहीं है।

*—तिरुवल्लुवर*

- मूर्खता सब कर लेगी, लेकिन बुद्धि का आदर कभी नहीं करेगी।

*—गेटे*

- जो बुद्धि को ग्रहण कर लेते हैं, उनके लिए वह जीवन का वृक्ष बनती है और जो उसको पकड़े रहते हैं, वे धन्य हैं।

*—ईसा मसीह*

- निर्मल बुद्धि में कोमलता होती है और निर्मल हृदय में बुद्धि का प्रकाश।

*—अज्ञात*

- व्यवस्थित कार्य-विधि बौद्धिक सक्रियता में सर्वाधिक सहायक होती है।

*—अज्ञात*

- बुद्धिमान व्यक्ति एक पग आगे बढ़ाता है, किन्तु एक पग पीछे जमाए रखता है। जब तक वह दूसरे स्थान की पूर्णतया परीक्षा नहीं कर लेता, तब तक पहले स्थान को नहीं छोड़ता।

*—चाणक्य*

- सलाह तो अनेक प्राप्त करते हैं, किंतु उससे लाभ उठाना बुद्धिमानों को ही आता है।

*—साइरस*

- जो अपने को बुद्धिमान समझता है, वह बड़ा बेवकूफ है।

*—वाल्टेयर*

- दुनिया में बुद्धि का नहीं, बल्कि लक्ष्मी का साम्राज्य है।

*—सिसरो*

- बुद्धिमान मनुष्य मूर्ख से भी अधिक गलतियां करता है, लेकिन वह एक गलती को दोबारा नहीं करता। मूर्ख अधिक गलतियां इसलिए नहीं करता कि वह कुछ करता ही नहीं।

*—आचार्य रजनीश*

- बुद्धिमान का एक घंटे का जीवन मूर्ख के संपूर्ण जीवन के बराबर माना जाता है।

*—आनंद कुमार*

## क्रोध

- क्रोध एक प्रकार का पागलपन है जिससे सत्संकल्पों का विनाश होता है।

*—अज्ञात*

- गुस्सा करने का मतलब है—आत्मा की शांति को खोना, अपने ऊपर काबू खोना, विचार की स्पष्टता खोना और निकटवर्ती लोगों का मान खोना।

*—स्वामीजी*

- क्रोध से सब काम वैसे नहीं बनते, जैसे शांति से बनते हैं।

*—भागवत*

- जिसके चित्त में कभी क्रोध नहीं आता और जिसके हृदय में सर्वदा परमेश्वर विराजमान रहता है, वह व्यक्ति ईश्वर-तुल्य है।

*—सूरदास*

- क्रोध समझदारी को घर से बाहर निकाल देता है।

*—प्लूटार्क*

- अति अभिमान, बहुत बोलना, त्याग का अभाव, क्रोध, आत्मपोषण की इच्छा और मित्र-द्रोह ये छः कारण हैं जिनसे पुरुष पूर्ण आयु तक जीवित नहीं रहता है।

*—महात्मा विदुर*

- क्रोध मन के दीपक को बुझा देता है।

*—इंगरसोल*

## ❖ विचार ❖

- सेनाओं के हमले को तो रोका जा सकता है, पर जिस विचार का समय आ गया है उसे रोका नहीं जा सकता है।

*—विक्टर ह्यूगो*

- वे व्यक्ति कभी अकेले नहीं हैं जिनके साथ सुंदर विचार हैं।

*—पी. सिडनी*

- मजबूत विचारों से आत्मा की शुद्धि होती है। मन को एक नया उत्साह मिलता है।

*—स्वेट मार्डेन*

- बुरे विचार ही हमारी सुख-शांति के शत्रु हैं।

*—स्वेट मार्डेन*

- अच्छे विचारों के दरवाजे पर सफलता दस्तक स्वयं देती है।

*—स्वेट मार्डेन*

- वीर, सिद्धांत और रूपवती स्त्रियां जहां-जहां जाते हैं वहां-वहां उनका आदर ही होता है।

*—अज्ञात*

- आप अपने सबसे बड़े गुरु व निर्देशक हैं। पहले अपने अंदर मजबूती लाइए। अपने विचारों को दृढ़ कीजिए।

*—स्वेट मार्डेन*

- अगर कोई व्यक्ति तीन वर्ष तक बिल्कुल मौन रख ले तो कुछ और न करना पड़ेगा, भीतर का विचार अपने-आप टूट जाएगा।

*—आचार्य रजनीश*

- पवित्र विचारों से ओत-प्रोत व्यक्ति की ईश्वर व प्रकृति भी सहायता करने लगते हैं।

*—अज्ञात*

- जीवन में आधी गलतियां तो केवल इसलिए होती हैं, क्योंकि जहां हमें विचार से काम लेना चाहिए, वहां हम भावुक हो जाते हैं और जहां भावुकता की आवश्यकता होती है, वहां विचारों को अपनाते हैं।

*—जॉन कोलिंस*

- विचारों की शक्ति मनुष्य को आसमान पर ले जाती है।

*—अज्ञात*

- अपने विचारों को छुपाओ नहीं। यदि उन्हें छुपाना लज्जाजनक है तो उससे अधिक लज्जाजनक उनका मस्तिष्क में उठना ही है।

  *—अज्ञात*

- अच्छी तरह से अपने विचारों की रक्षा करो, क्योंकि विचार स्वर्ग में सुने जाते हैं।

  *—यंग*

- एक सार्वजनिक कार्य को करते समय व्यक्तिगत विचार कदापि नहीं आने चाहिए।

  *—इमर्सन*

- विचार का चिराग बुझ जाने पर आचार अंधा हो जाता है।

  *—विनोबा भावे*

- केवल मूर्ख और मृतक ही अपने विचारों को कभी नहीं बदलते।

  *—लावेल*

- कर्म करना बहुत अच्छा है, पर वह विचारों से आता है, इसलिए अपने मस्तिष्क को उच्च विचारों और उच्चतम आदर्शों से भर लो, उन्हें रात दिन अपने सामने रखो, उन्हीं में से महान् कार्यों का जन्म होगा।

  *—महर्षि अरविंद*

##  मन 

- यदि मन को धो लिया जाए तो सारा जगत निर्मल दृष्टिगोचर होता है।

  *—अज्ञात*

- मनुष्य का एकाग्र मन उसकी उन्नति में सबसे अधिक सहायक है।

*—अज्ञात*

- मन के हाथी को विवेक के अंकुश में रखो।

*—अज्ञात*

- प्रसन्नता और शोक वास्तव में मन की स्थितियां हैं और मन कों वश में रखना अपने हाथ में है।

*—मार्कस औरे*

- जो मन तेज है, वह बीमार है। जो मन धीमा है, वह स्वस्थ है। जो मन स्थिर है, वह दिव्य है।

*—मेहर बाबा*

- हमारा मन एक उपजाऊ भूमि है जिसमें जो वस्तु चाहो सीधे रास्ते से पैदा कर सकते हो।

*—अज्ञात*

- जिसका मन काम में लिप्त नहीं है, जो घृणा से प्रभावित नहीं है, जिसने शुभ और अशुभ दोनों का परित्याग किया है, ऐसे जागरूक व्यक्ति को कोई भय नहीं होता।

*—भगवान बुद्ध*

- सबसे अधिक अपने मन की रक्षा कर, क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही हैं।

*—ईसा मसीह*

- क्रोध मन के दीपक को बुझा देता है।

*—इंगरसोल*

...है उसे ही समालोचना...

...की ... है।

—भर्तृहरि

...आधा ... आदमी का सपना

...आदमी को मार डालती है।

—महात्मा गाँधी